



# पाबासर

लक्ष्मणदान कविया  
अम अ

सवाळख-प्रकाशण  
बॅण

प्रकाशक  
सवालख-प्रकाशण  
खैरा

पोथी मिलन री ठावी ठोड  
राजस्थानी ग्रन्थागार  
मोजती गट जोधपुर

चपालाल राका एण्ड कम्पनी  
धामाणी मार्केट  
चौडा रास्ता  
जयपुर

सगला इन्कार लिखार रा है  
पोथी री मोल—पचास रिपिया

पेलडी छगई — घाघातीज समत २०४६

छापणिया  
प्रिंटिंग हाउस  
जालोरी गेट के मन्दर  
जोधपुर

जिणारी दूध म्हारै रग रग मे रगत बणन  
रम रंयौ है विण नारी वरम अर  
मरजाद री घणियाणी  
स्व दरियाव कवर  
नै सादर ममरपित



## साखँ रा आखर

हालामण जेठवै री विरहण बदे पाबासर रै पावटै इसी इमरत जल पीयो कै वा अणबुभी तिरस री तडप सू आखँ जमारै तडपती रैयो । कविया लिछमणदान जी रै 'पाबासर' मे भी उण स्वाद नै चाखणै री मनस्या ही । पण अठै इमरत जल सू निरवाली भात भसीली बानग्या मिली ज्या री सरसता अर सारम रो जायको ही पारो है ।

आज राजस्थान मे डिगल रा छटा री छटा मिरजण मे समरथ कवि पेरवा पर गिणन जोगा ही कोनी । लिछमणदान जी नै आ सामरथ बापौती मे मिली जाए पडै । आपरी छटा री पक्कड सू कारीगरी रो बेरो लागै । डिगल काव्य री याद न बगाई राखण सारु इसी कोसीसां जरूरी है । जूनै राजस्थानी साहित्य मे सू जे डिगल नै छोड़ दी जावै तो बच काई । इण वास्त भी डिगल री विधावा मे लिखणो लाजमी है ।

इण पोथो रा विसय परम्पराक हाता थका भी सास्तरा मे बखाणीज्योडा वरणना रै सैताल मानीजसो । कुदरत री कारीगरी, सूर-दातारा री बहादरी अर दरियादिली अर हर जुग मे हर वखत सुहाती सिणगार रस री सरसाई अर सारम मे टक्काली साहित्य री आलख भावै ।

नयै ढाल री नई कविता जठै आपर ढग मे हुवणी जरूरी है बठ कदामी रचनावा नै भी नय सिरै सू ओजू माडणै अर परखणै-सराहणै री जरूरत भी है । कविया लिछमणदान जी नै डिगल अर सत साहित्य रा प्रेमिया री सद्भावना अर सहजोग मिलसी तो धणो भला काम हुमी ।

रावत सारस्वत



# वेला-बहत्तरी

भमाल

रत वसत आई रसा, हरख भवर हुल्लास ।  
फवै विरछ फळ फूलडा, वसुधा विविध विलास ॥  
वसुधा विविध विलास वेल गळ वाहडी ।  
लागं आधी लोक छिना पर छाहडी ॥  
जगत अलकत जोर वनस्पति विस्तरै ।  
घणी भ्रमर गुजार लगाव गस्त रे ॥ १ ॥

रत वसत सागै रही, मचियो फागणमास ।  
नव मिणगार घरा नखै, जोवन आणद जास ॥  
जोवन आणद जास छीण पन छाडवै ।  
पत्ता हीणा पेड कूपळा काढवै ॥  
विरहण मन बिसराम पलक नी पावसी ।  
कोयल कर कर कूक क हूक उठावसी ॥ २ ॥

आम्र जामून आवळा, पळै नारंगी पूर ।  
नीम सुपारी नारियळ, खळी महुआ खजूर ॥  
खळी महुआ खजूर करौदा केळिया ।  
लीची मरीफा लोग क मौजा मेळिया ॥  
कटहल बडहल क्रीत जजीरी जायफळ ।  
रचिया मचिया रुख सेवना व्ही सफळ ॥ ३ ॥

१ वेलडी घण लदी, फूला फळाज फेर ।  
२ थई ससार मे, मान वसती मेर ॥





# वेला बहलरी

भमाल

रुत वसत आई रमा, हरख अवर हुल्लास ।  
फवै विरछ फळ फूलडा, वसुधा विविध विलास ॥  
वसुधा विविध विलास बेल गळ वाहडी ।  
लागै आछी लोक छिता पर छाहडी ॥  
जगत अलप्रत जोर वनस्पति विस्तरै ।  
घणी भ्रमर गुजार लगाव गस्त रे ॥ १ ॥

रुत वसत सागै रही, मचियौ फागणमास ।  
नव सिएगार घरा नखै, जोवन आणद जास ॥  
जोवन आणद जास छीण पन छाडवै ।  
पत्ता हीगा पेड कूपळा काडवै ॥  
विरहण मन बिसराम पलक नी पावसी ।  
कोयल कर कर कूक क हूक उठावसी ॥ २ ॥

आम्र जामून आवळा, पळै नारंगी पूर ।  
नीम सुपारी नारियळ, खळी महुआ खजूर ॥  
खळी महुआ खजूर करीदा केलिया ।  
लीची सरीफा लोग क मौजा मेळिया ॥  
कटहल बडहल क्रीत जजीरी जायफळ ।  
रचिया मचिया रुख सेवना व्ही सफळ ॥ ३ ॥

लता बेलडी घण लदी, फूला फळाज फेर ।  
सौरभ थई ससार मे, मान बसती मेर ॥

मान वसती मेर केतकी कवटा ।  
 कूजा गुलाब कुन्द वरगसद बेवडा ॥  
 चम्पा निवरी चमेल व करना केमरी ।  
 माननी मल्लिका म्वेत सुगन्ध बिसेम री ॥ 4 ॥

मेळ वसती भरुधरा, मोभा इमी मजाय ।  
 भीगी रेत गुलाल ज्यू, उड उड नेडी आय ॥  
 उड उड नेडी आय नीर कम नाडिया ।  
 खेजड नीव ववूल क कूपळ वाटिया ॥  
 फागण गाता फिर, छवीना छोकग ।  
 चग वजाव चाय डुळ मन डोकरा ॥ 5 ॥

चिणा गेहू हरिया चहर, वाणा सौरमधार ।  
 सिरसू रा पीळा सुमन, ओप रया इकसार ॥  
 ओप ग्या इकसार क जीरी जोर मे ।  
 राइ रायड राम दिखे सुभ दीर मे ॥  
 वरती गहरी वान क खुत्रिया खात मे ।  
 कर मैंगत किरसाण भाग ले हाथ मे ॥ 6 ॥

हरिया सह भाखर हुवा, सोभा देत मवाय ।  
 इळा हरी जिम ओगणी, ओढ'र ऊभी आय ॥  
 ओढ'र ऊभी आय छीरी नद छोर मे ।  
 वन लहगाय वसत प्रभा अठ पोर मे ॥  
 वर रह्या किलोळ व पछी प्रात मे ।  
 मोतळ चह मभीर सुगंधी भाय मे ॥ 7 ॥

सारस वपोत मारिका, चातक चास चकोर ।  
 कोयल खजन वागना, हसा लेत हिलोर ॥  
 हमा लेत हिलोर श्रीच सुक कुडना ।  
 लीका भ्रमर नावक, तेलक वव बला ॥

मदन साल टिकमोर हारीज हुलासिया ।  
कुरज तीतर कारट बसत विलामिया ॥ 8 ॥

व्याघ्र वराह व्याल बरु, सावर खर सारदूळ ।  
सियाळ गोमायी मरभ, बानर विधना मूळ ॥  
बानर विधना मूळ क चम्मर चीतरा ।  
जरख रीछडा जोर पमु नही प्रीत रा ॥  
मिरण हस्ती महीस वणेटो वरगडा ।  
रे मस्ती रितुराज व जगळ मे जडा ॥ 9 ॥

मलयाचळ मुक्तागिरा, हेमाळी हिमवत ।  
अस्ताचळ अचळ अरबुदा, बाल्ही लगै वसत ॥  
बाल्ही लगै वसत विंध्याचळ वेवता ।  
वेताळ उदयावाम क रुपी रेवता ॥  
कूट चित्र त्रीकूट धोळगिरी गोरधन ।  
नीळगिरी नेसद्य कळा केळास वन ॥ 10 ॥

गंगा जमुना गामती, रक्तवती कुळरूप ।  
सोवन भद्रा सुरसती, सिप्रा सिन्धु मरूप ॥  
मिप्रा सिन्धु मरूप, गडक गोदावरी ।  
माही चम्बळ माळ किसणा कावरी ॥  
विरमपुत्रज बनाव ताप्ती ताज मे ।  
मन्द गति जळ माघ रही रितुराज मे ॥ 11 ॥

फागण माम वसत फळ, विरहरण रै दुख वास ।  
चदो वालै चामडी, सोरा लह न सास ॥  
सोरा लह न सास बावहियो बोलवै ।  
दिल ऊपर दुधार छिनीछिन छोलवै ॥

भोजन नाही भाय काय कुमळायगी ।  
 वेरणा इमी वसत छिन्ता पर छायागी ॥ 12 ॥

पूजै विमळा पचमी, विद्या सुमत विकास ।  
 सिवराता आला सफळ, अनुरागी उपवास ॥  
 अनुरागी उपवास गाईज गीतडा ।  
 फागण मस्ती फेर रसम अर रीतडा ॥  
 वेळा इमी वसत नेह पथ सूभवे ।  
 घर नारी गिरागोर प्रेमसू पूजवै ॥ 13 ॥

वाकड सूखी घाम वित, नाडा निठती नीर ।  
 केर सागरी साग कर, भोजन जीमी वीर ॥  
 भोजन जीमी वीर रायती रावडी ।  
 हखा भरिया रोट छोकरो छावडी ॥  
 नीरण वाडै नायक पसु थकिया परा ।  
 मेळ वसती अेम मानियै मरुधरा ॥ 14 ॥

लोकै उतरण लागियो, मास चेत घण मान ।  
 तपती वढी वसन तज, अरियो ग्रीखम ध्यान ॥  
 अरियो ग्रीखम ध्यान व दीरघ दीहडा ।  
 लघु राता मे लाभ छवी दिन छीहडा ॥  
 रे बीती रितुराज क ओळू आवसी ।  
 सह रत मे सिरमाड वसत सु भावसी ॥ 15 ॥

रामनमी तप नीरता, पग ग्रीखम परवेस ।  
 मोख लही वसत सुख, दाभ ग्रीखम देस ॥  
 दाभै ग्रीखम देस निसा ठड नीसरै ।  
 गहरो नोद घुराय व साथी मोस रे ॥  
 दिन तपता दीपार व सिद्ध्या सातरी ।  
 प्रात ममै मरपूर व आभ अैकात रो ॥ 16 ॥

चेती गरमी चेत मे, उत्तरचा वढगी ओर ।  
 अवेर रह्या उनाळिया, जीरो गेहू जोर ॥  
 जीरो गेहू जोर क रातो रायडो ।  
 वाटण दाम वजार क करसो वायडो ॥  
 भर गेहू भण्डार कोरडू काढवै ।  
 समझदार किरमाण क गरिमा जाडवै ॥ 17 ॥

वेळा सादी व्याव री, महिमा ग्रीखम माय ।  
 सोरी हुवै मगाइया, देखी ग्रीखम दाय ॥  
 देखी ग्रीखम दाय क जाना जोर री ।  
 भूला किम वंसाख वाय री भोर री ॥  
 सद नव जुडता माय क गाळ गिनायता ।  
 खरचा खाता खूब क महिमा मायता ॥ 18 ॥

मरुधर मे भूखा मरै, चारा विन पसु चाम ।  
 सजळ नाडिया सूखगी, गुजर रह्या दिन गाम ॥  
 गुजर रह्या दिन गाम क मोळी मानखी ।  
 फोडी तोडी फेर क धीणा धान को ॥  
 गाया भेंस्या गोर व चाटे चाम नै ।  
 हाडक निकलचा हाय ! रहम ना राम नै ॥ 19 ॥

व्याज कमावै वाणिया, मोदा साहूकार ।  
 अड अड दहै उधारिया, अरज कराय अपार ॥  
 अरज कराय अपार गरीबा गोर ना ।  
 भूख टावरा भाग जुगाडा जोर ना ॥  
 होवै सोसण हाय निरधना नाम री ।  
 देखी सकल ससार दिप प्रभ दाम री ॥ 20 ॥

आविया वंसाख अरध, तपती वदळी तोर ।  
 प्रात साभ सुख पायली, दोपारा दुख ॥ २१ ॥

दोपारा दुख दोर छिया ना छोडणी ।  
 लूवा लागी लौर क ग्रसकी ओढणी ॥  
 ठडा पीरा ठीक तेज कम तावडी ।  
 मटकी ठडी मीत नीर ढिग नावडी ॥ 21 ॥

छानड भू पड छाविया, तपती यू कम ताय ।  
 निरघन रै साधन नही, ओही अेक उपाय ॥  
 ओही अेक उपाय क जीगी रावडी ।  
 कादी खावी काट क रोट्या छावडी ॥  
 ठड मटकै ठीक क पाणी पीवणी ।  
 ग्रीखम माय गरीवा इण विध जीवणी ॥ 22 ॥

धनवाना साधन धरा, खरा मौज रा खाण ।  
 हाचा भवन हवेलिया, गरव करै गुजराण ॥  
 गरव करै गुजराण क कूलर कोड मे ।  
 धूमण कार धराह हुकमी होड मे ॥  
 वातानुकूल विलास ठडाई ठाट री ।  
 सिकजिया सरबत्त क चीजा चाट री ॥ 23 ॥

खाट रालियो खेतडा, किरसाणा बुसळात ।  
 आखातीज सु आयगी, सुगन हळोट्या साथ ॥  
 सुगन हळोट्या साथ क खडवै खेतडा ।  
 मजनी करती सूड क हूनर हेतडा ॥  
 घर मे दूज गोळ आय लं आसरी ।  
 गहरी नीद घुराय क वपुज विकाम रौ ॥ 24 ॥

उळनी बाजै वारणं, तपती भीतर ताय ।  
 ग्रीखम दारी गावडा, मरुतर थळवट माय ॥  
 मरुधर थळवट माय क बाजै वायरी ।  
 सूनी सडका महर करै रिछ वाय री ॥

उडती रेत आकाम दिनकर न दीखवै ।  
बल तल तौ बेसाख सुनिजरा मीख वै ॥ 25 ॥

जेठ मास तपियौ जवर, खवर लही ना खेर ।  
चितव लहै चपेट मे, लागी लूना लेर ॥  
नागी लूना लेर रिक्त मह रासना ।  
तपियौ सूरज तेज घट्टत गुमासता ॥  
उरती छिया दोपार लुकीनी लोक मे ।  
दुरलभ बलती देण क चलणी चौक मे ॥ 26 ॥

पख्या हाथा मे पकड, घर घर रह्या घुमाय ।  
वाता मे चित ना भळै, सबनै तपत सताय ॥  
सबनै तपत सताय क डाडै डोकरा ।  
मोछा स्स मोट्पार क छोज छोकरा ॥  
चाम पसीनी चर्व क गारी घू घटै ।  
भूल गया म्मे भूख तिस जल ना मिटै ॥ 27 ॥

मिरग दुखी ग्रीखम मही, तपती बाळू ताय ।  
भरण चौकडी भूलगा, ऊभा मेजड आय ॥  
ऊभा येजड आय क टळगा टोळिया ।  
रीछ वानरा रोभ क छोडी छोळिया ॥  
व्याकुल व्है वनराज न सूभ सिवार री ।  
सहन करा किम सूळक ग्रीखम मार री ॥ 28 ॥

राळ रही तप रोहिणी, हिरणी व्याकुल होय ।  
भू डी हालत भेसिया, सुर भी दुखिया सोय ॥  
सुर भी दुखिया सोय नीर ना नीरणी ।  
नैणा भरतौ नीर गीड रेतड घणी ॥  
धणिया नाही ध्यान रामजी रुमगी ।  
वाळ जेठ अति कटण छून चित चूसगी ॥ 29 ॥



पछी ग्यासा पाणिया, उडणी भूल्या आज ।  
 पडिया ओठे पेड रै, पेख परी सर पाज ॥  
 पेख परी सर पाज क दुर लभ दाणिया ।  
 भूल्या करण किलोळ क छोडी दाणिया ॥  
 मास जेठ अधमाय क मोळी मरधरा ।  
 सारा खूट्या सज क प्राणी पाधरा ॥ 30 ॥

वाजया साडी पाच वस, ऊगै दिनकर आय ।  
 नौ वजिया सू नासती, छिताज ग्रीखम छाया ॥  
 छिताज ग्रीखम छाया दोपारा दाभवै ।  
 ठडा पोर न ठड लोक मे लाजवै ॥  
 वजिया साडी सात अरक चल आयवै ।  
 निसा ठड अब नाय क ग्रीखम गायवै ॥ 31 ॥

दाभै वळती देह नै, बाजै मिरगा वाय ।  
 व्योम इळा अब वाय सू, आधी मे अधळाय ॥  
 आधी मे अधळाय खेह भर खेतडा ।  
 बहता पथ बिचाळ रळै सिर रेतडा ॥  
 चख भरिया घण चाय क वाळू वाय री ।  
 मग फिरवै मजबूर केम रिछ काम री ॥ 32 ॥

मीतळ कुच अर मुख मनी, वेणी मीतळ वाम ।  
 भेटया इतरा भागिया, सोरा ग्रीखम साम ॥  
 सोरा ग्रीखम सास क सोरभ सातरी ।  
 मावर रै ढिग मेळ व्यथा विण वातरी ॥  
 मग मोळा सिणगार मरद ही साजवै ।  
 रे सोरा दिनरात देह नौ दाभवै ॥ 33 ॥

वेग्या विरहण री वणी, ग्रीखम वेळा गेह ।  
 वळती भीतर वार सू, देखी दाभै देह ॥

देखी दार्भ देह क तिमरणा तेजव्ही ।  
 सोता रात सवाय सूळ सम सेजव्ही ॥  
 व्योम सुधाकर वास विस बरमाविया ।  
 नेणा बहवै नीर क ओळू आविया ॥ 34 ॥

गिए गिए दिन दोरा घणा, निकळै ग्रीखम नाम ।  
 जेठ उतरतै जीवडा, कोजी तपती काम ॥  
 कोजी तपती काम आसाढ आवियी ।  
 ऊमस थई आकास हियौ हिलावियौ ॥  
 घट छावै घटराट अमूभै अग मे ।  
 सुगन रुपी न समीर रै तपती रग मे ॥ 35 ॥

विरखा हीणी वीतणी, श्री विकराळ असाढ ।  
 जागी व्याधी जीवडा, जग छायाँ दुख जाड ॥  
 जग छायाँ दुख जाड मरै पशु मोकळा ।  
 पछी बिन पाणीह् खुटै हुय खोखळा ॥  
 वीरज वाळा धीर छिता पर छोडियौ ।  
 दुख री खद्दर दीह् आसाढ ओडियौ ॥ 36 ॥

बिन विरखा आसाढ वस, जागै व्याधी जोर ।  
 नीर अन्न अरु नीरणी, काटी खाली कोर ॥  
 काटी खाली कोर क आय उवासिया ।  
 कडणा दिन्न कठिण क मरुधर वासिया ॥  
 नेडी विरखा नाय क ठडी वायरी ।  
 टावर भेंस्या टाट घणौ दुख गाय री ॥ 37 ॥

सूतो ऊगै दूज ससी, हाको सारै होय ।  
 त्यारी आ काळा तणी, कारी लगै न कोय ॥  
 वारी लगै न कोय क ऊमम आतरी ।  
 सीतळ रात सवाय व्यथा हर भातरी ॥

वावड्यो कित वळची व्योम ना वोल्व ।  
श्री इसडो आमाढ क छाती छोलवै ॥ 38 ॥

उन्दु दूज आसाढ रौ, ऊभौ जै ऊगन्त ।  
ऊमम थाय आकास मे, हिव किरसाण हसन्त ॥  
हिव किरसाण हमन्त क हळिया हाथ मे ।  
गावै तेजो गीत प्रात चल पाथ मे ॥  
नाड्या आयो नीर क वावै वाजरी ।  
आभ थई इळ आज क गिगना गाजरी ॥ 39 ॥

चेत वेसाख जेठ चळ, श्रीर इसी आसाढ ।  
श्रीखम ताया गावडा, हिनिया सहरा हाड ॥  
हिलिया सहरा हाड क भारत वासिया ।  
मरुपर श्रीखम माय पडै गळ पासिया ॥  
मोकै सत्रौ मान जरुता जाणियै ।  
विरखा श्रीखम वसु, प्रताप पिछ्छाणियै ॥ 40 ॥

खादर भरिया खलक मे, आदर माम असाढ ।  
भा वरसाळै पुनरवसु, काळ कूट दै काढ ॥  
काळ कूट दै काढ पुखा परनाप तै ।  
सावण वढियौ सीर जटी कै जाप तै ॥  
आलय ललना ऊम क नयण निहार मे ।  
इसटा कर उडीक सजी सिणगार मे ॥ 41 ॥

विधू वदन वाताय चख, गरिमा छाई गेह ।  
रम्म नामिका अघर रदन, दामण कामण देह ॥  
दामण कामण देह नगै चित लालसा ।  
चिकुर नागणी चाल पयोधर पाळसा ॥  
कग कुसेसय वान क भावर मेळिया ।  
तरणी भावण तीज करावत वेळिया ॥ 42 ॥

असलैका बूठा इळा, जण जण व्याधी जौय ।  
 बाढा यई बसुन्धरा, हाणी जवरी होय ॥  
 हाणी जवरी हाय टूटगा टापरा ।  
 पसु वहिया परिवार महि अणमाप रा ॥ ~  
 जणणी रोती जाय क बेटी बेयगी ।  
 अतरजामी आज लोक सुख लेयगौ ॥ 43 ॥

बढियौ जवरी वाजरी, कछु न मोठा काण ।  
 तिल ज्वार गवारा तणा, नहचै करी निदाण ॥  
 नहचै करी निदाण हरख हरियाळिया ।  
 गहरी बढियौ घास क ओरा पाळिया ॥  
 खोळ लावणी खूब ठेह भर ठाण न ।  
 गाया भैस्या गोर क ऊभी खाण न ॥ 44 ॥

राखी माखी गेत री, हिन्दू धरम हमेस ।  
 भार्द रिच्छक बहन रा, दीपे कीरत देस ॥  
 दीपे कीरत देस क बिरखा बूभवै ।  
 जलम आठम जहान प्रेमसू पूजवै ॥  
 भडिया लागी जोर पट्ट सोळा पडै ।  
 मोटा चवै मवान गुलिक भूपड भर्ड ॥ 45 ॥

भादव भडिया वापरी, मेळी गिरिसर माय ।  
 ऊट बैलिया अस्व इत, वेगा मेह बिकाय ॥  
 वेगा मेह बिकाय क गोगौ गाव रौ ।  
 खावण सेवा खीर क नेही नाव रौ ॥  
 सुकळा ग्यारम साथ जळासय भूलणी ।  
 नेकी सू रख नेह भगवत न भूलणी ॥ 46 ॥  
 भरिया सरवर भादवै, हरिया तरवर होय ।  
 पसु चरिया भर पेटडा, सोरा करिया सोय ॥

सारा करिया सोय किरसाण कोड मे ।  
 समझ जमानै साख क हालै होड मे ॥  
 वे छव भरिया बान्ध साधन सिचाईया ।  
 औ है काळ उपाव कराय कमाईया ॥ 47 ॥

परवाई बाजै परी, मास भादवै माय ।  
 विसधर लहरावै विविध, डोल्या खेत डराय ॥  
 डोल्या खेत डराय क गहरा वास मे ।  
 बाजर बढियाँ वोत जवारा रास मे ॥  
 फूला तिल्ल फनाय महिमा मूगडा ।  
 मक्की मूग फझीह तारीफ नक्कडा ॥ 48 ॥

चिरखा धीमी यू भई, आय गयी आसोज ।  
 साद विरामण सराद मे, चाय माल बेचोज ॥  
 चाय माल बेचोज अन्ध विसवास म ।  
 हिन्दु सस्कृति हाथ पुजावत पास मे ॥  
 नोरता देवी नाव घणी पूजन कियो ।  
 ऊगै तारी अगस्त मेह घर पूगियो ॥ 49 ॥

विजय दसमी उछव विविध, देह रावण दजाय ।  
 मरद पूनम तणी ससी, व्योम सुमन घरमाय ॥  
 व्योम सुमन वरसाय खीर ग्व डगळ ।  
 मेली वार भतीर अरोगी साकळ ॥  
 उतर गयी आसोज त वाती कोड मे ।  
 माखा पीछम समोर हाल होड मे ॥ 50 ॥

पावस रत जाती प्रभा, हाजर ओस हमेस ।  
 माहना कानी मायने, पय सरदी परवेस ॥  
 पय मरदी परवेस य दीप दीयला ।  
 घणद घर घर आज घुटे गुड घीवता ॥

घर घर करली घणा साफ सफाईया ।  
लिछमी पूजत लोक क मेळ मिठाईया ॥ 51 ॥

ओठें मोवण आविया, मभ काती रें माह ।  
धीरा पग सरदी धरै, डरपें डोकरीयाह ॥  
डरपें डोकरीयाह मसोडा मापनै ।  
पग पग जुगती पूर करै रिछ काय नै ॥  
सबद सरद री सुणत कापवै काळजा ।  
डर डर वोले डेंग रजाई राळजा ॥ 52 ॥

मेछी पोर मरुधरा, मरदी री मदेस ।  
नीर हिलै घण नावता, पुन्याई परवेस ॥  
पुन्याई परवेस ता पचतीरता ।  
लहरा सरदी लेय बेगली बीरता ॥  
करै जीवडी कवण सरद सू मामनी ।  
साधन लिया ममाळ उपै नह आमनी ॥ 53 ॥

मिंगसर लाग्या मानियै, जवर सरद री जार ।  
लाटा काडै लोगडा, देखा तप री दोर ॥  
देखा तप री दोर दिलासा देवणा ।  
नर सोवै नजदीक क लाटा लेवणा ॥  
माचै रजाई मेल क काधै केसली ।  
घर सू नाही घणा फिरता फेसली ॥ 54 ॥

आधी मिंगसर उतरै, उनाळी प्रभ ओर ।  
सरसू चिणा गेहू मरव, जाण रायडें जोर ॥  
जाण रायडें जोर हुई हरियाळिया ।  
फववै पीळा फूल भरै हिव भाळिया ॥  
मिरच रही मुरजाय क पूरी पाकवै ।  
जीरौ उगत जाण क तर तर ताकवै ॥ 55 ॥

पी लागा धरती पगै, कीनी सरदी कोप ।  
 हिलणी चलणी ना हुवै, रै दीना पग रोप ॥  
 रै दीना पग रोप क बाजै वायरी ।  
 दिन राही दपटीज करा रिछ कायरी ॥  
 छिया भागवा छोड तुरता तावडै ।  
 विन कामळ रै बार अवै नी आवडै ॥ 56 ॥

घर ऊडै सूना घणा, पछै रजाई पाम ।  
 करडी सरदी कारणै, गूदड ना गरमास ॥  
 गूदड ना गरमाम क गोडा घेरिया ।  
 लीयी मूड लुकाय हाथ ना हेरिया ॥  
 दिन चढिया दोपार छान नै छोडणी ।  
 मरदी री मदेस ऊपरा ओडणी ॥ 57 ॥

वजिया ऊगै इण वगत, सूरज साडी सात ।  
 पोर हेक सरदी प्रभा, घालै तन पर घात ॥  
 घालै तन पर घात दुपारा दीनवै ।  
 तावड सरण तिहार लोग म्स लीनवै ॥  
 ठडा पीरा ठड कोप लोकै कियो ।  
 अस्ताचल दिस अरव पाच वज पूगियो ॥ 58 ॥

साभ पडी भडिया सबै, ऊड भू पट आज ।  
 पौस रात ठटी पडै, करा न बाहर बाज ॥  
 करा न बाहर बाज चाम नै चीर वै ।  
 जमगौ पाळी जेम नाडिया नीर वै ॥  
 रोम कियो अधरात क नडकी नायगी ।  
 सरदी री सरणाट छिनी पर छायागी ॥ 59 ॥

धर थळवट पीछम धरा, सेखावाटी साथ ।  
 मरुअर म सरदा मुजव, हाचा मारै हाथ ॥

हाचा मारें हाथ मरद रे माकडी ।  
छिन भर दहै न छूट इळा पर आखडी ॥  
जतन सरीरा जोर रामजी राखसी ।  
वस ना मिनखा बात क मग्दी गाखसी ॥ 60 ॥

हालें ठड हिमाळ सू, बाजें उतरी वाय ।  
भरणा कापें थळवटा, मरघरियो मुरभाय ॥  
मरघरियो मुरभाय ठड री ठोवरा ।  
सरदी लागी मॅग छोकरी छोकरा ॥  
निकळें घर सू नाय बूढियो वारणें ।  
जोवन मिनखा जोर कमी इण कारणें ॥ 61 ॥

डग्ता सरदी डोकरा, सन्निणा सधाय ।  
ताता भोजन पोसतू, राजी त्रिन रधाय ॥  
राजी विन रधाय साच सकरात मे ।  
वडा तितनडा बीच खीचडो साथ मे ॥  
गुड तेला रा घणा चाडजें चूरमा ।  
भोजन विविध वणाय सजोगी सूरमा ॥ 62 ॥

वेल्या सरदी सू वचण, ओला निरधन ओड ।  
भूला धनिका जोर री, ठीक पायगा ठोड ॥  
ठीक पायगा ठोड गोर री गावडी ।  
भैस्या ऊभी बीच क देवण डावडी ॥  
किरसाणा री कोड धन ओ धानही ।  
इण कारण ही आज मनीजें मान ही ॥ 63 ॥

पोस मास परताप सू, रें मचियो धण रोग ।  
माचें सूता मोकळा, जवरी सरदी जोग ॥  
जवरी सरदी जोग डोकरी डोकरा ।  
वचिया जुवा न बीच छोकरी छोकरा ॥



वेदा घरै वदण क करै कमाईया ।  
हुयगो हालत हाय ! क भू डी भाईया ॥ 64 ॥

ताय ताय सरदी तदिन, परो वीतियो पौम ।  
धीमो अब पडियो धरा, जाणक सरदी जोम ॥  
जाणक सरदी जोस, महीनो माघ री ।  
आवै धवरा ओर भविस र भाग री ॥  
दिनकर री दरसाव पोर नी ठा पडै ।  
लुकगो धूवर लार वयल डर वापडै ॥ 65 ॥

दारा भडिया देवती, पापड वटती पास ।  
राध परो रावोडिया, खिचिया सूखे खास ॥  
खिचिया सूखे खास मास पौ मायन ।  
सज करै घण साग चितसू चायन ॥  
कम खरच मे काम चलावण चावना ।  
करजो दूर कराय भामणी भावना ॥ 66 ॥

मरुधर वरसै मावठी, साथे सरद समीर ।  
छोखा छोखा छोडियो, धीरज वाळा धीर ॥  
धीरज वाळा धीर सरद सू सूखगा ।  
फट दी सरदी फेट चेतणा चूकगा ॥  
निरबळ भू डी नूर क चिपिया चामडा ।  
हाथ पेर अब हाय ! करै ना कामडा ॥ 67 ॥

परणी घर व्है पौस मे, साची ओडण सज ।  
सेवन भोजन सातरा, भाग्या पडै न भज ॥  
भाग्या पडै न भज सियाळै सात रै ।  
पेरण बाघा पूर कऊ नित चात रै ॥  
पुरसारथ पर भाव जमी अन जोर मे ।  
मिनखा राखे मेळ क ठोरम ठोर मे ॥ 68 ॥

माघ महिनी मानखैं, सरद न अधिक सताय ।  
 पतभड लागी पेड नू, भड भड पत्ता जाय ॥  
 भड भड पत्ता जाय क रुखा रुखडा ।  
 दरखत भूडा दरसण टोई टूकडा ॥  
 रै आबै रितुराज छिता बन छावसी ।  
 कोयल करै किलोळ आणद आवसी ॥ 69 ॥

जाती सरदी जोर सू, छोडै अपणी छाप ।  
 नागौरी पसु नाव रौ, मेळी करै न माफ ॥  
 मेळी करै न माफ क लाखू लोगडा ।  
 सरदी रही सताय क टाडै टोगडा ॥  
 गुरला ऊटा गाज हय हिएहिएण्ट वै ।  
 बेल्या फूदा बन्ध क नामी नाटवै ॥ 70 ॥

अक भलक देखा अवर, सिंवराता सजोग ।  
 बची कुची इसडै बगत, लेवै सरदी लोग ॥  
 लेवै सरदी लोग क फागण फेलियो ।  
 गहरी उडै गुलाल क जोवन भेळियो ॥  
 ढमवै पाच्यू डोल क ठमकी ठायगी ।  
 होळी साथै हमे क सरद सिधायगी ॥ 71 ॥

गरमी री महिमा घणी, पावस आभ अपार ।  
 जीणी होवै जगत मे, बिन सरदी बेकार ॥  
 बिन सरदी बेकार तपत घण तायलै ।  
 पकै न फसला पूर कमी रुज कायलै ॥  
 बरसै ना बरसात बसत न बापरै ।  
 दीज्यो सरदी देख जपा हरि जापरै ॥ 72 ॥

## बिणास - वावनी

बेलियो

- छिया फिरी जेठ दुपारा छिपती, अधिक अरु तपती आमाढ ।  
बगो आस वरसण री भारी, बहसो कुण जाणी हो बाढ ॥ 1 ॥
- मावण लाग्या रँ ई माग, अह बणिया बिरखा अहनाण ।  
मप्तमी मानसून रँ सेती, पूगी मग्घर घरा प्रमाण ॥ 2 ॥
- सज वज न आयी घण साजन, तपती धण धर मेटण नास ।  
मुसळाधार वरसियो मेहो, सोख नीर धर सोरा सास ॥ 3 ॥
- हरख रया मिनखा रा हिवडा, सावण भाखा होसी सीर ।  
हाल्या लँ खेता मे हळिया, बिरखा तळिया जाता वीर ॥ 4 ॥
- बीती आठम आखी वरसत, परसत साखी जळा प्रमाण ।  
नवमी गजव धार जळ नाखी, दसमी डाकी पणो दिखाण ॥ 5 ॥
- वरसे रात दिवस तिथ भूखी, बारम चूकी नही बहाण ।  
वाया किया तेरस घर कूकी, धू की चवदस विधन घराण ॥ 6 ॥
- चालू कियो राज जम चाली, वरसाळो वरमै विकराळ ।  
मग्घर गरा भुमीवत माडी, पावन्दी छाडी घण पाळ ॥ 7 ॥
- आठम सू अमावस आखी, वरस वरस नै भरिया बन्ध ।  
फूट्या वन्ध नीर घण फेयौ, फन्दे दीघा जम रँ काध ॥ 8 ॥
- लेखी लहा बिणासी लीना, सरतण ढोला पडवै सण ।  
हिवडो बढै नँग जळ हालै, देखी माल विधना देंण ॥ 9 ॥

पाणी रा फोडा घण पेली, जळ अर खेली भावा भीक ।  
किए नू कहा विधाता कोपी, नापी विरखा मरुधर लोक ॥ 10 ॥

बन्ध पिच्याक तोडिया बन्धण, किया खाख सधण रा काम ।  
फेल्या नीर लागिया फन्दण, रण सोर जागिया राम ॥ 11 ॥

भावी अवर विलाडा भूमी, चावी हुयगी विघना चेत ।  
परबळ वेग पिच्याकें पाणी, दाणी दुख हाणी घण दन ॥ 12 ॥

मोटी पाळ टूटणी मुसकल, जाण न मकिया पाणी जोर ।  
पोड्या मसत गाव पाडीसी, रातू सूता ओड्या रोर ॥ 13 ॥

धण डीकर घाम अन धावा, थिर चावा कीकर नह थाट ।  
जाण्यी कुण सूता रह जास्या, वहजास्या पाणी रें वाट ॥ 14 ॥

आ नामी माटी उपजाऊ, साऊ वहगी पाणी साथ ।  
पोची आय गई वर परती, खूट गयी वरती रौ खात ॥ 15 ॥

खाडा घाल दिया खेता मे, कस रेता सू भरिया कूप ।  
विघना किरसाणा हिव वाळें, रम विरखा बिकराळें रूप ॥ 16 ॥

आद्या धान किया उपजेला, मुसकल बरसा केई माण ।  
वे दिन कद पाद्या वावडसी, आवडसी खेता हर आण ॥ 17 ॥

चाल जळ हुयन घण चोडें, तोडें सडका अवर तळाव ।  
दावा न तरवर स्सं ढहिया, बहिया विहग पमु बहाव ॥ 18 ॥

आडावळ परवत सू ऊठी, लूणी लूठी बणवें लोक ।  
खमा दमा टाकन खूटी, थळ रुठी चूटी सज थोक ॥ 19 ॥

डमरूनाथ हिमाळें डरियो, करियो लूणी मरुधर काप ।  
पूरा बरस तीस रें पाछें, लूणी खाचें रेखा लोप ॥ 20 ॥

छत्तीसी लूणी न छंडी, भभंडी सूती न जोय ।  
 नागण किरौ भीवरी नागी, सूतण लागी आपै सोय ॥ 21 ॥  
 रमत बहती न रीसाई, नद आई राता कर नेण ।  
 भागं भरम छत्तीस भारी, लूणी मगत मारी लण ॥ 22 ॥  
 लिखता लेख बिणासी लीला, हत डोला कलमा रा हाय ।  
 थळ जागा जळ जळ ही थायी, सुमन मरुधरा कुमळं सोय ॥ 23 ॥  
 जळाकार कर दीनी जोरा, अठपोरा वरसण री आभ ।  
 लूणी तणी सिकायत लूठी, खूठी टाक दिया नर खाव ॥ 24 ॥  
 पूगी नीर परगन पाली, जोराणी भाली दुख भाट ।  
 बायडमेर धरा नह वगसी, लूणी रगसी हरण ललाट ॥ 25 ॥  
 दाता पसु बिना जळ दोग, खोरा डोरा पाता खीच ।  
 सासा उनाळ घण सहिया, बहिया अब पाणी रं वीच ॥ 26 ॥  
 उनाळ भस्या अरडाती, पाणी विन जाती दुख पाज ।  
 सट बहती पाणी सरडाटे, अरडाटे चढगी जळ आज ॥ 27 ॥  
 तिरणी भूल गई जळ तेजी, हेज्योडी पाडी रे हेत ।  
 अड पाडी लेगी जळ आग, खोडा अवर न रुकिया खेत ॥ 28 ॥  
 वीणी खूट गयी घर धणिया, बणिया खोटा हाल बिणास ।  
 बाछ्या न गाया घण बहगी, ऊठी कहगी अजळ आस ॥ 29 ॥  
 वळद ऊट लूणी मे बहगा, जूणी फिरसाणा दुख भेल ।  
 फोडा मर जीव किलबिलिया, मलिया घर धणिया हत मेल ॥ 30 ॥  
 सरवर फूट फूट बह सीधा, तरवर तूट तूट बह तेज ।  
 पछी बण बहन्त पाणी, सूता वेय गया मृत सेज ॥ 31 ॥  
 गहरी नीद सूतोडा घर में, जोडायत टावरिया जोड ।  
 चढिया नीर हिवोळं चितव, ठह लेगी जळ मोटी ठाड ॥ 32 ॥

प्रभा मायड टावरा पेखत, देखत गया जळा री दोट ।  
 टाळ लिया लूणी टावरिया, लाडणिया रहिया जळ लोट ॥ 33 ॥  
 बामा पिऊ पिऊ कह वहगी, प्रीतम रे दहगी घण पीड ।  
 ससै परिवार बहै घण मायै, भरणगी सुरगा मायै भीड ॥ 34 ॥  
 मलबो वह आछोडा म्हेला, थोडा कै भू पडिया याग ।  
 अवाडा वहगा जळ आयै, भाग गया अवाळया भाग ॥ 35 ॥  
 घन रौ कवण जापती धारै, तन री पडगी खेचा ताण ।  
 लूणी साथ सवा नै लैगी, हा देगी अणहूती हाग ॥ 36 ॥  
 लूणी लेय गई लाडणिया, लारै रिया लडावणहार  
 म्रिगड गयी केया बूढापी, चापी न केवणिया बार ॥ 37 ॥  
 सारै जलम सू मरण सहियो, दहियो ना मगता नू दान ।  
 वा अव जीव नीर में बहियो, वर रहियो गहियो धन धान ॥ 38 ॥  
 कहा किता दुख लूणी केरा, घेर्या बाढ घणरा गाव ।  
 मरुधर नै जळधर कर मोणी, दुख दाणी पाणी रा दाव ॥ 39 ॥  
 निवा बहै मरुधर जळ नावा, चावा नह इसडी जुग चाल ।  
 इसडी भळ लूणी मत आजै, लाजेला करिया चख लाल ॥ 40 ॥  
 भू भी दुखा धरा जालोरी, दोरी दसा मिरोही दीन ।  
 न बचियो दुख सू नागाणी, मोणी इण म मेक न मोन ॥ 41 ॥  
 मेहो बरस धरा मेवाती, माडी दसा कठेई माड ।  
 हुई हाण धरा हाडोती, कोतिव अरु वरिया जळ काड ॥ 42 ॥  
 किती बाढ नदिया रे कारण, दुखी दसा उत्तर प्रदेश ।  
 बची नही बिहार घर बाकी, नाखी असम आफता नेम ॥ 43 ॥

हेकट नीर सिचाई हेतू, बान्ध मोर वी री विरयात ।  
भरिया नीर दिवारा भगी, रै छगी जगी गुजरात ॥ 44 ॥

सुरआलय बहगा नर सागण, जागण देती वही जमात ।  
बालम अर बामा जळ बहगा, बोल न सकै पोछडी बात ॥ 45 ॥

टुळ बहिया पाणी भे टावर, लोही कूटत बया लुहार ।  
पिणयार्या बहगी परवारी, सोनी घडता बया सुनार ॥ 46 ॥

बगिया सग दुकाना बहगी, वणिया सग बयी धन धान ।  
अख सहिया निसकारा भरता, कग्ता काज बया किरमाण ॥ 47 ॥

जप करता बहगा जळ जोगी, रोगी बया लिया ही रोग ।  
बहिया ततर मतर बादी, जतर रहिया किणी न जोग ॥ 48 ॥

हलकारै मालण जळ हाली, ग्याली बहगा करता खेल ।  
मसजिद सेती बया मुलाजी, साजी नीर दुखा री सेज ॥ 49 ॥

खोद दई नेता जळ खाया, गाया सेती बया गुवाळ ।  
टोगडिया घर मू जळ टोन्या, गेळवा कोप प्रकृति राळ ॥ 50 ॥

खोडा री लाठी जळ खोमी, आवा री खोसै आधार ।  
ममता रोय रही घर माही, मागी सरणाई साधार ॥ 51 ॥

बद कोप इसडी मत करजै, धरजै अबै प्रकृति ध्यान ।  
बेलियो गीत छत्तीस बिरया, दाट्यो कविया लिछमण दान ॥ 52 ॥

## ग्रीष्म - ऋतु

### गीत प्रोड

- होळका दहण लोग हालै, सुणै जाती सीह ।  
निसा अब छोटी निहारौ, देख मोटा दीह ॥ 1 ॥
- चेत महिनै गरमास चेतौ, वरा देती धूप ।  
लावणी करवा लोग लागा, किया आणद कूप ॥ 2 ॥
- अवेर लाटा घरा लोग, भर लिया भण्डार ।  
वरस रौ पहली मास वीत्यौ, गरम नाय गिनार ॥ 3 ॥
- वेसाख ताई छडा विछडा, जाण खळाज जोग ।  
दोपार तावड देख हरखत, लहै सरणी लोग ॥ 4 ॥
- वेसाख आधौ इया वीत्यौ, तपत लागी ताण ।  
भास्कर तप धरती विलोकै, सनेही सहनाण ॥ 5 ॥
- वेसाख राता चानगी प्रम, मुद विरहण मूक ।  
बावइयो पिय थोल वाणी, करा देवै वूक ॥ 6 ॥
- चानणी राता माय चमकै, रजत जिसडी रेत ।  
सिणगार निसा अनेक साजै, हिये चदव हेत ॥ 7 ॥
- किलोल करवै चद कामण, मद विरहण मन्न ।  
काढव राता सोय कोटड, खरी जागत खिन्न ॥ 8 ॥
- सजोग विघना जेण साजै, तेण आणद तोर ।  
बालमा सजनी बीच भाळी, हिये नेह हिलोर ॥ 9 ॥



- ताकता तावड होत तकडी, मकी ग्रीखम साख ।  
 इग तरह कर कर वरा ऊपर, वीतियो वेसाख ॥ 10 ॥
- तावडी करता सहन तडफे, पथ भडपे प्राण ।  
 विकराळ तपती जेठ भारी, हुवे त्यारी हाण ॥ 11 ॥
- मरवरा जीवा नीर सूखा, पसु भूखा न पान ।  
 लोगडा भोजन खाय लूखा, घणी रुखा ध्यान ॥ 12 ॥
- चावना धोणा हीण चूटे, पसु खूटे ज पूर ।  
 मुसकिला चारो नीर मिलणी, दिला भिलणी दूर ॥ 13 ॥
- आमाज भेस्या हुई ओदी, जळ न होदी जोर ।  
 मरुधर महिनी जेठ माडी, तूट पुसकल तोर ॥ 14 ॥
- सचरे सोती विपद सामी, खळक घामी खाय ।  
 अठपोर चिता प्राव आणी, मणा ढाणी माय ॥ 15 ॥
- वातीसरें मे धान काढचो, अडी लागी आय ।  
 वाजार ससती धान विकियो, जेठ माडी जाय ॥ 16 ॥
- किरमाण वणिया जायकहियो, घणी दहियो धान ।  
 साहूकार वणिया कर सोदा, धूरत व्याज धिराण ॥ 17 ॥
- इण तरह भारत देस आफत, भूख करसा भोग ।  
 चराचर जीवा देख चिता, जेठ इसडो जोग ॥ 18 ॥
- इण तरह आघो जेठ आयो, वजे मिरगा वाय ।  
 रोहणी तपती धूप राळें, तना घाळें ताय ॥ 19 ॥
- महन करता थाकिया मारा, रवी कन्या रीस ।  
 वेहाल अर नर हुवा व्याकुळ, ऊवें भवनीस ॥ 20 ॥

धनवान जतना हू त वीज, महल रीभ मन्न ।  
वारणै निरधन लोग बिलकै, तरस चिलकै तन्न ॥ 21 ॥

छानडी ग्रीखम भली छाजै, तपत थोटी ताय ।  
हवेली बीच धनवान हूता, रटै राम खुदाय ॥ 22 ॥

वरसात हीणी जेठ वीत, खाय गहरी खीज ।  
दीपार पेली रेत दार्भै, चलत दोरी खीज ॥ 23 ॥

दीपार इसा सूना दीसै, पथ गवाडा पार ।  
अघगत पी री जेम आभा, पख जेठ दुपार ॥ 24 ॥

सूयाड सहरा नगर सडका, भभकियी नभ भाण ।  
दीपार मिनखा नाथ दरमण, जेम करपयू जाण ॥ 25 ॥

घोळपुर नगरी गरम धवकै, निजर बीकानेर ।  
जोवाण सीकर तपत जवरी, महत जैहलमेर ॥ 26 ॥

मारगा चलणी वोत माडी, पडै खतरं प्राण ।  
बिकराळ लू दिन रात याजै, धिरा राजस्थान ॥ 27 ॥

प्रताप लूवा घरा पीछम, पथिक भुलसै पूर ।  
जातरा करणी भूल जावै, जेठ मास जरूर ॥ 28 ॥

जानरी रसतौ छोड जावै, छिपै दरखत छाव ।  
रजधान लूवा लगी रमवा घलै मिनखा घाव ॥ 29 ॥

मरुधरा हन्दा कठण मिनखा, तना बळती ताय ।  
बलिहार जाऊ मरवासी, रती ना धवराय ॥ 30 ॥

दीखवै विछडा छडा दरखत घरा मरुधर धाक ।  
सोहता पाणी सीर पमुवा, थळा ज्यावै थाक ॥ 31 ॥

मन ग्राम दस्ता धनन मार्ग, पाळ मरवर पेख ।  
 हुत्लाम ठटी अेम हुयगी, दरा सूखी देख ॥ 32 ॥  
 मिरगतिमणा दीखता मोदै, समझ पाणी साथ ।  
 भरजाय महिनै जेठ माही, पसु मरुधरा पाय ॥ 33 ॥  
 जेठ महिनै दोरी जीणी, दरा मरुधर वाम ।  
 तरमाय पमु नर अधिक तपती, जळत लू अठजाम ॥ 34 ॥  
 इण तरह महिनै जेठ अदकौ, करत दीनी काढ ।  
 किम्माण हेतु मास रुहियै, आवियो आमाढ ॥ 35 ॥  
 सवार सिक्क्या रात सारी, तपत ऊमस सौर ।  
 गरमास बढगी अधिक गिगना, जळद चढगी जोर ॥ 36 ॥  
 वावहियो चढर गिगन वोले, हियो डोले हेत ।  
 परदेस प्रीतम घरा परणी, चऊ मास चेत ॥ 37 ॥  
 दोलियो धीरज घणा डोकर, तपत छोकर तग ।  
 आसाढ ऊमम छोड ओळग, आम मिलवा अग ॥ 38 ॥  
 आमाढ प्रिरखा हीण अबडौ, खलव करवा खीण ।  
 छूटियो मारौ सज करसा, जोग दोरी जीण ॥ 39 ॥  
 आजाय प्रिरखा वगत ऊपर, ओज करसा आण ।  
 गोत प्राढ भीखम ज गरिमा, दाखे लिछमण दान ॥ 40 ॥

## विरखा - क्करण

### जागडी साणोर

ऊमस तपती आसाढ अधिक इळ, घणा जीव घनराव ।  
जळधर चढ्या व्योम जणजीवण, घटाघोर धहरावें ॥ 1 ॥

पिव पिन वोल विरहणी पटै, चातक वाग चलाव ।  
नेण भराय नवोडा नारी, ओळू प्रीतम आवें ॥ 2 ॥

विरखा आय लगी धर बरसण, सागर भरिया सारा ।  
फेना चढत नदी जळ फेह, धाम वहावत वारा ॥ 3 ॥

कोयल मून रखै ढण कारण, पूछ होय न पावै ।  
पावम रितु मनमोजी भूरा, मेढक सोर मचावें ॥ 4 ॥

हुई सावण महिने हरियाळी, चरै पसु हरा चारा ।  
पडिया पी पसु पालर पाणी, धाम दहै घण वारा ॥ 5 ॥

वीजळ घटा खिव घण वेळा, काळळ भूरी काळी ।  
कच जीया लहरावें कामण, भाळ मुखा छिन भाळी ॥ 6 ॥

डर डर करता फिरै डेडरा, सीपी रो सरणाटी ।  
गुजरिया घर घर घणधूम, बहिये आडग काठी ॥ 7 ॥

डोल घर सावण डोकरिया, वावहियी नभ बोलै ।  
वसुधा पवन सूरियी वार्जै, खिडकी वासव खोलै ॥ 8 ॥

उडी गरज रयो उतरादो, समगी विरखा साची ।  
वावलिया पडती घण काळळ, महि पर अदगी भाची ॥ 9 ॥

चलत समीर साधली चुपकी, मेह छाट ली मोटी ।  
 पळ पळ करडाटा कर पळनें, चपला अडी चोटी ॥ 10 ॥  
 मूसळादार वरसतो मेहीं, पड तेज परनाळा ।  
 ना मावें जळ आडा खाडा, खूब घालिया खाळा ॥ 11 ॥  
 हुयगी धर अब घडी हेव मे, जळाकार सर जारा ।  
 टप टप भरें म्हेल अर टापर, वट न खाली कोरा ॥ 12 ॥  
 विटप लुक घण आय विहगा, भेंस्या गाया भीजें ।  
 वकरी छाट पडत वोवावें, वरती करमी वीजें ॥ 13 ॥  
 उडगण भूलें रेत ऊपरा, रग किरगाटी राच ।  
 मील रह घण साभ मवेरें, खालण माही खाचें ॥ 14 ॥  
 तपत घणी त्रिदोखा तावें, आडग जीव अमूकें ।  
 सरण चलें घण वात सरीरा, सकें भावळा सूकें ॥ 15 ॥  
 रगत चाप बढ जावें रोग्या, दम सिकायत दूणी ।  
 म्ळी चलत लोचना रागी, धीमी रिखिया धूणी ॥ 16 ॥  
 गरज साथ हायळ धर घाल, केहर बिंदियी वाटा ।  
 मिणगारा रमहीन सूरमा, त्रिरहण जोव वाटा ॥ 17 ॥  
 समीर सुरियो वाजें सरमर, छवी वादळा छावें ।  
 वेकी करत किलोळ वाकडा, त्रिरखा तुरत बुलाव ॥ 18 ॥  
 हरियाळी धरती पर हुयगी, वीडा घास बदावें ।  
 फमल निदाण वाढता फेली, महि पर नाहो माव ॥ 19 ॥  
 मोखा तणत प्रात वेला मे, दिन भर तेजी दीसें ।  
 अरव आवरी तावड ऊग्यी, पगणी अब १ पोस ॥ 20 ॥

हरी घास फसला हरियाली, नीतर भरिया नाडा ।

चढत अरक पसु आय उछेर्या, लार गवाळा लाडा ॥ 21 ॥

पाणी लेण चली पिणियारी, सज सोळा मिणगारा ।

प्रभा कटि मुख और पयोधर, निरखै निजरा मारा ॥ 22 ॥

बीहर हुई लेयने वाती, खच भर चारै खारी ।

अबळा नाव जचै ना इणारी, पुरसारथ तन प्यारी ॥ 23 ॥

खुदही काम करत येता म, जोडै प्रीतम जोरा ।

पहल साभ वर आय पूगवै, घास राळियौ गोरा ॥ 24 ॥

खीचड करै तयार खाण हित, दोडत करै दुवारी ।

सारा न जीमाय मुवाणै, विण पछ खुद री वारी ॥ 25 ॥

सेजा री सोभा तन सजनी, रति क्रीडा मे रुडी ।

भेट्या दूर थकान दिन भर री, चढगी खिलकै चूडी ॥ 26 ॥

वरसण लागी मेह वारणै, माजन वरम सेजा ।

तरुणी तन वर लेव तिरपत, लागी होडा वेजा ॥ 27 ॥

मलयाचळ मुगतागिर महिघर, हिमवती हेमाळी ।

आडावळ विध्या अरवूदा, वहवै विरखा वाळी ॥ 28 ॥

परवता हरियाळ छाइ प्रभ, सोभा देवै साची ।

कुच जिम धरै हरापटु कामण, अरध ढकं छिब आछी ॥ 29 ॥

गगा जमना वहै गोमती, माही सिन्धु न मावै ।

विरमपुत्र तेजी धर वहती, लगती साथ लिज्याव ॥ 30 ॥

चोडी पाट सुरमती चम्बळ, गटव छोडै गली ।

लूणी मरुधर मे नी ताजै, खोटी उनाम सेला ॥ 31 ॥

वरसाळोज वरसती वाला, मारा आणद साथै ।

कवी कत्रिया लिछमण कोरत, मेही मिर रै मायै ॥ 32 ॥

## सावण - सुखम्मा

छप्प

मही भारत महान, आन वाना घण अप्प ।  
घण आगै जग ग्यान, यान र दवळ अप्प ॥  
विन विन रिखिया धाम, दोहता कविजण दाखी ।  
हा माखी इतिहास, दोरता दोरा दाकी ॥  
समाज साहित्य सस्कृति, कळा प्राकृत गिरि वन्दरा ।  
अेक सू अेक आछा अठै, विविध तिवार वसुधरा ॥ १ ॥

जोरा तपवै जेठ, इळा व्है जेम अगागै ।  
लूवा तणी नप्पट, खलक री पेडौ खारी ॥  
आधी चलै आमाढ, मरव चारा जळ सासा ।  
वाया व्है किरसाण, आख फाडै नभ आसा ॥  
खज खाण पाग फीका खलक, म्हा कठण उनाळी वडण ।  
आविया आम पूरण अवै, लोक हियी सावण लडण ॥ २ ॥

सेजड जवरा खाख, नीम आळी निवोळी ।  
सुगन होविया माच, मही ना विरखा मोळी ॥  
मचसी बाजर मोठ, जोर गवार जवारा ।  
तिमिया कावड तेज, मरा मू गडिया भारा ॥  
जेठ मास तप रोयण जबर, वाय घणी मिरगा बजै ।  
ऊगती रवी अर आतनी, सुगा नभा रातड सज ॥ ३ ॥

पल भपेट पूर, ताळ भरसी ताळावा ।  
ताळा नदिया तेह, ऊमड जळ चलै इळावा ॥

मावण धायी मीर, मही पर जळ ना माव ।  
वातें आया वाय, गीत किरमाण घुरावें ॥  
धर जोन रह्या वळद्या धवळ खाता व्हता नेतडा ।  
चावता रहै धगियाप चित, रहै न अटक्या रेतडा ॥ 4 ॥

जुगत जवाटी जोत, पकडवें हात पिराणी ।  
नसल बेल नागीर, भलीविध देवत वाणी ॥  
कोड करै किरसाण, फूफाडा नारया फावें ।  
भली सुणी भगवान, तोर आई अव तावें ॥  
चट साज समळ घर सू चलै, भातौ नेयन भारिया ।  
कलेवी कत दही राव कर, नीरग नाखें नारिया ॥ 5 ॥

दिन चढिया दोपार, हळियी छोड हताळू ।  
नीरग वळद्या नाख, अन सू प्रिथमी पाळू ॥  
दही घी अर दूध, दपट करलें दोपारी ।  
आडी घडीक अंक, हुय थाकेल उतारी ॥  
जोतरा खेत भुट जाय भट, आळस तना न आणवें ।  
घुरावें जोत गुदळक गहरण, छोकी विरती छाणवें ॥ 6 ॥

करै साभ किरसाण, नुरत व्याळू तय्यारी ।  
खीच दूध घी खूब, पुगस अरधाणि प्यारी ॥  
तेल फिटकडी त्यार, नाळ वेल्या न नामी ।  
कर महनत कडपाण, खोडा न राखण खामी ॥  
जोतिया खेत मारी जमी, प्रीत भली पुरसारथी ।  
सावणू साख होसी मिरै, (धारी) वाटा जोवें भारती ॥ 7 ॥

भट तडवें उठजाय, काम करवा किरसाणी ।  
पीस वाजरी पूर, चाल चूल्हो चताणी ॥  
गाया भंस्या गोर, दोर पुरत्या दोपारी ।  
भातें रोट वणाय, ध्यान टावरिया धारी ॥



सिर खारी गोदचा मिसु समळ, लार रसी टोगड लिया ।  
निदारा करती थाकै नही, कही ? नाव अबला किया ॥ 8 ॥

करनै खेता ताम, पूग घर ठोडा पोरा ।  
जळ लेवण नै जाय, जचै पिणियारी जोरा ॥  
सटकै खीच सिजाय, कोरियै बटो कीनो ।  
धिनधिन आरी धाम, भाव महनत रौ भीनो ॥  
सबनै सुवाण मोवै सजक, महिमा नारी माग न ।  
ताहरी अपर कीरत तरफ, है गुम्मेज हिंदवाण नै ॥ 9 ॥

वज सूरियो वाय, आय विरखा उतरादी ।  
बीजळ री गळळाट, भुवन नाड्या भरवादी ॥  
गजव मादळा गाज, वेई जीवारू कापै ।  
नर रोई में न्हास, भटोभट ओटो भापै ॥  
चारा धावड समिया चरण, भरण पेट मग भावियो ।  
फजल कर राम आछी फमल, आछी नावण आवियो ॥ 10 ॥

वेकी करै किलोळ, डेडरा बोलत डोलै ।  
बाबड्यो उड व्योम, वाण पिव पिव री बोलै ॥  
रचिया मचिया रुख, कीरती काकड वेरी ।  
मोभा सुरग समाण, घणा मन मरुवर घेरी ॥  
पीळै वादळ गुदळक प्रभा, नावण आणद सोहणा ।  
चराचर जीव सुख मे चरम, मानीजै चित मोहणा ॥ 11 ॥

चंद्रवदनि चितचाव, गति जिम मस्त गयदी ।  
हालत दुर्जे हुल्लाम, मुन्दरी छिडै सुगन्धी ॥  
रुटि भूखे बेहरी, सजै जिम भूष मिकारा ।  
दीपै बीजळ दत, उभै मतदळ अखियारा ॥  
गमण गमि दिस पयोपर गिरी, रूप व्याज केसा रमण ।  
नावणी तीज आगो मजण, कोट हिय आणद वमण ॥ 12 ॥

सावण सिव रा सोम, सदन सुन्दरिया साजें ।  
 भाव भगती विभोर, छिनी सोमा वन छाजें ॥  
 अवर करे उपवास, चन्द्रमोली जळ चाढें ।  
 चदण टीका चाव, कामण सिवलिगा काढें ॥  
 वन सोम करत कर वै भ्रमण, काकड महिमा कामणी ।  
 महिमा धिनधिन इण मरुधरा, सुखमा वढगी सावणी ॥ 13 ॥

महिमा सावण मेळ, रही अदगी रेतीला ।  
 हुई सबै हरियाळ, टिकी छिनी ऊचा टीला ॥  
 पावासर सी प्रीत, थळवट सरोवर थाया ।  
 मुगता पाण मराळ, उडि तिम सारस आया ॥  
 हालता भरे चौकडी हिरण, खुमवें लीला खावता ।  
 वीकाण थळी मोभा वढी, अदगी सावण आवता ॥ 14 ॥

वधिया जवरा वाध, हुआ दकलेत हिवोळा ।  
 नहरा पाणी नाप, छोड पज चढिया छोळा ॥  
 बाढा नदिया वेय, आसरा केई उजाडें ।  
 हाणी करवें हाय, वणी गत बाही बिगाडें ॥  
 आजाय गाव सहरी इळा, चटकें वाढ चपेट मे ।  
 एकजाय मिनख धन ध्राव धर, फटकें पाणी फेट मे ॥ 15 ॥

बूठती वरसात, भली धरती पर भाया ।  
 अक आई आधार, कर देवें आही पाया ॥  
 मरुधर हृदी माण, छिता इह कारण छाजें ।  
 कोड करे किरसाण, गयण उत्तरादी गाजें ॥  
 चावती वगत आवी चलर, वळू रयी वरसातडी ।  
 मरुधरा भरोसें मेह रें, अवर न बाळी आतडी ॥ 16 ॥

## धरस्ताछी

### गीत काछी

नपत रवी मकळ आमाढ तायी, अबै सावण मास आयी,  
घगगी घन छायी गिगन ।

भळ जगत भायी, छोळ छायी, कमायी किरसाण ॥  
हळ परै हाथा, मदद साथा, गीत पाथा गावता ।  
रत दिवस राता, बीज वाता, गिरी घाता माण ॥ 1 ॥

लगन डक जळ झडी लागी, भुवन विपदा दुर भागी,  
अनुरागी मना उछव ।  
खुम नाथ खागी, दळा दागी, वाघ जागी व्याव ॥  
घन गिगन गाजै, सोर साज, नित मोर डाजै नचत ।  
रिख सत राजै, वष विराजै, मना भाजै माद ॥ 2 ॥

होद सर लेवै हिलोळा, छवै नदिया फेन छोळा,  
डरा नद डोळा डकत ।  
टावरा टोळा, रमै गोळा, प्रभा पोळा पूर ॥  
जग जुगत जाणै मोज माणै, दम्पती ठाणै दिपत ।  
प्रीती प्रमाणै तत नाण, नव ऊफाणै नूर ॥ 3 ॥

वावट्यो आवाम चोले, डडरा रट मजद डोले,  
हियो छोले, गिरहणी ।  
अळि फूल ओले, झुकत भीले, रमिक खोल रोव ॥  
बोयना प्रीती, परख प्रीती, मोन नीती मोहणी ।  
चुगाऊ चीर्ता जोर जीती, परस भीती पोष ॥ 4 ॥

वसुधा हरी घण घास जाडी, भजन जिम वधु हरी माडी ।

मन्द ताडी मरुधरा ।

जस केर भाडी, थोर दाडी, राग ताडी मूछ ॥

वेजडा खागा, आय आगा, नीम घासा घर नय ।

नरवरी तामा, मिटी मामा, टीन वामा टूट ॥ 5 ॥

चरं वसु हरा चारा नवन मिह्या घाम नाग,  
पय महारा पालरी ।

गुदळक गुहारा, माग मारा, पथ टाग गाव ॥

गोहरा गारा, मूत मारा, टोळ न्याग टोणटा ।

हूहती दारा, धवळ जाग, उणियारा आय ॥ 6 ॥

तूर भादव माग लागा, वरर वग्ग जम घागा,  
कामणी वागा वट ।

जामणी जागा, राग रागा, वात नागा डून ॥

दिल तडित दाग, मिहर माग, गळे लागे मू मर ॥

लख नगन लागे, प्रीत पागे, मीर मार डूट ॥ 7 ॥

अघागे मिहर उगाळे, भगन मिह्या मार मर ॥

दिला नाळे दरमणा ।

पग्मात बाळे, खूर घाग, मर मर मर ॥

सीहर समाळे, गाव गाग, मर मर मर ॥

रम्बाद राळे, मही मार मर मर मर ॥ 8 ॥

हुय फमल हरियाग मर, मर मर मर मर  
उमगा आछी उग ।

सदपाळ माची, मर मर, मर मर, मर ॥

मोटा मतीरा, मर मर, मर मर, मर ॥

मग्गर मतिरा मर मर मर मर मर ॥

प्रभ फसल आसोज पूरी, दुखा व्है किरसाण दूरी,  
तेज सूंगी तावडौ ।

भू भै जरूरी, नाज नूरी, आस पूरी ईस ॥

बरसात बीती, हत हरीती, रात सीती घर रहै ।

सिद्धा सुरीती, काट श्रीती, लोग छोती लीस ॥ 10 ॥

## बेला - बरणा

गीत ललित मुकुट

पावस रत माची प्रबळ, आछी वात अपार ।

हाची व्ही हरियाळिया, नाची खुसिया नार ॥

नाचै खुस नार, हरख अपार, तीज तिवार, पीव घरै ।

सोळा मिणगार, पटनव वार, घर घर नार, कोड करै ॥

दम्पत दीदार, सम्पत नार, सुख आधार, चित्त हर ।

विरहणी विचार, वारम वार, साभ सवार, अख भरै ॥ 1 ॥

अख भरै दुख मे अवस, विरहण कर बिलाप ।

वणै भाप जळ भेट वपु, तन पर इसडी ताप ॥

तन पर वण ताप, सवद सराप, कै हिव काप, जीव दहू ।

दामण दिल दागै, सिहरा सागै, लगळ लागै, केम सहू ॥

छाती घण छोल, डेडर डोल, पिव पिव बालै, वाबड्यो ।

ककी किलाळ, नदिया छोल, होद हिवोळ, लैरहियो ॥ 2 ॥

लैरहियो जण लाक मे, सावण आणद सोय ।

चार हरित पसुवा चरण, जीवण पालर जोय ॥

पालर जव जोवै, सुरभी सोवै, महिसा मोव सयधारा ।

टोगडिया टाडै, बटो हाडै, मोजा माडै, सिभारा ॥

खीचड धी खासो, दूधा चासो, वाघर बासो, हरखावै ।

नीदा लै नामी, खेत न खामी, अंतरजामी गुण गावै ॥ 3 ॥

गावै करसो गीतडा, पखर सरवर पाळ ।

भडिया लागी जोर री, भादव मास विचाळ ॥



मेठा सकेत, हिव घण हेत, चाले चेत, सुख साता ।  
निरधना निकेत, गूदड वेत, दुख घण देत, अधराता ॥ 8 ॥

अधराता मरदी अधिक, मास पीम रे माय ।  
नीर जम गयी नाडिया, मरदी प्रात मवाय ॥  
सरदीज मनाई, सुत वतळाई, उठ मत माई, ठर जाई ।  
रिव दरस दिखाई, उठोस माई, गूदड माई, फरमाई ॥  
पुरमारथ प्यारा, वेठा म्हारा, सूर सारा भारत रा ।  
नीची मत नाचो, ऊची ताचो, बोल न भाखी आरत रा ॥ 9 ॥

आरत भारत ना अबै, (वहै) सगळ विस्व सनमान ।  
माखें भारत वातडी, धर वें सारा ध्यान ॥  
धर वें त्सै ध्यान, कर वें ज्ञान, मुलव ममान, दरमावै ।  
जाणवै जहान, हिन्द महान, गरिमा ग्यान, हरमावै ॥  
भारत सत भाखें, मायत राखें, जगलज ढाकें सरसावै ।  
जग रो हित भाकें, डोळ न डाकें, मयमव राखें, गुणगावें ॥ 10 ॥

गुणगावें गुणवान रा, मरद हुताया माय ।  
काधें राखें काम्वळी, सरदी नाय सताय ॥  
सरदी न सतावै, तर तर जावै, नेडी आवै, रितुराजा ।  
भ्रमरा मन भावै, कोयल गावै, फूल खिलावै सिरताजा ॥  
छिंब वेलड छाई, गळ लगाई, पौधा पाई, सीराई ।  
पैडा पुरवाई, मसतो लाई, विसधर ठाई, बोराई ॥ 11 ॥

बोराई सजोग वम, कामण फागण वाय ।  
गावै नर घण गीतडा, वैठा चग बजाय ॥  
वस चग बजावै, फागण गावै, जोवन छावै, लहरावै ।  
धूधर घमकावै, नाच नचावै, माग वणावै, घेगव ॥  
होळी मगळाई, मरद गमाई, चेत वदाई, गरमाई ।  
पववान पुजार्, सीतळ माई, ठडा प्याई, फरमाई ॥ 12 ॥



भादजा बिचाळ, अहि विस आळ, वाय समाळ, पुरवाई ।  
 खेता जळ खाळ, फसळा गाळ, नदिया चाळ, चट आई ॥  
 वाढा जळ वहिया, घण दुख सहिया, घण जण गहिया राय घर ।  
 राजी हर रहिया, भौ सुख भईया, प्रभा पईया धाम तरै ॥ 4 ॥

करै जोर फसला वई, नामी कियो निदाण ।

मातू साख सुहावणी, कोट हियै किरसाण ॥  
 काडै किरमाण, वड्डु न काण, खेता खाण, निपजेला ।  
 आभा असमाण, वरती धाण, महिमा माण, जग देला ॥  
 बायर सुभ वाजै, फमला छाजै, कीरत राज आसोजी ।  
 पावस रत प्यारी, जग आवारी, महिमा वारी, मनमोजी ॥ 5 ॥

मनमोजी हुयगा मिनख, पावस रत रै पाण ।

आछी फमळा मे अदै, पाती रखी न काण ॥  
 काती नहू ताण, मोजा माण, दीवा दाण ओसाण ।  
 पुरसारथ पाण, हरली हाण, घाया धाण किरसाण ॥  
 नीजा घर लाटा, कीजा काटा, दीजा दाटा, मरखार्या ।  
 आणद पुळ आठा, ठाटा बाटा, घरै न घाटा इद्कारजा ॥ 6 ॥

इदकारी नारी अधिक, दीप मालिका दख ।

माफ मफाई मदन री, पूरण घर घर पेय ॥  
 पूरण घर पख, दीपक देख, कळह न केक, नर नेक ।  
 विसवास विसेख, नामी नेख, राखै टेक, हरि हेक ॥  
 कातिय स्नान, घर हरि ध्यान, देव दान, परभात ।  
 करणानिधान, अरजी वान, अनुचर मान, हरसाल ॥ 7 ॥

हरसाने जोवन हियी, पण सरदी परवस ।

मिगसर पो सरदी मगन, देखी मग्धर देस ॥  
 दी मग्धर देस, मरद विसेस, ढर ढर डेस, हिव ढाई ।  
 विगड घण वेम, वद न वेस, सरदी नेस, सवळाई ॥

मेठा सकेत, हिव घण हेत, चालै चेत, सुख माता ।  
निरधना निकेत, गूदड वेत, दुख घण देत, अधराता ॥ 8 ॥

अधराता मरदी अधिक, मास पौम रै माय ।  
नीर जम गयो नाडिया, सरदी प्रात मवाय ॥  
मरदीज मवाई, सुत बतलाई, उठ मत माई, ठग जाई ।  
रिव दरस दिवाई, उठोस माई, गूदड माई, फरमाई ॥  
पुरसारथ प्यारा, वेटा भूहारा, सूरु सारा भारत रा ।  
नीची मत नाखी, ऊ ची ताकी, बोल न भाखी आरत रा ॥ 9 ॥

आरत भारत ना अबै, (दहे) सनळ विस्व मनमान ।  
भाखै भारत बातडी, वर वै सारा ध्यान ॥  
घर वै ससै ध्यान, कर वै कान, मुलक ममान, दरसावै ।  
जाणवै जहान, हिन्द महान, गरिमा ग्यान, हरसावै ॥  
भारत सत भाखै, मायत राखै, जगलज ढाकै सरसावै ।  
जग रौ हित भाकै, डोल न डाक, मथसब राखै, गुणगावै ॥ 10 ॥

गुणगावै गुणवान रा, मरद हुताया माय ।  
काधै राखै काम्बळी, सरदी नाय सताय ॥  
सरदी न सतावै, तर तर जावै, नेडी आवै, रितुराजा ।  
भ्रमरा मन भावै, कोयल गावै, फूल खिलावै सिरताजा ॥  
छिव वेलड छाई, गळै लगाई, पौधा पाई, सौराई ।  
पेडा पुरवाई, मसती लाई, विसधर ठाई, बीराई ॥ 11 ॥

बीराई सजोग वम, कामण फागण काय ।  
गावै नर घण गीतडा, बैठा चग बजाय ॥  
वस चग बजावै, फागण गावै, जोवन छावै, लहरावै ।  
धूधर धमकावै, नाच नचावै, माग वणावै, घेगावै ॥  
होळी मगलाई, मरद गमाई, चेत वडाई, गरमाई ।  
पक्वान पुजाई, सीतळ माई, ठडा खाई, फरमाई ॥ 12 ॥

फरमाई कविजण फजल, दम्पत सुगना दोर ।

पीव छोड परदेस ने, घर करणी गिणगोर ॥

घर री गिणगोर, हरख हिलोर, जोवन जोर, कामणिया ।

सिझ्यारा सोर, भा घण भोर, देहा दोर, दामणिया ॥

वेमाख बिताई, गरमी छाई, तावड छाई, लोका नै ।

नाइया जल नाही, भूखा भाई, पसु डेडाई, डोका न ॥ 13 ॥

डोका ने पसु घण डुळै, मास जेठ रै माय ।

भई खाली भखारिया, नीरण दाडै नाय ॥

नीरण अब नाही, करौ कमाई, जेठी खाई, दुखदाई ।

सेठा घर जाही, मान गमाई, दाणा ताई, करसाई ॥

भारत मे भाया, घणा कमाया, सेठ वणाया सकेता ।

वाकी सब भूखा, रूखा सूखा, चेता चूका रकेना ॥ 14 ॥

रक किता अजहू रुळै, सोसण करवै सेठ ।

नेकी मग्जादा नरा, पापी तोडै पेट ॥

पापी घण पेट, लहै लपेट, काळ चपेट कुरळावै ।

ार भूखी घेट, चितव चेट, भू डी भेट, घटकावै ॥

आसाढा ओदी, खाली होदी, नीरण वोदी, घर नाही ।

सिझ्या मिसकारा, निस निसकारा, चित चुसकारा, सरमाई ॥ 15 ॥

## सूरा - सलक

ब्रह्मा

- भुक् जाणी डर जीवणी, अर म्हणा अन्याय ।  
सूरा अंता ना म्है, जें माथी कट जाय ॥ 1 ॥
- अड ज्यावें सच ऊपरा, जिका न गूथें जाळ ।  
वचन निभावें वेवता, सूरा भाव समाळ ॥ 2 ॥
- दुबळा पर राखें दया, दहै न मवळा दाव ।  
सरणागत रिच्छा समण, सूरा तणी सभाव ॥ 3 ॥
- रिपुवा रै सामी रहै, रै भामी पग रोप ।  
वीर देस रै वासतै, त्यार खाण नें तोप ॥ 4 ॥
- उर मे भय ना आणवै, करता दुरलभ काज ।  
वसुधां पर विख्यात है, सूरा तणी समाज ॥ 5 ॥
- धरम अरु जातीधरा, तिरिया इज्जत ताण ।  
रिच्छा सूरा राखवै, जीवत दहै न जाण ॥ 6 ॥
- आदर सू जीवै अवस, मुलक रखावै मान ।  
सूरा जीवत ना सहै, अपणै री अपमान ॥ 7 ॥
- विरदाया घण विरदवै, दै वित सारू दान ।  
कर् जगत चौकूट मे, सूरा री सनमान ॥ 8 ॥
- रिपु सारा डरता रहै, आगें हेक न आय ।  
सूरा देख समीप मे, कापण लागै काय ॥ 9 ॥

- रिच्छक सूरु देस रा, श्रीर देस आधार ।  
 दोरा दिवमा देम री, वीरा काधै भार ॥ 10 ॥
- धारौ दुसमी मू वका, कम ना हुवै केस ।  
 जीवत जमी न जाए दू, सूरु भी सदेस ॥ 11 ॥
- भालर वगता जलमियो, वीर चमकतुं भाळ ।  
 मिर मोटी छोटा चरण, लोयण डोरा लाल ॥ 12 ॥
- उर चौडी आई उभर, हाचा लम्बा हात ।  
 जोरा नखतर जलमियो, वीर रखावण बात ॥ 13 ॥
- नान्यो पाण्या नीमर्यो, प्राणी उचरत राह ।  
 आज धरा पर आयगी, दुसमण करवा दाह ॥ 14 ॥
- दिल पर गोळी दागदी, दुसमी मोकौ देख ।  
 मरती मरती मारगी, इसडी वीर अनेक ॥ 15 ॥
- नान्यो रह्यो निहारती नाळो काटत नाण ।  
 हाथ बढची कटार हित, जग सयोगी जाए ॥ 16 ॥
- सूती जच्चा साळ म, कनें टकी करवाळ ।  
 बाळव मसतर लेववा, उठ उठ करै उताळ ॥ 17 ॥
- जोसी टीपण जोवता, धूजण लागी वीर ।  
 वेरचा खन वहावमी, वणमी इसडी वीर ॥ 18 ॥
- बरस पन्चीस वीच मे, मतस्वा सताप ।  
 देमी माथी देस ने, अमर हुवेला आप ॥ 19 ॥
- बाळव लागी बोलवा, माद जिया सादूळ ।  
 चुबवा लागी चित्त मे, सतस्वा रै सूळ ॥ 20 ॥

सामी समवा सत्रुवा, वरवं ताकत कूत ।  
कर धारी वरवाळ न, पनरं वरसा पूत ॥ 21 ॥

गाजर सम रिपुवा गिणत, करतौ दुसमण काण ।  
हाजर लडती देस हित, पिता निसारै प्राण ॥ 22 ॥

भाग अणाय्या जार रा, गाडा दिया टिकाय ।  
दुसमण वाळें सग दळ, हाची मचगी हाय ॥ 23 ॥

भाक भीक मचगी जवर खागी रखें न खेर ।  
दुसमण कायर दोडता, उडिया मूड अवेर ॥ 24 ॥

सुरगा तात मिधाविद्या, रिच्छा दस करत ।  
वीर मात खण वासतें, जोहर माय जळत ॥ 25 ॥

कुळ मे नाव कमाववा, तर तर हुवां तय्यार ।  
मात वरम री सूरमी, काध लीधौ भाग ॥ 26 ॥

ससतर घरा समाळिया, अणिया तज उपाय ।  
असव तणी असवारिया, कमधज रया वराय ॥ 27 ॥

मान दियो दत्त मगणा, बारा वरज चुकाय ।  
बदळी चुकाण वापरी, कमधज काप वराय ॥ 28 ॥

वरस वारवं वरिया, सूर दिया समचार ।  
आळ फरज उतारवा, ते दिन रह्यौ तयार ॥ 29 ॥

चवदे वरसा चालियो, बिकसी बाय वितेस ।  
चढियो घोडे चातरक, दुसमी मेटण देस ॥ 30 ॥

जाय मचाई जग म, जोरा भाका भीक ।  
बदळी लेवण बाप री, सूरौ हुवां सरीक ॥ 31 ॥

धर धूज दिग वहलवै, दुसमी वाप देख ।  
मिर काटण नाय् मपट, अदगो सूरौ अेव ॥ 32 ॥

अरि सिर काट आगता, मेना मचियो मार ।  
दिपवै मूर दोपार मे, जेठ रवी सम जोर ॥ 33 ॥

वेरी भागण लागिया, देख मूर दीदार ।  
अरव जेम उग आविया, उठ जावै अधकार ॥ 34 ॥

चव रगत अरिया चलत, तडित जेम तलवार ।  
काळी कवाळी ररै, मूरा री मतकार ॥ 35 ॥

खेला टावर खेलता, वणवै नायक वीर ।  
मला देव मेना सजै, ममर जितावण सीर ॥ 36 ॥

रमता धुकळिया रम, सना रघै समाळ ।  
दुममण हृदा देखनै, मच भागै भुरजाळ ॥ 37 ॥

ऊच आसण ऊपरा, जमव सूरौ जाय ।  
बाकी टावर बैसिया, आसण नीचै आय ॥ 38 ॥

भू गी धरती मुलक री, सबसू बटकर दस ।  
ररवा देखे न्हा वदै, पग मतर परवस ॥ 39 ॥

भाव दरमिया भीतरी, मूर वीरता साथ ।  
मान रखामो मुलक री, आ वालक अवदात ॥ 40 ॥

ममभ वाळव सतरवा, ऊभा निरभय आय ।  
ध्म मचाई रिपु धरा, सूरौ अेकण जाय ॥ 41 ॥

क्या रा सिर काटिया, घात्या वेया घाव ।  
जीत आवियो जग सू, चित्त मे मूर चाव ॥ 42 ॥

अजस कुळ नै आवियो, हरख देस मे होय ।

आवण लाग़ा आघ सू, सगपण करवा सोय ॥ 43 ॥

विरती भाव विरागणा, लखै सासरै लाग ।

सुलखणा तणी सुन्दरी, सजियो सूर सजोग ॥ 44 ॥

परणती वधु परखियो, हतळेवा रा हात ।

आटण खग रा ओळखै, गरिमा भूरै गात ॥ 45 ॥

कत रवी सस कामणी, गौरव भरियो गात ।

अरक सुधाकर भाय अव, मिलण हुवा घर माथ ॥ 46 ॥

करियो हरख हुलास कर, कामण मिलता कत ।

घर चुडला अर धरम रै, दुसमी लगै न दत ॥ 47 ॥

हू जलम्यो हू देस हित, निवळा राखण नह ।

वरम नार री पटख धर, दुसमी मारण देह ॥ 48 ॥

मरजाळ कै मारल्लू, ठावा कीरत ठाण ।

वेर्या खून वहाय दू, तिल तिल भूमी ताण ॥ 49 ॥

माया री मोह न मन, वाया री नह काट ।

धरम सिरै रिच्छा धरा, छिपु ना हू रणछोट ॥ 50 ॥

वाजा रणभेरी वजह, सतर आयो मीव ।

हुकम दिरावो देस हित, समर पधारै पीव ॥ 51 ॥

पटु पिव रण रा परिया, मसतर लिया नमाळ ।

अमर उतारण मारती, वधु आई सज थाळ ॥ 52 ॥

कू कू मिलै न काड सू, तिलव बमी लख ताह ।

अपणी काटी आगळी, भरी रगत सू वाह ॥ 53 ॥



तेण रगत रौ तिलकडी, सोभा भाळज सोस ।  
 वीरा दहै विरागणा, अमर नेह आमीम ॥ 54 ॥  
 अमव दुडाय़ा आगता, पवन गती सा पाय ।  
 दुसमी मारण देस रा, ऊभा सेना आय ॥ 55 ॥  
 काळ काळ मिल कूकिया, दुसमी गळ न दाळ ।  
 टाळ टाळ मिर दूटवै कर सूरै कर बाळ ॥ 56 ॥  
 जीत आविया जग सू, अबै मिलैला अग ।  
 वीर कहै विरागणा, नी ती सुरगा सग ॥ 57 ॥  
 दहा रग अर देवसा, जीत आविया जग ।  
 मेवा मे मिलसा अवस, नी ती सुरगा सग ॥ 58 ॥  
 लाखा माही लख लही, अगिया सूर आभ ।  
 कुण इसडी करवाळ रा, जगा देय जवाव ॥ 59 ॥  
 जिण दिन सूरौ जावसी, बाढा खून बहाय ।  
 फिरै लार काळी फजळ, मोज लेण मन माय ॥ 60 ॥  
 रगत भरत खपरा रया, रुद्र देव राजेह ।  
 काळी कवाळी घणी, गळ उतरत गाजेह ॥ 61 ॥  
 मिरडा अरोगै रगत मन, मिरड पाय मु डमाळ ।  
 सूरौ आगै सचरै, तर मिर खूना ताळ ॥ 62 ॥  
 हव भटव चंद्र हाम री, मिर दस दस लै साथ ।  
 हसै काळी हुलाम हू, महादेव मुमकात ॥ 63 ॥  
 जेठ रवी जिम जग मे, तपिया सूरौ तेज ।  
 अरिदळ इसडी अगन मे, जळना लगै न जेज ॥ 64 ॥

समर घरा सागर समी, जोधा मजळ समान ।  
पोयण जिम घाई प्रभा, अदगी सूरै आन ॥ 65 ॥

ओपे समर आकास म, चकम रया चितवान ।  
तारा जिम जोधा तवू सूरौ चद समान ॥ 66 ॥

वरमाळा जिम वरसव, वर सूरै करवाळ ।  
वाळू जिम अरि सिर बहै, कटरण माय वकाळ ॥ 67 ॥

आवत जावत आगती, केया रा सिर काट ।  
पटक रही खग धर परा, पलक पलक परळाट ॥ 68 ॥

कूद परी चढगी कमध, करी माथ केकाण ।  
मेघाढम्बर डगमग, छिता रयो रिपु छाण ॥ 69 ॥

मचगी दुसमी सेन मळ, हाची हाहाकार ।  
दरसी पीडा दोडता, लिया सूर ललकार ॥ 70 ॥

न्यारु तरफ रिपुवा चमू, तिण मे सूरै ताण ।  
वाय रया इसडै वगत, कर दोनू किरपाण ॥ 71 ॥

मार मार सिर मेलिया, अरिया रा अणपार ।  
सहै हकलौ सूरमी, चार तरफ रा वार ॥ 72 ॥

भाला दूर भगाविया, तलवारा दी तोड ।  
जमदाढा पडगी जमी, छिपै रिपु रग छोड ॥ 73 ॥

मरगा दुसमी भोकळा, पकडै वचिया पाथ ।  
भडौ हाथा जीत रौ, सूर फिरै लै साथ ॥ 74 ॥

आया घर इदवार सू, सजनी थाळ सजाय ।  
आखी भारत अजसै, घर घर सूर वधाय ॥ 75 ॥

ग्रणिया नलवारा अडी, मडिया भालें घाव ।  
जमदाढा रा भेलिया, मा मरोर परभाव ॥ 76 ॥

रोमरोम मे मर रया, गात अनेकू घाव ।  
महन किया पोयण ममभ, दुममी भाला दाव ॥ 77 ॥

म्ह ता भेल्या भोकळा, दुममी रहिया देख ।  
जिरं पढी म्हारी जवर, उठे न पाछी अंक ॥ 78 ॥

दोय जीतिया देस रा, प्रवळ मूर जुध पार ।  
रण छिडिया राजी हुवो, तीजा मे तय्यार ॥ 79 ॥

हन मरदा मरणी हुवें, बरस पचीसैं बीच ।  
देमा दरखत रगत मू, समर विचालैं मीच ॥ 80 ॥

दुसमी री मेनिक दळ, खूब आवियो घीज ।  
सूरा कम हू तौ थका, रटक कटक लें रीज ॥ 81 ॥

सूरा री सना समर, असव गिरद आकास ।  
अधियारी छाया इळा, पखें न रिव परकास ॥ 82 ॥

टप टप घोडा टाप सू, सहलैं घर फण सेण ।  
मारण रिपु मेढी मणा, पखियैं कोप प्रवेस ॥ 83 ॥

मार मार रण भेलिया, माथा खूनी मास ।  
नदी खून पूगी निकट रिपुवा घरा निवास ॥ 84 ॥

सूर अगै लारैं सिवा तिण नारैं त्रिनेण ।  
उटीक करावैं अपछरा, सुग्गा साथ वरेण ॥ 85 ॥

गिर कटियो सूरा तणो, नभ दिस खूनी धार ।  
भानी सिव सिर आपसू, बूढी गगा धार ॥ 86 ॥

- धड मू भ धूजै धरा, मुघ हसवै धर माय ।  
कवन्ध जुध सूरी करै, रिपु छार्त चख गत ॥ 87 ॥
- कवन्ध जुध सूरी करै, भुज दोनू खग माय ।  
दरसण करता देवता, व्योम सुमन वरसाय ॥ 88 ॥
- कवन्ध जुध कीरत कथै, सूरा साथ मवाय ।  
जग विचाळै भू भनी, चारण जोस चढाय ॥ 89 ॥
- मरण तिवार मनावियो, खत्राणी स्सै साथ ।  
जौहर माही जायन, होम हुई मिल हाथ ॥ 90 ॥
- आ जुध गत ही पहल गी, आज गती की ओर ।  
जमदाढा भाला जगा, दिपै राइफल दोर ॥ 91 ॥
- सजै मोरचा सूरमा, रेफल हाथा रेय ।  
अरिया मीनै ऊपरा, दट दट गोली देय ॥ 92 ॥
- लोड करै पल पल लखा, सूरी रेफल साथ ।  
रिपु मोरचै राखिया, हिलना सकिया हाथ ॥ 93 ॥
- धुवौ उठ थळवट धरा, रै दिन रा वही रण ।  
कारतूस किलकार सू, गूज मचाई गेण ॥ 94 ॥
- सूरी पटण टक सथ, धावा वोलण धाय ।  
वमकै सू अरि धूजता, मरै मोरचा माय ॥ 95 ॥
- उडती देख आकास म, दुसमी जवायु यान ।  
सूरी गोळी साजियो, पडै जाज धर आन ॥ 96 ॥
- सूरी गोळा साजनै, धरा मचाई वाक ।  
मीसम ठडै मायनै, गरम हुवौ गेणाक ॥ 97 ॥

गोळा सूर्गे गेरिया, बैठ प्रमाणा माय ।  
प्रगसाला जिम वग्मवै, पग्गै दुसमी पाय ॥ 98 ॥

छोट भगं रिपु निज छिता, लडिया भूठा लाड ।  
मूर रिपुवा सरहद मे, भडो दीनी गाड ॥ 99 ॥

रिच्छय माचा देम रा, मूरा दो मतकार ।  
ववियौ लिछमण कीरती, आखी बुय अनुसार ॥ 100 ॥

## वीर - वखान

गीत अरथ मनमोद

वरमवीर सतवीर धिन, सूरवीर घण सान ।

दानवीर महिमा दुनी, वीर करम वाखान ॥

वाखान करम वीर रा सुकवी वणै, दानवीर री जग क्रीत दाखै ।

सूरवीर नै जाणवै ससार स्सै, भली सतवीर न लोक भाखै ॥

वरमवीर री महिमा अणूती धरा, रजा ना पाप री वदै राखै ।

आछा कवीजै ठोड मव आपरी, ढान होय जगत री लाज ढाकै ॥१॥

वरम दसरथ निभाय धर, पाछै तजिया प्राण ।

जारे राम नीति अरम, पग पग बना पयाण ॥

पयाण बना पग पग कीधा वरापत,

वरस चवदै वन भाय बीता ।

पितु अग्या रख भीमम ध्रुम पाळियो,

मरीर प्रजाळियो अगन सीता ॥

हाड निज काटवै दधीची धरम हित,

घणी ध्रम दाखियो किसन गीता ।

न्याय हित भाम निज काटियो सिवि नृप,

जुधिस्ठर नृप सत समर जीता ॥२॥

वरण दानवत कारण, रै पुळकत जग रोम ।

पोहर तिणरै नाम पर, वाजण लागी भोम ॥

भोम लगी वाजण पोहर वरण भळ,

अचळ चोळ ओढ दान अगा ।

पावै नृप भोम विज्रमारिव दानपय,  
 मतरै हर्मिनन्द हुवा सगौ ॥  
 करमवीर विसन अरजुन री कीरती,  
 राजवी लाव मे घणा रगा ।  
 अभिमन्यु भीमज सूरवीर ओपिया,  
 दिखायो पराक्रम अरि दगा ॥३॥

जीवत जावै ना जमी, रै थावै कुळ रीत ।  
 मर जाव पावै मुगत, पूरी ऽर सू प्रीत ॥  
 प्रीत धर सू पूरी जग वीरा पर्यं,  
 लखै रिपु ऊपर वाप लता ।  
 सू छा मरोडवै रोडवै अरि मग  
 छवी सू अरि दळ पाय छेता ॥  
 जीव सू मोह ना ज्यारौ जग जाणवै,  
 देखा कदै न ऽन जीव देता ।  
 मरण जा निरवळा दुरवळा साजवै,  
 भाजवै छळा रा कठ वेता ॥४॥

गिरी कन्दरा घूमिया, सहिया घण सताप ।  
 अमर हुवा वर ऊपरै, पोरग राण प्रताप ।  
 प्रताप राण पारस वीर गम्भीर प्रभ,  
 मुगला रा चाव घण दाव मटै ।  
 हिन्दवाण रिब लाज राखी हिन्द री,  
 बडाळ आसण स्वावीन बैठ ॥  
 जगवीर नाम ल धारौ भू भव,  
 नाम अर काम छिव छळा नट ।  
 तमवीर तुव दख धारलै तेज तप,  
 हुवै नर वीरता दाह हट ॥५॥

दळ मुगला रौ देखने, तिण पर पडता तूट ।  
छापामार पद्धति छपी, रचै सिवाजी रुठ ॥

रुठ सिवाजी रच रण मुगल राज स,  
भय हियै ओरगजेब भारी ।  
दखियो हार मुख घण बार मुगल दळ,  
कळा रण हुता ना लगी कारी ॥  
मराठा राजवै छाजवै हिन्दमभ,  
धीरता वीगता छनधारी ।

मिवराज मिरताज मजग स्वाधीनता,  
माजनी हिन्द नै प्रभा सारी ॥6॥

अमर सिंघ राठीड डळ, समरवीर सिरमाड ।  
नृप भागी नागाण रौ, रिपु दळ दीना रोड ॥

रोड दीना रिपु दळ अमरै राजवी,  
बहादुर छाजवै रणा भीनौ ।  
किले ऊपरा तू अस्व हूत कूदियो,  
दाव ना कदै रिपु लागण दीनौ ॥  
कटारी भाड दी यम्ब मे वीरकर,  
किलमा ऊपर वार कीनी ।

जग गाव गीता वीरती जेणरी,  
लोक मे सुजस रस वीर लीनी ॥7॥

मुगल हुकम ना मानियो, जस जोग्राण जास ।  
कमवज सुतन आसवरण, दिपियो दुरगादास ॥

दुरगादाम दिपिया मड राठीड दळ,  
जिमे स्वाधीनता प्रीत जागी ।  
वीरता जावती थामली तूभ वर,  
खत धनळ आपियो वीर खागी ॥



नाक राखी तुही नोकूटी नाथ री,  
 त्यागियो राज री नेह त्यागी ।  
 वीरा मिरोमणी निष्ठा बाहर,  
 लगन मत वरम री परम लागी ॥८॥

नरा पोरम नमात्रियो, हुई धरा पर हृथ ।  
 नारी अगवी नोसरै, पुन दिखावण पथ ॥

पथ दिखावण पुन ध्यान वारै प्रथम,  
 लिछमी वाई खग हाथ लीधी ।  
 गाजव राणी खळा गजण गरव,  
 दळ भजण फिरगा दम दीधी ॥  
 विरागणा रुप स्वाधीनता बाहर,  
 पराधीनता नह धूट पीधी ।  
 वारिया प्राण विन वतन र बासत,  
 काज रण सामतै अमर कीधी ॥९॥

चंदर सखर चेतणा, सजग हुवी स्वाधीन ।  
 भगत फिरग विरोध मे, वारज मारा कीन ॥

कौन सारा वारज जारज फिरग कळ,  
 चेतणा वरै परताप चाळी ।  
 लोरड फिरग पर निसाणी लेयन,  
 गरिया चादनी चाक गोळी ।  
 हामियो सरवस्व केमरी देस हित,  
 मात सुत दख ना हुवी मोळी ।  
 इता वीर अमर रहसो इतियास मे,  
 लेयने नाम या सीस लोळी ॥१०॥

## प्रताप - प्रभा

गीत चित इलो

मुतन उदय हिन्दवाण सूरज, हिन्दवा हिय हार ।  
प्रिख्यात हुवै प्रताप वसुधा, धरम खत्री धार ॥  
तो बलिहार जी बलिहार, हेतू हिन्द री बनिहार ॥ 1 ॥

आधीन राजा मयै अकबर, बन्द हुयगा बोल ।  
स्वाधीनता परताप सेवी, खिर्ब हिरदौ खोल ॥  
तो अणमोल जी अणमोल, अधिपा मायनै अणमोल ॥ 2 ॥

गिजव मय सू नृपत रीभत, खीज पडगी खाड ।  
हा हा मिलै अकबर हताई, जोधवा घण जाड ॥  
तो दी गाड जी दी गाड, गरिमा हिन्द री दी गाड ॥ 3 ॥

ममती लहै मय बैठ महला, गरव करत गुलाम ।  
भरमायगा अकबर भरोसै, कर विया बेकाम ॥  
तो अठजाम जी अठजाम, आठस छावियो अठजाम ॥ 4 ॥

सजधजी सेना लगी मम्भण, अकबरी आदेस ।  
कर कूच दळ मेवाड कानी, प्रबळ वेग प्रवेस ॥  
तो फण सेमजी फण सेस, महलण लागवी फणसेम ॥ 5 ॥

भिड गयी राण प्रताप भाली, अहर छायो अध ।  
मच गई खळबळ मेन मुगला, मान मेना मद ॥  
तो पावन्द जी पावन्द, पूरी हार रै पावन्द ॥ 6 ॥

केकाण चेतक तणी कीरत, जग माथी जोर ।  
रिच्छा धणी प्रताप राखी, इसी अस्व न ओर ॥  
तो तपतोर जी तप तोर, तारिफ तुरगा तप तोर ॥ 7 ॥

भमिया गिरी प्रताप भागी, रूप बागी रग ।  
स्वाधीनता हित कस्ट महिया, देख दुसमण दग ॥  
ती तळ नग जी तळ तग, तुरका कीधिया तळ तग ॥ 8 ॥

मोता जिवण सेजा मुमन री, सुवै धरती सेज ।  
घास री रोटी खाय गिरी मे, तोड बढियौ तेज ॥  
ता गुम्मेज जी गुम्मेज, गौरव देस री गुम्मेज ॥ 9 ॥

रहसी अमर प्रताप राणा, सूरवा सिर मोड ।  
स्वाधीनता परतीक साचौ, चाव गढ चित्तोड ॥  
तो वेजोड जी वेजोड, बीरा छाप दी वेजोड ॥ 10 ॥

## कायर - काट,

हूहा

जीवै छानै जगत मे, गरळा पीवै घूट ।  
पराधीनता पाविया, कायर खावै कूट ॥ 1 ॥

हसै लोग हताइया, जद कद कायर जोय ।  
कायर विरती कारणै, करै पूछ ना कोय ॥ 2 ॥

जएणी दूध लजायदै, लाजै चुडल लाज ।  
कलव लगै कुटम्ब रै, कायर जीवा काज ॥ 3 ॥

भुक् जावै जावै जमी, अर सहव अन्याय ।  
कायरता रै कारणै, घरणी लाज गमाय ॥ 4 ॥

घात न माची बोलवै, भट डर होवै भेर ।  
भीरू कायर भावना, फिरती रहवै फेर ॥ 5 ॥

डोळा मिनकी सू डरै, अडै अघार ओर ।  
भडगा ऊटा भवन मे, कायर विरती कोर ॥ 6 ॥

सुणियो तलनारा सबद, रयो काळजी काप ।  
वेगी धूवै वारणै, ऊडी भडिया आप ॥ 7 ॥

मारो खोसी मोकळा, जोर ओर जमीन ।  
कायर विरती कारणै, देखौ भूडा दीन ॥ 8 ॥

विरदै ना विरदाइया, हलकारघा ना होय ।  
भीरू कायर भावना, कारी लगै न कोय ॥ 9 ॥

जाणै वत्ती जीवणी, मरणी जाणै मेख ।  
भगडा मे कायर जिवा, दूरा न्हासै देख ॥ 10 ॥

हाकी मुणिया हापवै, धडकी मुणिया धाय ।  
नाव लजावै नाह री, कायर जीव कहाय ॥ 11 ॥

ममर छोड भडिया मदन, जीवण कायर जीव ।  
मूडो दरमावी मती, परणी कहवै पीव ॥ 12 ॥

भीरु वणिया वालमा, कुळ मे थाई काण ।  
कता याँ कारणै, लाजै परणी लाण ॥ 13 ॥

कटक छोड आया किया, वालम जीव वचार ।  
मरणा सू डरणा मिनख, भूमि वणिया मार ॥ 14 ॥

वाता मे खाता बळै, गाथा भूठी गाय ।  
भीड पडै भट भागवै, कायर भीत कहाय ॥ 15 ॥

पूगा घर भटकै परा, रै डरता जुध गड ।  
कायर कता हित किया, कामण वन्द किवाड ॥ 16 ॥

वालम भाखै वारणै, कामण खोल किवाड ।  
औ मुख देखू ना अब, तणी दीनो ताड ॥ 17 ॥

वालम जीव वचाय न, अँ दोडघा घर आय ।  
कापुरमा री कामणी, खपै कटोरी खाय ॥ 18 ॥

माभोमा किम भूलगा, इसडा घर री ओळ ।  
कापुरमा रै कुज मे, मन मतिया रै मोळ ॥ 19 ॥

मासू जायी म्याळकी, भडण घुसाळी बीच ।  
सतिया हुन्दा सिन्धु मे, वगियो वादी बीच ॥ 20 ॥

जिएधर बायर जलमियो, दिन खोटा उण द्वार ।

जमी धरम अर जोर बा, अमूभैज डवसार ॥ 21 ॥

मोटी करियो मावडो, पाळ पोस परिवार ।

कायर आज कुटुम्ब रै, कोजी काटी कार ॥ 22 ॥

धिव धिव मवै धिक्कारवै, राजा हो या रक् ।

कायर मिनखा कारणै, कुळ मे लगै कळक ॥ 23 ॥

उत्पादन घटव अधिक, मेवा ना मतकार ।

कायर जनता नारणै, देस गुलामी द्वार ॥ 24 ॥

पतन दस री व्ह परी, जतन हुवै ना जार ।

कायर पुरमा कारणै, दुममी हाथा डोर ॥ 25 ॥

वीर करै हिव सू वरण, मान मोत वरमाळ ।

जीव लुकाता जीविया, कायर डर उर काळ ॥ 26 ॥

वाज रण री भेरिया, करै न ऊभा केस ।

वद न आय कायरा, ममभ सूर सदेस ॥ 27 ॥

गरणावै घण गोळिया, लागी सीवा लाय ।

घर मे ओडर गूदडा, कायर मूड लुकाय ॥ 28 ॥

विपत देस मायै वणी, सतरु गाज सीव ।

ठडा पडिया ठीकरा, कायर अवर क्लीव ॥ 29 ॥

जिए धरती घण जलमिया, कायर अवर क्लीव ।

पराधीनता देस पर, नेखम नागी नीव ॥ 30 ॥

गरिमा मान घटावियो, देस गुलामी द्वार ।

कायर री करतूत सू, होव सेना हार ॥ 31 ॥

कायर वद करतूतिया, दर दर जीवण दोख ।

लगै दाग इहलोक मे, पूछ नही परलोक ॥ 32 ॥

## सिंगार - सवैया

केस भुजग सुरग भयो किरि भाळ टिकी रिव ऊगत राजें ।  
खजण लोयण वक भुवा खुल नाव छवी नथ वेहद छाजें ॥  
पोयण फूल सी हाठ पराक्रम बीजळ दत सुकामण वाजें ।  
जोवत जोवत नेण थकें जग बोयल कठ सुहेट विराजें ॥ 1 ॥

दोय सुमेर दिखें कुच देखत चद मुखा दिस जाय रिया ह ।  
पाछाल भा ह्य छोण कटी प्रभ रेंकर मेहन्दी रचायरिया है ॥  
आगळ नटख चमक नगा अग नाभिय रुप त्रिवेणी लिया है ।  
जघ प्रभा कदली जिम जावत होत हजार हुल्लास हिया है ॥ 2 ॥

राखडि वेणि महेलडि भावक सेथऊ टीलऊ चादल वाळी ।  
चाकण सोस फुला फुलि भोरल वेसर नक्क अगट्ट रूपाळी ॥  
काटऊ फूल नखा घडि बूडळ बीटल अंकुट चीड उजाळी ।  
ताडक नागळ मादलिया मुद्र वावण भाभर नार प्रभाळी ॥ 3 ॥

हास हरादिक साकळि वाळिय कायूव चुडली पीव चितारें ।  
काकणि पू चिय ह हथ वाळड अरगागिनि य मेखला धारें ॥  
नेवर बीछिया घूघरि घूघरा श्रेघडि पन्नडि नार तिहार ।  
दूलडि पाडळि कावि प्रभाजत माटसी साळें सिंगार सवारें ॥ 4 ॥

वायल घाट पिताम्बर चोलऊ पीत कुसुमल जूड कसीदा ।  
लाल रता ममरी कमखा कसवी पटोळी तन जारण कीधा ॥  
माडी पटोळ सुहावणी सुन्दर केसर चदण नेप सुवीधा ।  
चूर अवीर कपूर गुलालीय तेल सुगधित वेणीय दीधा ॥ 5 ॥

दख मुखा प्रभ लाज रयी ससि दत छरी लख कामण दारी ।  
लोयण आभ ते पोयण लाजत केम प्रभा घन फागत फोरी ॥

जब प्रभा कदली भुक जावत केहर खीण कटिप्रभ चारी ।  
होत सुगधित गेह हमे गति मस्त मराळ मी चालत गोरी ॥ 6 ॥

चद रवी सिर न्याळ चढ्यो कुण मार बटार रयी है सुगाकै ।  
वारण दोय वनूरख किया कुण मार रयी दव और मृगाकै ॥  
लाल घटा खुल जाय लग्गी भच बीज चमक पडै धर आकै ।  
दोय सुमेर दिखै छिति दोडत दै सरणी जिमि ऊपर दाखै ॥ 7 ॥

सुन्दर गात सुबात अखै अवदात हियै दिनरात मदाई ।  
साथ रहै दुख सुख मे साथण चात मना छिन्न अन्तर छाई ॥  
प्रात उठै भट हाथ घटी पर वातहि वात मे ठाव भराई ।  
सात सुखी घर कत सदा भळ ग्राथ रुपी घर कामण आई ॥ 8 ॥

रीत कुळा मरजादीय राखण भाखण बोल मधू वधु भारी ।  
साळ कळा परवीण मुपातर बीनणी मे कछु नायज खामी ॥  
जाणणहार मनेहिय सागर होत उजागर कीरत नामी ।  
देखत होत हुताम हिय दुति थाय हथा प्रभ साजन यामी ॥ 9 ॥

जेव समै सजनी घर अन्दर सोय रही घण केस सवार ।  
आय पती ढिग वंसत आसण लागत हाथ लखै सिर नारै ॥  
जाणत व्याळ पिया भभकै सजनी कू बचाण उपाय विचारै ।  
हाथ मयातुर माग गया पिव जागत नार अचूम्व निहारै ॥ 10 ॥

मेडि चढी घण बेस सवारण भाक हवा मभ यू लहराई ।  
रूप घटा जिम पार रिभावत मोर मना विरखा जिम आई ॥  
बावड्यो पिव वेण उचारत स्वातिय चाह मना हरसाई ॥ 11 ॥

गावत देख पति हित आदर कामण यू सिणगार गियो ह ।  
भाळ मभ चमकै विदिया जग जाण लियो रिज उगगियो है ॥  
जाण घणा जग हाथ जुहाग्त भिलेवणै अक दियो ह ।  
छाय प्रभा पखेर घर छोडत मोरिय मोर भू मध्य मयो है ॥ 12 ॥



अेक ममै सजनी सज सावण घूम रही मभ वाग बगौचै ।  
 वोल उचारत कोयल व्याकुल आज रमै कुण कोयल नीचै ॥  
 नाक छत्री सुवटौ लख लाजत भा नयणा मिरगा चख मीजै ।  
 कोर करै कदली लख जघण सौरभ सू धरती पद सीच ॥ 13 ॥

आस लखी पिव री घर आवण भाक रही चढ नार भरोकै ।  
 गोर घटा जिम ह गरिमा तन आवत दीख गया पिव मोकै ॥  
 होत हुलास यु होठ खुलै हस बीजळ दत चमकत गोघै ।  
 कासिय ठाव धरै घर भीतर लाग रयो डर यू घण लोकै ॥ 14 ॥

कामण कुच गुम्बजिय मदिर भाव पयोधर नह भरै है ।  
 ताम्र कलस्स जिमि प्रभ ऊपर हाजर पाय विकार हरै है ॥  
 मूरत है तिए मे पिव री अर साभ सवार जुहार करै है ।  
 सीतळता बगसै नन माजन जोवन मे रसहूत भुरै ह ॥ 15 ॥

पाय अमावस आय पिया घर सोळह नार सिगार सजायो ।  
 देह दमकत दामण ज्यू गरिमा मुख कामण चद मवायो ॥  
 लोक अचू व कर हिय मे किम आज अमावस री समि आयो ।  
 देख कुमोदनी सागर मे खुस हाय घणौ नन यू विकसायो ॥ 16 ॥

नीर मराण गई तट मागर नार नवेल सिगार नवीना ।  
 द्याळ करी ससि केहर खजण सारस कायल हस अरीना ॥  
 मागर हेक अचूम्व भयो मन अकल साथ किया सब कीना ।  
 हेकण साथ हुवा तन हेकट नीर भरै घघरी जळ पीना ॥ 17 ॥

सागर म कर जोवत सुन्दर पोयण फूल प्रभा रद पाई ।  
 नाळ कमळूळ सुहाय निहारिये पखुडिया हथेली प्रभ छाई ॥  
 नाळ उठी उलटी नभ ऊपर पखुडिया किम हेट उपाई ।  
 पोयण रै समवड्ड दमा मजनी कर जोवत आज जमाई ॥ 18 ॥

माग भरी मजनी मिर ऊपर जाणव बीज चमकत जारी ।  
 भोर दुपार मुमाभ न रात म जेवल मी अरदात तिहारी ॥

बीज पडै घर आगण बीजज पास पडौम रु जाय पछारी ।  
 व्है चख चू द पिया चख देखत व्यान दियो मिर घू घट धारी ॥ 19 ॥

हार गळे वधु नेहद छाजत ओर कटी कणदोर अपाग ।  
 साडी हरि तन द्याजत सुन्दर रूप हरी धरती जिम धारा ॥  
 चीर चमकत गोठ किनारियै रात जिया नभ गजत तारा ।  
 रत्नमणी चमकै तन ऊपर रात भक्ती घर नाय अधारा ॥ 20 ॥

साजन साभ मवेर सुभावत सीर मरीर सुदात महारौ ।  
 पूरण प्रेम पगै परणी जद पासहि पाम रहै पिव प्यारौ ॥  
 दूर दराज गयो दिल दाभक्त दोडहि दोड टरावन द्वारौ ।  
 नए छत्री नित साजन नारिय नाह करौ नह नार ते न्यारौ ॥ 21 ॥

केस घना सजनी घण कोरत व्यालिम रूप इसी नह भावै ।  
 व्याळ भखै खग देह जिनावर ओर मना डर लोग उपावै ॥  
 जेर वसै मुख व्याळ घणी खुद सेव रिक्केव हि देखत खावै ।  
 मीतल ओर सुगति माथग कामण वेम आणद करावै ॥ 22 ॥

माग दिवी उपमा कव दामण दामण रूप टरावत दोळै ।  
 बीज पडै धरमाथ चमकत रै बडकै धन जान कू रोळै ॥  
 प्रेम करै तिण ते भट पूगत टूट पडै मिर माथ हि टोळै ।  
 आणद दायक भाग सुकामण भेटिया अग चडात हिलोळै ॥ 23 ॥

रूप रथी उपमा कव देवत नारिय भाळ लगी नव टीकी ।  
 सूर तपै धर देवन ऊमण तावड तेजिय लागत तीखी ॥  
 भाक मवै कुरण सामिय सूरज जोवत अख लगै घग फीरी ।  
 भाव परी बिदिया परणी दत सागर नेह उदात मरीकी ॥ 24 ॥

नए छत्री दिय खजण नाहन खजण कीट पतग भखै है ।  
 रूप कटार दियो चख नाहक जीय मरात कटार भखै है ॥

कायर ह उपमा हिरणी मम पोयण रूप न साय पय है ।  
कामण नेग समी नहँ कोडा छोट माना छिय हत छकै है ॥ 25 ॥

चादणी गत सजोग पिया सुख जागत जागत वात जमाई ।  
नग लगै टक् टक्क निहारत जोवन गारत रात न जाई ॥  
मागर नेह मभा सजनी पिव सापडवै दिल खोल सदाई ।  
नीर पिया मजनी मछली तन नार अगार पिया प्रभ पाई ॥ 26 ॥

रूप वरा सम कामण धारत मेह समी पिव तोय प्रखाणू ।  
आय परी वरमै वरमा घर ही हरियाळ हियो हरमाणू ॥  
मेह विना धरती कह कीमत साच लखावत ज्यू समसाणू ।  
मेळ घणी धरती अर मेह र जोग तिया मजनी पिव जाणू ॥ 27 ॥

चन्द्र पिया घण रूप चमकत कामण रूप कहात चकोरी ।  
देख ससी हृखै हिय पछिय राह अधेरिय माय रु दोरी ॥  
चद दिखै न न मे नहँ आयर कम खिल्लत कुमोदन कोरी ।  
देत रहौ दरसण नित प्रीतम जीवण प्राण करी चित चोरी ॥ 28 ॥

जेकहि जीव वपु दव दीखत साजन की सजनी चित चोरी ।  
स्वातिय चाह करै जिम चातक तेम करै मजनी पिव तोरी ॥  
डू गर मोर विना नह सोहत पीव विना दिल कामण दोरी ।  
बीज बिहूण घटा प्रभ नाहक नार भिगार पिया विन फोरी ॥ 29 ॥

चद विना निम जेम लखावत नीर बिहूण लगै जिम नाडी ।  
फूल विना गत वेलडिया जिम आख बिहूण प्रभामुख वाडी ॥  
छात विना घर माय लगै जिम म्यान बिहूण वटागिय वाडी ।  
तेम लगै मजनी विन माजन गोण हुई गरिमा तन घाडी ॥ 30 ॥

नीद निवार उठी सजनी नव बेस घटा बिछरी मुख सामी ।  
नेण रया अळमाय निमा सम फेलत भाळ विंदी प्रभ नामी ॥

लाल कपोल निमान भये छिय मोर तियो दरमावत कामी ।  
 मीतल नार लगे तन सारिय जेम मरोवर अधड गामी ॥ 31 ॥

सापड मेडि चढी मजनी भट सोम उढारत मद्य मनाता ।  
 जेम भुजग चवै मुगता टप नेण गिने जिम पोयण प्राता ॥  
 बीजल मे जल द भरै जिम गोर करी दिपती तिय गाता ।  
 चार प्रभा ते भुकी नर कामण वेग करै हिव मे अवदाता ॥ 32 ॥

गालम छाये गयी मजनी वष आगण आय लही जगडाई ।  
 जेम घटा लहराय रही नभ चद छत्री तिय आय लुकाई ॥  
 पोयण फूल हिलै लहरा ढिग जेम घटा मिहरा गल छाई ।  
 एक पडी कटि केहर रे जिम मावर पर लगी दरमाई ॥ 33 ॥

चदण लेप करै तन कामण चदण पेड मी लागत प्यारी ।  
 जेम भुजग जियां मिर डोलत मोरभ मस्त हुवा इकसारी ॥  
 केहर कीर करी अर खजण भाव मगल मिलै थिग भारी ।  
 लेत सुगंध पिया मन रीझत बारभ प्रार हुवै बलिहारी ॥ 34 ॥

कोयल खोज करै गल कामण कारण तेण पडी रग काळी ।  
 लोयण भा हिरणीज रिसायत डर डर भाग रही दर पाळी ॥  
 सावळ रूप करी इण कारण मस्त गति तिय ली मतवाळी ।  
 छोण कटि तिय केहर छोजत कोप लियो परगत्त हिमाली ॥ 35 ॥

जघ प्रभा तिय जोवत जोवत रीस किया कदली द्रम काटै ।  
 कामण तेज परा दुख दामण आवन जावन यू करडाटै ॥  
 ग्राम पयोधर देख अमूभत होत सुमेर गिरी रग हाटै ।  
 होठ प्रभा कुसुमावली कोपत ते कज धारन कोमल काटै ॥ 36 ॥

मीतलता हिम माय विराजत नेज जिया रिव माय प्रकासै ।  
 नीर निवास करै घन काठल तेत भक्ता चिकणाहट वासै ॥

वाम सुगन्धित फूल मभा जिम नाम ज पावन गग निवास ।  
तेम वसै मजनी मन माजन लेवत नाम तिहा हर मास ॥ 37 ॥

नीर नखें मछळी घण सोभत जोत ठिकाण पतंग प्रकासै ।  
दामण आम घटा मभ दीखत मान मरोवर हस हुलासै ॥  
चंद दिख खुम होत चकोरनी वेल कुमोदनी जेम विकासै ।  
तेम जचै सजनी ढिग साजन वारम वार आणद विलासै ॥ 38 ॥

हात कमी सरदी तन हेत ज चेत वसत घणी अत्र चेतो ।  
माजन जीव जडी मजनी मुख छोट परा नह देवत छेती ॥  
गौर प्रमाण घणी गिणगोरिय नेह अपार बढावत नेती ।  
देव विजोग मजोग दयाकर लाभ ससारिय कामण लेती ॥ 39 ॥

छात परा तिय ढोलियो ढालत मास वेमाख वधु तप व्यापै ।  
रात अमावस साजन राजन थाप आणद रु पूनम थापै ॥  
चादणी रात हुलास चढे चिन मोह अयाग मरोवर मार्पै ।  
कामग भाग बडा मुख कारीय आज सजोगिय राग अलापै ॥ 40 ॥

जेठ बढी गरमास घणी जद पोर आठू तन होत पसीनी ।  
पाम पयोधर ताप न व्यापन देख ममी मुख सम्पत दीनी ॥  
मीतळ केस घटा मजनी सम चदण सोरभ है तन भीनी ।  
मीनळना मजनी तन माजन नेह उजागर नित नवीनी ॥ 41 ॥

रोयण ताप अमाप रयी रत दीह द्रिया वसु हेरत दोडै ।  
लूह नपट्ट भपट्ट रही जग जावत बाहर नू मुख मोडै ॥  
अघड बाज रयी मिरगात चंद प्रभा घण तेज न चोडै ।  
होत व्यतीत ममै सुख सायत जा घर पीव जोडायत जोडै ॥ 42 ॥

मास अमाद रही घण उमस तावड तेज तना तडफायो ।  
तावडयो पिव रोल उड नभ व्है सजनी पिव साय सवायो ॥

नाय डर पिव ह नजदीक ज दामण क्यू करडाट दिखायो ।  
मूक पिया मुद नेय लही जय देर घरा पिव नोगोट आयो ॥ 43 ॥

साजन वास विलास रह मुख मायण मान मुवास सुरगो ।  
चादणी रात चमकत चदय चितव चचळ ग चित चगो ॥  
प्रेम प्रतीक पिया पुळ पोखत पास जिया परकाम पतगा ।  
बीजळ रात मुहात हिये विच जानम आवत म्मे दुख भगा ॥ 44 ॥

काठळ काळिय रूप किया वस आज नभी उतराद अनोखी ।  
बीजळ री मळगाट घनामळ चाल लगै सिहरा गळ चोखी ॥  
पूरण आन धरा पर पावत रामत गावड इन्दर राकी ।  
सावण 'लक्ष्मण' आभ मवै मुख पूर प्रभावित कामण पोखी ॥ 45 ॥

मेह घरा वरसै मुसळार मेडिय आगण छाट न मावै ।  
प्रेम बढे अदकाज नखै पिव आणद जोवन सावण आवै ॥  
बीजळ री करडाट मुणै बधु जोवत पीव गळै लग ज्यावै ।  
'लक्ष्मण' सावण लोख नहै नभ प्रेम पयोपर पार न पाव ॥ 46 ॥

भोज रही धर आ वरमात र धीर बधु पिव सग म धीजै ।  
ताळ सरोवर नीर भर तर दादुर भा पुरजोर सुणीज ॥  
कोयल मोन किलोळत कामण दामण मौ वप आज दुणीज ।  
साजन राजन ह मजनी मुख 'लक्ष्मण' सावण उह न लीजै ॥ 47 ॥

है हरियाळ उछाळ बहै जळ ताळ भर्या ठिग पाळज ताड ।  
देह छुया बिजळी तन दाडत सोडमो सोळे मिगार सजाई ॥  
होत प्रवेस सनव हितू हिव माचत जोवन धूम मचाई ।  
जीव चराचर आज सुखी जग सावण साथ रखाव मदाई ॥ 48 ॥

भूल गई तन व्याधिय कामण सावण साथ पिया मुखकारी ।  
भूख लगै न लगै तिस भूल न नाय थक प्रिय आज निहारी ॥

काण करै सिणगार कलेवर चाक लगै जग रै अखियारी ।  
सावण आम पिया सुख वामिय पाम रह सजनी नितप्यारी ॥ 49 ॥

सावण तीज तिया सजियो तन भा सिणगार सजायो भारी ।  
लेरियो सावण री खुद लेवत अग उढेलत नेह अपारी ॥  
जोतिय लाभ लियो जग जोवन उन्न सनेव की कीध हजारी ।  
सावण लक्ष्मण छाव रयो सब प्रोढिय नार नवेल निहारी ॥ 50 ॥

भादव मास घटा घनघारज मेह अपार अबै भड लागी ।  
है हरियाळ उछाळ धरामभ जोवन चाव घरोघर जागी ॥  
सेग मरोवर ताळ भरै जळ आज हुई विपदा सह आवी ।  
वादळ माय छिपै समि पूरण भाळ रही वधु साजन भागी ॥ 51 ॥

तावट तेज आसोज तपै तन वीरज छोड दियादिस धावै ।  
पावत प्रेम अवेर निसा प्रिय जोवन मेर पे भेर हुज्यावै ॥  
साख पकै नित प्रेम पकै सुख न्याखत जीवण आणद लावै ।  
चादणी रात मे चद प्रभा चित कामण साजन कोड करावै ॥ 52 ॥

वातिक मास किलोळ करै कुळ कीरत कामण साजन केरी ।  
ठड बढी घर भीतर सावत भीठा मतीर र वेर ककेरी ॥  
दामण दह दिवाळी सु दीपत आम उमेद रखात अछेरी ।  
जोन जळै दिन रातिय जोवन साथ रहै प्रिय साभ सवरी ॥ 53 ॥

मिगमरी मास सरह बढावत जावन नह अपार जगायी ।  
तेज अवे सजनी तन साजन आरिय भीतर ढोलियो आयी ॥  
मीमम जोवन री ज अभोनक केड जणा डम रत्न कवायो ।  
चद्रमुखी दरम मुख साजन एक नही मव लाभ उठायो ॥ 54 ॥

जान बढ घग जावन मे जुत माज बढावत पास महीना ।  
ठड मभा पिय टाठरगी तन तेज नवै मजनी तन दीनी ॥

नार पड़ी मरदी बचवा हित लोग उपाव लिया तब लीना ।  
रक्तिय चाप घटे तन री रत भा मग्दी सुख जोवन भीनी ॥ 55 ॥

माध पड़ी मरदी गत मयर अन्तर वी अनुराग उपायो ।  
जोवन री कम लोय लियो जुत ओर पताभुड मौमम आयो ॥  
पड छवी अजहू न पावत साजन कामण माय सदायो ।  
आय गयो क्तराज वसन सु जार अब घण जोवन खाया ॥ 56 ॥

कू पळ फूट रही तन पेडिय आग बगीचाय कोयल बाल ।  
फेन रयी अनुराग मनाफळ डील लिया रम जोवन ठोल ॥  
दूर दर्राज पिया घर दोडत प्रम बिवाडिय आकर खोल ।  
आभ बढी घर सुन्दर आखिय ते जिय प्रम प्रोघर तोल ॥ 57 ॥

पाय वसत तगी तिय पाचम सारदा मात कू माय मनाव ।  
देय मुमत्त मुगत्त दयाकर छोळ मना रख कीरत छाव ॥  
पीत पिताम्बर वम लियो बधु गीत घणा सुरमत्तिय गाव ।  
माय रखी मजनी अर माजन चाह नली हिक कामण चाव ॥ 58 ॥

फागण माम वसत फळोफळ आय पकाण नजीक उनाळी ।  
तेज हवा मभ रेत उड जिम साजन नार गुलान उछाळी ॥  
डोल वज अर गेरिया नाचत नार हुई प्राढा नखराळी ।  
जोवन फागण वाह लियो जग राचत नाचत प्रेम रुपाली ॥ 59 ॥

आळग कागज आय गयी अर भा वर फागण फेलत मारी ।  
नार सिंगार नवीन सज नित दाराम छोडण अथ दीदारी ॥  
उत्तर देन अजु नइ आवत फागण मास लिया अधिनारी ।  
लक्ष्मण फागण भोज लखी प्रिय बानम फागणरी न बिचारी ॥ 60 ॥

जायण हत बियो पिव प्रातह ट डर नावरी नाय ढटेगी ।  
आर सखी मुख साजन सगत मोय विजोग मे मान घटेगी ॥





फूल रया तर ओर नताफळ सूक रयी तन मोय विमगी ।  
कोयन बोल लगै कटु बानज रे । दिन साजन जीवन रेसी ॥ 67 ॥

ढोल बजै तन काम सजै पिव नाय घरा मन मोय मरेगी ।  
नाचन गाव गवाड विचै घण गेरियै डडिय मद्ध घुरेगी ॥  
ओर सहेनिया है पिव मगत मद्ध मनेच भो वान पडेगी ।  
जेम दना दुखदाई विजोगण बारम बारहि जीव बढेगी ॥ 68 ॥

चदिय चादनी मद लखै चित फागण फद मतावत फेर ।  
रेण जगै चख नोद न आवत माय पडै दय रूपिय मेर ॥  
नेण नहै जलधार निमा दिन आलाय बीर मू केम अवर ।  
हुव रही मू विजोगिय सागर हाय । अवै कित साजन हेर ॥ 69 ॥

हस्त बसत रही तन बाळन मालन लूह डमी हिव माई ।  
नीर छुया तन पे छम बोलत जाण जगै तन प्रीत सबाई ॥  
नार घणा निसवाराय नाखत जीवण आज हुबौ दुखदाई ।  
गोट हुवै हिव भीतर दाभत छाव रही घर माथ धु चाई ॥ 70 ॥

चेत मभा हिवडी घण चेतत नेह मरोवर लेत उफाणी ।  
भूष लगै न भखै मुण भोजन होय रयी मन मोय हिराणी ॥  
भूलत वाज फिर घर भीतर जेम फिरै बेल जोतत घाणौ ।  
आवण आस रखू पिव री उर भूल गया पिव तो घर आणौ ॥ 71 ॥

रास रमै मुखवास जमै रम भाग बडा मधु मास मभारी ।  
गेह चणा सरसू पकिया अन तेम पकै पिव मगत प्यारी ॥  
पीव विना तन मा इम दाभत दाभत माख दखै जिम मारी ।  
रूप निखार मिटै विन माजन वारि विना मछनी जिम हारी ॥ 72 ॥

गोर दुखी अठपौर घरा घण बिलख रही गिणगोर तिवारा ।  
यालम तीज चुकाय दई जिम पोण कढाय दी आडिय वारा ॥

पीवहि पीव मे जीव रह्यो पर श्री प्रिन पीव वे नाय खटगा ।  
पी परभात फटे न फटे परण जीव तिया को जरूर फटगो ॥ 61

हं अरदास दहू कर जाडत बालम यू नह नाग विमारा ।  
मार दही नलवारिय वार सू यू तडछाय पिया मत मारै ॥  
जोवन भार मम जुत जीवण पूरण आणद माथ तिहारा ।  
जावण हेत नयो किम जावन इ मुख सू किम केहू मिश्रगो ॥ 62

चाद ग्रव ठमजा इर ठाडहि सत रिखी नह मोवन जाग ।  
सूरज ग्राट लुकाय नहा हरि ओर न शाय सकै बस आगै ॥  
बद करी घडिया सबही जग तारीख तिख्य धमावत मारै ।  
हे! हरि आज निमा थिर कीजिये प्रात हुबै न पिया घर त्याग ॥ 63

हैं सुखवास पिया तब सगत चार दिना तक जोवन चावी ।  
गारम वार नही मिनखा नन चोरियामी जूण मे अकर गावी ॥  
खाण कमाण कमी नह पोरस ओलग गो डर नाय उपावी ।  
पान पटू कर जोड कह प्रिय ! छोड तियाऊ पिया मत जावा ॥ 64

जाच लही पिव ओलग जावण बेरण आ परभात भई है ।  
साज समाळ रखाय समानज मात पिता पिव ओक दई ह ॥  
मेल मुखा गुड पीव चल मग कामण नेणज सन बई ह ।  
होय अचेत पडी पर कामण नेण भरै जळ धार बई ह ॥ 65

पीव वरं परण नण भरै तिय चोळ हुवा सत्र भीगत गीला ।  
खीण हुइ परभा पल भीतर जेम सपूरण होवत लीला ॥  
जीव नहीं समळ घण व्याकुळ भीतर भाव मिटे गरवीला ।  
बोल सकै न रखै तिय अतर कत ज पार किया वर टीला ॥ 66

वरण भाज उमत भई पिव ओलग काज हुवा परदेसी ।  
सीतल मद सुगन्ध समीरज आज विजोगण रो हिव लेसी ॥

फूल रया तरु ओर लताफळ सूक रयी तन मोय विनेसी ।  
कोयल बोन लगै कटु कानज रै । विन साजन जीवन रेमी ॥ 67 ॥

ढोल बज तन काम सजै पिव नाय घरा मन मोय मरेगी ।  
नाचत गाव गवाड बिचै घण भेरियँ डडियँ मन्द धुरेगी ॥  
ओर महेनिया है पिव सगत सव्द मनेव मो कान पड़ेगी ।  
जेम दमा दुखदाई विजोगण बारम बारहि जीव उठेगी ॥ 68 ॥

चदिय चादनी मद लखै चित फागण फद मनावत फेरु ।  
रेण जगै चख नीद न आवत माथ पडै दव रूपिय मेरु ॥  
नेण वहै जळधार निसा दिन आलाय धीर मू केम अयेरु ।  
डूव रही यू विजोगिय मागर हाय । अवे कित माजन हेरु ॥ 69 ॥

रुत बसत रही तन बाळत मालत लूह डमी हिव माई ।  
नोर छुया तन पे छम बोलत जाण जगै तन प्रीत सवाई ॥  
नार घणा निसवाराय नाखत जीवण आज हुवाँ दुखदाई ।  
गोट हुवै हिव भीतर दाभत छाव रही घर माथ घुवाई ॥ 70 ॥

चेत मभा हिवडी घण चेतत नेह सरोवर लेत उफाणी ।  
भूख लगै न चखै मुण भोजन होय रयी मन मोय हिराणी ॥  
भूलत काज फिर घर भीतर नेम फिरै बेल जोतत घाणी ।  
आवण आम रखू पिय री उर भूल गया पिव तो घर आणी ॥ 71 ॥

रास रमै सुखवास जमै रस भाग बडा मधु मास मभारी ।  
गेह चणा सरसू पकिया अन तेम पक पिव मगत प्यारी ॥  
पीव बिना तन मो इम दाभत दाभत माख दखै जिम सारी ।  
रूप निखार मिटै विन साजन वारि बिना मछनी जिम हारी ॥ 72 ॥

गोर दुखी अठपोर घरा घण बिलख रही गिरणगोर तिवारा ।  
बालम तीज चुवाय दई किम कोण कढाय दी आडिय वारा ॥

आज था खोय दिया मुम ओसर आवत माळ मे अकण वारा ।  
तोर तपे घर नेह तणी पण गोर दुखी घर माय गिवाग ॥ 73 ॥

मेदि नगाय रही कर कामण दूज तणी मधु मास सिभारी ।  
होत प्रफुल्लित चित्त मजोगण गत विजोगण रै दुख लारो ॥  
आवन याद पिया मन भीतर सागर नेग उठै जठ सारो ।  
लोयण नीर रळै कर ऊपर मेदि उतार दई जळ धारो ॥ 74 ॥

तावड तेज सुखी नह सेज करी पिव जेज हवा कर हाणी ।  
मास वेसाख तप घर भीतर बाहर सोपणी है दुखदाणी ॥  
फेन रही घर चन्द प्रभा किरणा चुवव तन तीर समाणी ।  
राजन छोड गया परदेसज गत चखा जळ ढोळत राणी ॥ 75 ॥

रोयण तावड तेज तपावत पथ चलै दुखिया तन पूरी ।  
छाह ऊभा नर नार पसु तन सकत करावत मामन सूरौ ॥  
सोतळना तन आज दहै कुण लेय गया मन साजन दूरौ ।  
बाहर री वळती तन दाभत लाग रयौ भय भीतर लूरौ ॥ 76 ॥

जेठ चल मिरगा मभ अघड तेज हवा तन तीर चुवोव ।  
सून लगै मव पीव विना जग भीतर भीतर कामण रोवै ॥  
पाळण कीण अवं दुखिया तन हालण हीण छवी तन होवै ।  
मार मती विलखाय मनमेळू जीव निमा दिन वाट सुजोव ॥ 77 ॥

वायु दुती हिक काम करी हमरी पिवजी परदेस विराजै ।  
जाय दहौ समचार उगा मन कामण आज विजोग दारै ॥  
नेण लगै ढिग नीर गहावत मग महेलिया कामण लाजै ।  
माजन रे पग री रज नेयन ओर सबै समचार लै आजै ॥ 78 ॥

आय गयो मजन नभ बादळ मास असाढ भरा तपतार्द ।  
नेय सुदो घर मेह मड्यो पण पीव लही सुद कामण नाही ॥

ऊंस आ गरमास तणी गत ओर घली अमूकै हिन माही ।  
ओळग छोड अवे घर आवियै सुन पणी घर मेठियै माई ॥ 79 ॥

नाल भरै जळ खाळ कर वर नाल नदी जळ जेय उताळी ।  
जोत रया किरसाण धरोघर मेर करी वर पै वरसाळी ॥  
गाज करै नभ आज खुमी मभ मोय उरावत बादळ काळी ।  
बीज चमकत आभ तणी वस ठोड दई तज काळजौ माळी ॥ 80 ॥

चातक ढेर लगाय रयी नभ पीवहि पीव उचारत बाणी ।  
लूण गिरै जिम घाव परा अर ताव तिया पर भीतल पाणी ॥  
श्रीख मभा अगनी तप लागत रात अधेः अभावस आणी ।  
अक हू अक बढ्यौ दुख अतर मथर जीवण री गत माणी ॥ 81 ॥

सावण भावण है सगळै जग तावण री गत मो हित ठान ।  
घोर घटा चमके चपला त्रिच सोर मिथी पिव देवत कानै ॥  
बादळ गाज सुणै तन दाभत भीतर भागत जीवण छान ।  
म्याम अव घर आव सही घणस्याम घणोज सतावत म्हानै ॥ 82 ॥

मेह घणौ वरसै परसै वर हा हरसै वर व्है हरियाळी ।  
भीतर कामण मोच रही चख नीर वया बणगी डक नाळी ॥  
मेह थकै ख जाय परी वहवै सजनी चख नीर उताळी ।  
सावण साथ रयी नह साजन कामण होत धपु गत काळी ॥ 83 ॥

लो चपला सिहरा गळ लागत कामण आज किरै गळ लागै ।  
बादळ ओट करी ससि वध्रण रध्रण कामण री मन राग ॥  
हाः पहाड समी हिव ऊपर साजन वेदरदी दिल दागै ।  
जीव चराचर आज सुखी जग ससै जग री दुख कामण सागै ॥ 84 ॥

ठड वदी कपडा गुदडा सग लाग रही भड सावण सारी ।  
गोण हुई छिन्न कामण गातिय भाव विजोगण री मत हारी ॥  
आस तणी सजनी मन भावण तावण री गत पाथ पियारी ।  
लक्ष्मण सावण बीत गयी पण साजन आवण री न बिचारी ॥ ८५ ॥

भादव मास घटा घण वादळ भोजत भूमी लगी भड भारी ।  
 घाम हरी फमला घमघोरम ठोरम ठोर सवा दिल ठारी ॥  
 पूरव पौन चले परसे ऋषु लागत तीर विजोगण लारी ।  
 डेटर बोल विजोग डरावत कोयल बोल न लागत कारी ॥ 86 ॥

वापग्गी नरमी वरम्या घन आग विजोगण रं हिव रुठे ।  
 पास पडोस सजोग पुकारत वाण विजोग इमी धर वूठे ॥  
 रात खिबे विजळी हिव राजत छाप अभागिय सास न छूटे ।  
 लूट लया तकदीर सुलेखिये राम जदे तन कामण रुठे ॥ 87 ॥

मास आसोज कनागत मगण ओर बिरामण जीमण आवे ।  
 बारम बार वहे कित बातम आम दवी कर याद जगावे ॥  
 नीर चखा बढियी निसनारिय ओसिय रूप घराज उपावे ।  
 नार दुखी घर बार दुखी नित खामद कागद नाय खिनावे ॥ 88 ॥

कातिक मास करी अस कामण देवसी पीव दरस्त दिवाळी ।  
 आगण नीप सू माडण माडत आलय वालिय कीव उजाळी ॥  
 तावण आय गई वन तेरस्त ओर उडीक कराय उताळी ।  
 कातिक मास उडीक करावत वालम कामण आय न भाळी ॥ 89 ॥

मिंगमरी मास वढी सरदी मळ माय नही गरमाम मसोडा ।  
 कतिय बाट जोने घर कामण ठीक लगे नह ती बिन ठोडा ॥  
 पोस वढी सरदी तन पाडत खालड खोम रयी बिन जोडा ।  
 ओळग छोड अवे घर आविये खामद धार लही किम खोडा ॥ 90 ॥

सोरम जेम वसे सुमना सग सूरज तेज बसे तप सागे ।  
 सीतळ वाम रयी समि सगत ज्यू सवदा मळ अरथ जागे ॥  
 वादळ मे चपला जिम वामत लार जिया मकरा मधु लागे ।  
 नाय वसे सजनी हिय साजन आवत याद मना अनुरागे ॥ 91 ॥

પોયણ નેણ હુવા દુઃખ પાવત પીત અત્ત ધુ ધઢાપન પાયો ।  
 સાવઢ હોઢ હુવા દુઃખ સગત માનત ચદ મુઢી મુરખાયો ॥  
 ઉત્ત કુચ્ચ તણી અવનીતિય જેમ પઠારિય રૂપ જમાયો ।  
 છોણ કટોજ હટી છિવ હાલત લો કદઢી જગ નાવ લજાયો ॥ 92 ॥

ડીગઢ કેમ હુવા દુઃખ પીગઢ માગ ચમક પઢી ગત મોઢી ।  
 ખાઢ બિંદો વિલરી દુઃખ ભોગત ધોઢન ચોઢ સુપોઢિય ધોઢી ॥  
 હાર મિંગાર દિયા ધર આલય સૂઢ ગઈ ફમલા જિમ રોઢી ।  
 કોણ અવ ઓઢણાણ કરે તિય હા હિરદા મખ હાલત હોઢી ॥ 93 ॥

ખોર ઉઠે સજની તન ખાઢત છોણ પ્રખા હિવ દેલત છોજે ।  
 સૂરજ દેલ વઢે દુઃખ સગત ધારત યાદ તિયા નહ ધીજે ॥  
 દાખત દેહ દુઃખીજ દુવારયિ કેમ મુલાવણ વાત કરીજે ।  
 ઠઢક પોર લગે ચિત ઠોકર સામ પડ્યાજ વિજોગણ સીજ ॥ 94 ॥

રાત પઢી હિવ માહ રઢાવત નીર ઉફાણ વુ રોકત નારી ।  
 સેજ પઢી નિસ પોર ગઈ સુદ ધોય દઈજ વિજોગણ સારી ॥  
 આઘીય રાત અચેત ડઢી અર નાર નખા ધર દિસ્સ નિહારી ।  
 તૂટત આજ હિયો વિલકે ધણ ત્યાગ વહુ કિમ યાદ તિહારી ॥ 95 ॥

માય ગયો અર ફાગ ગયો મખ વાલમ ચેત અચેત વિતાયો ।  
 જેઠ વેસાલ અસાઢ વઢાવત પીવ તણી તન મેટ ન પાયો ॥  
 સાવણ ભાદવ માસ આસોજ જ કાતિફ મિંગસર પોસ કવાયો ।  
 લક્ષ્મણ પીવ ન યાદ લહી ચિત કામણ માલ અકાજ ગમાયો ॥ 96 ॥

માર દહીજ કટારિય ધાર સૂ માન પિયા વિલખાય ન મારો ।  
 સાગર ધીચ વિજોગ પઢી ધેરિયો મો હિવ અગ્રઢ ખારો ॥  
 હાત વઢાય પિયા ગત હેરિયે ઢૂવત નાવ વિજોગણ તારો ।  
 લક્ષ્મણ યાદ કરો ચિત લાયકે વાલમ યાદ ન નાર વિસારો ॥ 97 ॥

વાર ગિણૂ તિથ સાર ગિણૂ પુનિ કોટ તિવાર અપાર કરાઢ ।  
 કાગ ડઢાવત આણ પિયા ધર સૂણ સરોદા હમેસ લિરાઢ ॥



हालत ही हिचकी घुस होयत जेम पिया घर आजहि पाऊ ।  
लक्ष्मण आम निरास गरी पण वालम याद किया विसराऊ ॥ 98 ॥

सूम कितो तिसराय दहो पण हेत टकी न देवण वारै ।  
अव नखै चख रोय गमावत भेस नखै जिम पाठ उचारै ॥  
छाट पडै चिकना भटका पर ठेर सकै न जिमा हिक वारै ।  
पत्थर मेल दियो हिव ऊपर वालम ना अनुराग विचारै ॥ 99 ॥

जीवण जोत बुझै बलती जग तेल उमगिय खूटत आखी ।  
वाट रही कम आस तणी ग्रव नाय निरासिय अधड नाखी ॥  
ग्रोमर वीत गयी अति उत्तम आ अनुराग भरोकिय भाकी ।  
लक्ष्मण जावन नाय रहै थिर आ परवास ह च्यार दिनाकी ॥ 100 ॥

## सत्सार असत्सार

गोत धोरकठ

भजो हरी नाम भ्रात, मुरगा चलेगी साथ ।  
 ओई छ जीव आधार, रटौ दिन रात ॥  
 सारा छे भूठा सत्सार बधना बाधे बेकार ।  
 स्वारथ री खेल सारी, घणी कर घात ॥ 1 ॥

मिनख जमार माय, हर दिन हाय हाय ।  
 कमाई री पार कानी, लोभी ललचाय ॥  
 जदे लगै काळ भाट, बिगडसी ठाट बाट ।  
 छोडणी पडसी छेल, ससारी सराय ॥ 2 ॥

हजारा लाखा सू हेत, चित मे व्योपार चत ।  
 सुमपणी लियो साथ, दान नहीं देत ॥  
 भूडी मत वाण भाख, राम नाम हिये राख ।  
 कोडी साथ चले कोनी, रम ज्यासी रेत ॥ 3 ॥

पच पच मरे पूर, दाळद हुवे न दूर ।  
 हरी सू छोडियो हेत, नाथी कामी कूर ॥  
 भर कसे पाप भार, दुख री प्रवेम द्वार ।  
 लागसी तिका रे नार, जमडा जम्हर ॥ 4 ॥

भिलिया मोह रो जाळ, कोनो छोडै तने काळ ।  
 पुनी वह और पूत, भूठा छे भभाळ ॥  
 सुख मे सत्सार साथ, राजी रहे दिन रात ।  
 दुखा माय जाय दूर, टोगडिया टाळ ॥ 5 ॥

हामत ही हितरी मूम होरत अम निमा पर सावहि पाउ ।  
 नभमण घाम निराम नरो पण बावम बाहू निमा निमगळ ॥ 98 ॥

मूम तिनी विमराम नही पण हा टनी न दवण धार ।  
 अंध तम नम राय ममावत नम तय निम पाळ उचार ॥  
 छाट पट तिना मटता पर टर मम न त्रिपो हित बार ।  
 पथर मम दियो हित ऊपर बावम ना सपुराण विचार ॥ 99 ॥

जीवण जात युभ रजो जग तम उमगिय मूटत घायो ।  
 पाट र्हो तम घाम मणी मम ताय निमगिय भ्रष्ट तायो ॥  
 मांमर चीत गयो मति उत्तम मा सपुराण भरातिय भावो ।  
 नमण जावत ताय रहे विर घा परगाम हे स्यार दिवांती ॥ 100 ॥

## ससार असार

गोत घोरकठ

भजी हरी नाम श्रात, सुरगा चलेगी साथ ।  
ओई छै जीव आघार, रटी दिन रात ॥  
सारी छै भूठा ससार वचना बाधै बेकार ।  
स्वारथ री खेल सारी, घणी करै घात ॥ 1 ॥

मिनख जमारै माय, हर दिन हाय हाय ।  
कमाई री पार कोनी, लोभी ललचाय ॥  
जदै लगै काळ भाट, विगडसी ठाट बाट ।  
छोडणी पडसी छेल, ससारी सराय ॥ 2 ॥

हजारा लाखी सू हेत, चित मे व्योपार चेत ।  
सूमपणी लियो साथ, दान नही देत ॥  
भूडी मन बाण भाख, राम नाम हियै राख ।  
कोडी साथ चलै कोनी, रम ज्यासी रेत ॥ 3 ॥

पच पच मरै पूर, दाळद हुवै न दूर ।  
हरी सू छोडियो हेत, कोधी कामी कूर ॥  
भर कसै पाय नार, दुख री प्रवेस द्वार ।  
लागसी तिका रै लार, जमडा जम्पर ॥ 4 ॥

भिलियो मोह रो जाळ, कोनी छोडै तनै बाळ ।  
पुनी वहू श्रीर पूत, भूठा छै भभाळ ॥  
मुख मे समार साथ, राजी रह दिन रात ।  
दुखा माय जाय दूर, टोगडिया टाळ ॥ 5 ॥

इतौ किया अभिमान, धरै नही श्रोरा ध्यान ।  
 आकास मे रखै आख, कोनी देवै कान ॥  
 मना नही भावै मोद, जवानी म फाटै जोध ।  
 भपेटै काळ रे झिलिया, कट ज्यासी रान ॥ 6 ॥

चित सू सवारै चाम, जतर फूलेल आम ।  
 जोवन गति मे जीव, करै काम काम ॥  
 सुन्दर कामण स्नेह, दपटीजी जी मे देह ।  
 अक दिन आसी इसी, ठायी मोत ठाम ॥ 7 ॥

स्वार्थ अपणै सीर, तिकडमी चलै नीर ।  
 ऊधा सूधा कर आप, मारै बठी मीर ॥  
 भरिया धना भडार, काडी आडी जिरै कार ।  
 वरिया रेजासी धरा, ठूटिया सरीर ॥ 8 ॥

हरी सू गढावी हेत, चित मे रखावी चत ।  
 सदनीती रिया साथ, जाणी जूणो जेत ॥  
 दही सरदा मारु दान, सबा करौ सनमान ।  
 कूडा झूठा नही काज, लोकै जस लेत ॥ 9 ॥

दुखा नही दिलगीर, सुखा नही सूरवीर ।  
 वरम करम धीर, साचै आछै सीर ॥  
 लगन हरी मे लीन, मोह जेम जळमीन ।  
 (वारी) लोकै परलोकै लाज, राखै रघुवीर ॥ 10 ॥

## औरत-आभा

इहा

कामण जगरी कीर्ती, गेहा तणी गुमान ।  
मान मिले मरदा मुलक, खरी भरी गुण खान ॥ 1 ॥

वालपणे घर वापरै, लडियौ वेथक लाड ।  
ग्राडा भाई आविया, जग देखे हित जाड ॥ 2 ॥

गिणत करै नह गेह रा, मिणत न सधै मोह ।  
वालपणे घर वायली, देख दुभाता दोह ॥ 3 ॥

भित्त-भित्त देख दुभातडी, मोळी कर न मम्म ।  
जण जण रौ मन केवटे, धिन धिन तोय धरम्म ॥ 4 ॥

देवण माता सुतन न, लावै चीज लुकार ।  
वैठी देखे वायली, स्वारथियो ममार ॥ 5 ॥

लेव हाथा लाडका, चोखी खावण चीज ।  
मळ जग पटकै रोम री, वंना ऊपर बीज ॥ 6 ॥

मगनी राखे वीर री, लोवै तन मन लाड ।  
सीर न भाई ममभवै, केवा वसा काड ॥ 7 ॥

रहै काज मे रात दिन, जतै न पर घर जाय ।  
परण्या पाछे पामणी, वाजै पीहर माय ॥ 8 ॥

पीहरिया परणाय नै, मेल पर घर माय ।  
कामणिया मन केवटे, धिर मसुराळै धाय ॥ 9 ॥

उत्ती रिया अभिमान, धरै नहीं श्रोरा ध्यान ।  
 आकाम म रखै आय, कोनी देवै कान ॥  
 मना नहीं भावै मोद, जवानी म फाटै जोद ।  
 भपेटै बाळ रे भिलिया, बट ज्यामी रान ॥ ६

चित सू सवार चाम, जतर फूलैल आम ।  
 जोवन गति मे जीव, करै काम काम ॥  
 सुन्दर कामण स्नह, दपटीजी जी मे देह ।  
 अक दिन आसी डमी, ठायी मोत ठाम ॥ ७

स्वारथ अपणै मीर, निकडमी चलै तीर ।  
 ऊधा सूधा कर आप, मारै पैठी मीर ॥  
 भरिया धना भडार, काडी आडी जिरै कार ।  
 धरिया रेजासी धरा, छूटिया सरीर ॥ ८

हरी सू उढावौ हेत, चित मे रखावा चेत ।  
 मदनीती रिया साथ, जाणौ जूणौ जेत ॥  
 दहौ सरदा सारु दान, सबा करौ मनमान ।  
 तूडा भूठा नहीं काज, लाकै जस लेत ॥ ९

दुखा नहीं दिलगीर, सुखा नहीं सूरवीर ।  
 धरम करम धीर, साचै आछ सीर ॥  
 लगन हरी म लीन, मोह जेम जळमीन ।  
 (बारी) लाकै परलोके लाज, राखै रघुवीर ॥ १०

आटी नह घर आपरै, घाटी बडियो गेह ।  
 काठी मन नाही करै, दाटी दै दिल देह ॥ 21 ॥  
 चोखै पथ नाही चलै, कूलखणा री कत ।  
 हारण सद मारण हितु, कामण अरज करत ॥ 22 ॥  
 ह्यी खावै रोटिया, धीणा विन घर धान ।  
 कमर पडै ना पामणा, जवरेली जुजमान ॥ 23 ॥  
 पट फाट्योडा पेरवै, नह गैणा री नाम ।  
 लज्जा गखण लोक मे, वामणिया री काम ॥ 24 ॥  
 टूट्योडा सह टापरा, तिडनै भीता तूट ।  
 चोमामै टापर चवै, बिलसा ज्यावै छूट ॥ 25 ॥  
 टपकै सबदिन टापरा, ईनण गीली ओर ।  
 विनणिया बिलखै उगत, दोठै टोटी दोर ॥ 26 ॥  
 चवतै चूल्लै चोगना, कर परिवारी काड ।  
 करै रोटिया कामणी, मावै मेण्यो माड ॥ 27 ॥  
 आवै ना मन ईसकी, छावै नह तन छीज ।  
 छोटी मोटी छान मे, चावै वामण चीज ॥ 28 ॥  
 मुद राखै खुद री नही, धरै करै मसै ध्यान ।  
 पाटा मे गाटजगी, गोरडिया री ग्यान ॥ 29 ॥  
 हरगज इमडा हाल मे, हुवै न धण हैगन ।  
 सक्क मू कर मामनी, उपजावै कुळ आन ॥ 30 ॥  
 पाई हरि परताप मू, कुळयती धण रा ।  
 हरगन वटै ना हिन्द मे, अषणायत गे अत ॥ 31 ॥  
 कुळयती री कीरती, निर्मळ जू मर नीर ।  
 सजवती रह मोर मे, मतवती री मीर ॥ 32 ॥



## देस-दस्ता

गीत मनमोद

बिगड़ रही दमा अणूती भारत, अर दिन आरत आवै ।  
सुद लेवी सोचौ रै सासक, मोजा किया मनावै ॥ 1 ॥

निरधन रै दाणा घर नाही, भूखा रात वितायै ।  
टोटा मे भू भूँ टापरिया, कामगिया कुरलावै ॥ 2 ॥

मजूगी नहीं मिलै मुलक मे, बड़ी घणी बेकारी ।  
पूत फिरै खलता पढियोडा, रै नाही रुजगारी ॥ 3 ॥

सरकारी नोकर दुख मागै, भू भू रिया नित जोरा ।  
कमरतोड भू गाई कारण, पीला मुख अठपोरा ॥ 4 ॥

घर घर माय विमारी धुमगी, साधन हीणा मारा ।  
कुलोभी डाक्टरा रै कारण, उतर रया उणियारा ॥ 5 ॥

गुरु महिमा मास्टर की गारत, बालक सामी बोलै ।  
सगन बंद सोकीन मिनेमा, छाती पढिया छोल ॥ 6 ॥

जस्त्रन री चीजा र जागक, बापी कवण नगायी ।  
मिलणी अगत ऊपरा दोरी, बोपारी मरमायी ॥ 7 ॥

चीजा मे भेल्ली कू चीजा, लाभ मिलावट लीनी ।  
मजग नहीं अफसर सरकारी, के रिमवत कज कीनी ॥ 8 ॥



भिमटाचार देस मे बाप्यी, बिण मे हाथ पटावै ।  
कोडा बचिया है थोडा मे, गुण ना रिमवत गावै ॥ 9 ॥

भूठा नै इज्जत सू जोडै, साचा नै सिरकावै ।  
 धन री पूछ रही भारत घर, पापी आसण पावै ॥ 10 ॥  
 दणिया जाय अधर ठलाई, वणिया नर व्यभिचारी ।  
 दण्ड नही न्यायालय देवै, अपराधा अधिकारी ॥ 11 ॥  
 पिबणिया नर छोड न पाया, उपाय करण उताह ।  
 वन्द नसा र बाबजूद ही, दीखै घर घर दाह ॥ 12 ॥  
 दारा नै धोळै दोपारा, छुट्टा गुण्डा छडै ।  
 मायत बठा पुलिस मिपाई, अग न दुष्ट उधेडै ॥ 13 ॥  
 गलै बहता थका गरीबा, पडै सिपाई पाछै ।  
 जडकावै धमकायर जेबा, ओह बोलै आछै ॥ 14 ॥  
 जुलम करै काटणिया जेबा, जहर उगाळ जीबा ।  
 घुसै चोर जज साव घरा मे, गिराती किसी गरीबा ॥ 15 ॥  
 मावै नही धरा मागणिया, दत किण किण न देवा ।  
 गिरा गिरा वगत निकाळा घर री, काई मुख सू केवा ॥ 16 ॥  
 मन्दिर रै ओलै घण मोडा, मामणिया मिल भोगै ।  
 धर पावन आ गुण्डागिरदी, आसक माल अरोगै ॥ 17 ॥  
 महल किया अम्बर सू मिलता, ठाट वाट सब ठावा ।  
 तसकरिया जीवण मे तेजी, लेवै आणद लावा ॥ 18 ॥  
 पूजी सू बढवै नित पूजी, अरथ हीणा अमूकै ।  
 धन माही धायोडी धून्दा, सद ना मारग सूकै ॥ 19 ॥  
 वाप गयी भारत धनिका सू, जोरा दालत जाडै ।  
 समझै कठपुतली सरकारा, मन ज्यू चाय मरोडै ॥ 20 ॥

दुरदसा आ भारत देस री, ध्यान न सासक धारै ।  
 कुरसी री चिंता मे काला, आछी छोट उतारै ॥ 21 ॥  
 समणी कठण देस री सत्ता, हर कोई लेवे हाथा ।  
 रमं देस नं समझ रमतिथी, मादघा घालै घाथा ॥ 22 ॥  
 चाल्या देस चुनावी चरचा, भासण देव भीना ।  
 समझ वायदा जनता सारी, देख वोट दे दीना ॥ 23 ॥  
 कुरमी लै अँ ती कोडाया, जनता धा दिस जावै ।  
 वगत नही सुणवा जन वाता, रै जन थानै रोवै ॥ 24 ॥  
 अँ सब अँक अँक सू आगै, भाजै स्वारथ भूडा ।  
 दरसन कर कर इसा दोखिया, मिनख उतारै मूडा ॥ 25 ॥  
 जनता समझ गई अब जोग, नेता स्वारथ न्हाळै ।  
 लेवी चित्त चेतणा लोगा, गरव धनी री गाळै ॥ 26 ॥  
 चेतहीण रहिया ती चितव, पावोला दुख पूरा ।  
 सुणसी आपा री ना सासक, दुख ता करसी दूरा ॥ 27 ॥  
 समझ लही भारत रा सासक, सुकविया सदेसी ।  
 बकसा नही अबै ज बदल्या, रै तोडाला रेसी ॥ 28 ॥

## नेता - नीयत

गीत हस्तावली

अवगुण रा उदधी गुणा रा आछा, करमा रा पोचा अनुकूलन   
नमसकार । भारत रा नेता, मुलक तणी आरत रा मुल  ॥

वधै गरज अरज रा बहरा, फळ रा उळू फरज रा फूड ।  
पुन रा अरि पाप रा पालग, पाप नही थाप रा धूड ॥ 2 ॥

जुलम रा जम कलम रा भूठा, सट रा मलम चलम रा सूर ।  
मद रा पीवक पद रा मगता, नद रा जीव किरी थळ नूर ॥ 3 ॥

सत रा ऋण मत रा मादा, चोदा वित रा अरपण खध ।  
अनल रा लगण छल रा आदि, अचळ नाही अकल रा अत्र ॥ 4 ॥

गत चुनाव घर घर रा ग्राहक, देख लहा दर दर रा दीन ।  
जीत रा अणी प्रीत रा जुगनु, हीत नीत रा खोटा हीन ॥ 5 ॥

कमम अवर कुरसी रा काचा, वाचा रा भूठा छै गीर ।  
अमल दारु ललना रा आसक, आसक इसा देस रा सीर ॥ 6 ॥

चित गदा चदा रा चाहक, मदा करम दस रा माण ।  
धन पर रा खावण रा धधा, हुवै जणा फन्दा रा हाण ॥ 7 ॥

वळा रा वघण दळा रा वदळू, खाव गभख खळा रा खास ।  
रसम जसम रा छ रोगलिया, दोगलिया तसकर रा दाम ॥ 8 ॥

पर रा माल गाल रा प्रेमी, खाल चाल रा बडा खराब ।  
मूडै भेट पेट रा मोटा, अँट खट रा भूठी आभ ॥ 9 ॥

गरियो महल सहल रा नामी, गहल चहल रा नामी गाण ।  
भारत आच खाच रा भेळू, पाच वरस रा सरम प्रमाण ॥ 10 ॥

भटख लह रिसवत रा भीडू, अवर नहीं इच्छा रा ओड ।  
लिछमण बहै देस रा नौगा, त्वारा देवी नखरा तौड ॥ 11 ॥

## दारू - दूसण

कवित्त

अग न दिराय हाण मव ही नसा रा अस,  
रग कस सारोड विगाड देव राजरो ।  
माजनी गमाय देव मरजादा आघी मेल,  
लागी लगन नही रहवै ध्यान लाजरो ॥  
सुर नर भूप सारा विगडिया इणी सग,  
किणी कयी मामरम किणी दारू काजरो ।  
मासण आसण पलटाय इतिहास साखी,  
आखी बात चुभती कवि समाज आजरो ॥ 1 ॥

राजी वेता सुरगा मे देव पीव मोमरस,  
दारू विणी री नाव भूमडळ दिरायो है ।  
सराव केवै पढिया लिखिया साकीन घणा,  
मदिरा सवाय छाक लोक न मरायो ह ॥  
भयघाना री मदहोस रूप उरदू माय,  
डिर्कि वाडन नाव अगरेजी ठायी ह ।  
सू घ सू घ देखी मती नाव छै खराव मारा,  
ऊ घ ऊ घ रूप आ नास करवा आयी ह ॥ 2 ॥

मदिरा आणद अर घोसली जगत मोज,  
चोज भगत दारू मधिरा नह चाव ह ।  
कर वै कमाई नरकाभ काभ आज केई,  
सवन मराव माभ टावरा सतावै ह ॥

अरे दाखानो सारा भारत रो घोमी आभ,  
 नाभ नसाय दाख हाण घर लगावै है ।  
 देखो देखो नाम उमू वेय रयो हिन्द देस,  
 जिद गिद रूप पेस आतमा जळावै है ॥ 3 ॥

जलमिया टावर खुमी करे दाख जुगाड,  
 राड कागय ऊभा कर देवै रुदन है ।  
 मगाई विवाह माय सराव रहे मरीक,  
 लीव मगन वोदी लागी छोटी लगन है ॥  
 मरिया मिटाण मो दाख तणी मनवार,  
 आर पार वेय रही बाळना अगन है ।  
 मुधा वसुधा पर देखो भारी गरल अस,  
 मस्कार छोटा इसू भारत मदन है ॥ 4 ॥

वाचा मनार वाळा काठी नाय मन कीध  
 मतयाळा वेय हाचा दाख महफिल मे ।  
 चसको नगाय लेवै धीरे धीरे यू चलाय,  
 दाय भराय जावै धणी दाखडी दिल मे ॥  
 थोडी थोडी उपरावै घरा आवै मन योक,  
 इसू आछी चीज किसी सिस्टी अग्रिल मे ।  
 नागमी लार जद छूटणी घणी दोरी लोकै,  
 वल बुद्धि धन तन बडज्यामी ग्रिप मे ॥ 5 ॥

पोच वायरा वेयगा पी पी दाख अठपार,  
 भोर साफ ढाली नहीं मज मे ॥ ६ ॥  
 नम मे ममाय रहियो दाख दिवस ॥ ७ ॥  
 वस मे सरीर नाय ॥ ८ ॥  
 कूट-कूट टावरिया न आन ॥ ९ ॥  
 आनी नद ॥ १० ॥

हेमायती देख वो कामण पै उठावै हाय,  
जीवना माटी नै गोवै कामणी जमारै ॥ 6 ॥

सूखियो मरीर सारी मेवन सदा सराव,  
राबड़ी चादी गी दिन रात ही रुलावै है ।  
मन नही लागै विन मदिरा मुलक माय,  
उच आय ठेकै निज हालत भुलावै है ॥  
खेती पाती सू ही मन लेवै अदबीच खीच,  
पाच न्याति मे मन दयाति नह पावै है ।  
दोरी लागी नोकरी री सुद नै बिसार देत,  
मालत दारू मे मग चालत न भावै है ॥ 7 ॥

उठताई दारू मगाण री करै अरदास,  
पार्ल पाई कर भेळी ठेकै पे पुगावै है ।  
आता ही बोनल घट खोलनै गिलास आप,  
गळै उतार घूट अनेक गीत गावै है ॥  
अेक घूट लेवताई मन मे उठी उमग,  
अग अग धूजै तिकी ठिफाणै आवै है ।  
मारा काम करण री बणाय लेवै आप सूचि,  
करणा ऽरण नाय की दारू करावै है ॥ 8 ॥

बोय बोय कर परी पी लीवी आधी बोनल,  
फेंक दीवी चोक बीच वीछ नीच फेरू है ।  
गाळिया काढ काढ घर रसै दियो गु जाय,  
खाय बगाय रोटी पडियो घर खेरू है ॥  
धिपडिया घाती थकी छोडवै निवास घाम,  
मान नाय कयी जिया असर व्है मेरू है ।  
बहतो बहतो इत पडगौ गळी र पीच,  
भाजनै मूतै मू डा माय बाहण भेरू है ॥ 9 ॥

धरम करम नही सरम खोपियो धोर,  
 नीर बहाय कर देवै नए नरम है ।  
 रोवता न देख केड धार लेवै मना राम,  
 ऋण्ड ई बतारु किता फूटिया करम है ॥  
 वाळक कूकवै भूषा भामणी बिमार भळ,  
 गायन गागरा करै जेबडी गरम है ।  
 दोड्यो दोड्यो जाय देखो ठेकै पीवण दारु,  
 सतहीण गतहीण करै ना सरम है ॥ 10 ॥

घणी पी पी दारु केई पडिया खराब गेलै,  
 आगी पाछी चीज कर आदत उपाई है ।  
 ओछा मिनखा कने जायने करै अरदास,  
 छोटी छोटी बात मुण खोपी भाय खाई है ॥  
 अदहीणा होय इसा मेटदै जमारै ओज,  
 वोज घरती रो वण बात नें बघाई है ।  
 इमी दारु सू भाया रहजौ अळगा अवस,  
 देखी मत केज्यो कोई दारु ही दवाई है ॥ 11 ॥

वळद छक्की अर बेच दियो गोर बाडी,  
 बाडी बाडी बोल परो गमावियो बळ है ।  
 बेचन जमीन सारी विगाडे जमारै भेख,  
 आवाली पीडी रं करै घाटी अचळ है ॥  
 सुनार घरा सह पूगियो वधु मिणगार,  
 बार तिवार अबै आस सह विफल है ।  
 टापरी बेचवा माह मोच लीनी ओर टोटी,  
 मगाव यू पी पी करै जलम सफल है ॥ 12 ॥

करन बोपार पेली कीरती बढाई कासा,  
 ढबा ढबा कराम दीनी सराबी ढाली है ।



पणित बिग्न छोट पातर रिग्त धार,

उज्जा न रघ ऊची नर दोती आग्री है ॥

दिनोदिन गू जाग रिखी सुनी दुकाग,

चेताहीण बेय बेय लगायियो चाळी है ।

आमद रहवै नहीं धरा माय ध्यार आना,

दारू पी पी काउ देवै दुकाना दिवाळी ह ॥ 13 ॥

पामणा पर्झा नै गालिया मे वर पुकार,

मोत मगा सेण रो नहीं राखवै मकी है ।

मरजादा भेट्री पण मादीज अकल माय,

प्रोय प्रोय वर दियो बोवाडियो वकी ह ॥

सरीर प्रेक्म वियो पण वण ज्यावै सूर,

डर डर वाज रियो जीवण रो ठकी ह ।

देखली हालत नाया पीवजो मति थे दारू,

कारू नहीं बेकोई श्रीर दारू ही बळ की है ॥ 14 ॥

अणू ती दारू उग्या, अणू ती बढावै आम

मास घायनै विरती तामनी मचळगी ।

चोरी कर ठेवै पण ध्यान नाय देवै चित,

वित्त फिन सारी दारू ठेकै माह बळगी ॥

वाथ्या पडज्यावै टमा देखनै पराई वाम,

नाव गाव गाव नसावाज ही निकळगी ।

जचिया अजब ओरू जुवारिया मे वेठै जाय,

पाय वीरी प्रीती बदनीती मे पिगळगी ॥ 15 ॥

कीरत डाक्टर बढै पीवै ना वदे सराव,

सगाव सू दूर रहवै छत्रिय साची है ।

साहित्यकार साची जिकी ना पीव सराव,

अळगी इसू रहव अभियन्तो आछी है ॥

नोकर करमा सठ अफसर मजूरिया,

हाला सू अळगा रहिया हिरदो हाचो ह ।

भूल जयाचो दास पीणो माग्त वामिया भळं ,

कीरत दास री कथें जिवी कवि काचो ह ॥ 16 ॥

वणिग पिग छोर पातर विस्त धार,  
 डज्ज न रय ऊ नी नर दीती आली है ॥  
 दितीदिन यू जाग रिखी सूनी दुषा,  
 नेताहीण वेम वेम लगावियो चाली है ।  
 आमद रहवै नही घरा माय च्यार आना,  
 दारू पी पी ढाड देव दुषाना दिवाली है ॥ 13 ॥

पामणा पर्झा न गाळियो मे वर पुकार,  
 मीत मगा संग रो नही राखवै मकी है ।  
 मरजादा मेटी पण मोदीजै अवल माय,  
 वाय वोय वर दियो गोवाडियो वकी ह ॥  
 सरीर रेक्म वियो पाण वण ज्यावै सूर,  
 डर डर वाज गियो जीवण री ठकी ह ।  
 देखली हालत भाया पीवजो मनि थे दारू,  
 वारू नही केकोई और दारू ही बळ की है ॥ 14 ॥

अणू ती दारू उग्या, अणू ती बढावै आम  
 मास घायने विरती तामसो मचळगो ।  
 चोरी कर लेवै पण घ्यान नाय देवै चित,  
 वित्त त्रित सारी दारू ठेवै माह बळगो ॥  
 बाथ्या पडज्यावै दमा देखने पराई वाम,  
 नाव गाव गाव नसावाज ही निकळगो ।  
 जचिया अजब ओर जुवारिया मे वेठे जाय,  
 पाय बीरी प्रीती वदनीती मे पिगळगो ॥ 15 ॥

कीरत डाक्टर बढे पीवै ना बदे सराव,  
 सगाव सू दूर रहव छनिय माचो है ।  
 माहित्यकार माचो जिकी ना पीवै सराव,  
 अळगो इमू रहव अभियती आछी है ॥

नोकर करमा सठ अफमर मजूरिया,  
हाला सू अळगा रहिया हिरदी हाची ह ।  
भूल ज्यावा दार पीली भारत वासिया भळै,  
कीरत दारु री कथे जिवो कवि काची ह ॥ 16 ॥

## आजादी रौ नील

### सोहणी

- चिडिया सोनै तणी जग चावी, भावी दसा आरत बणै ।  
ठाढी व्ही ठीमर गत ठावी, हावी दसा गुलाम हणै ॥ 1 ॥
- फिरग जाळ जबर फेलायी, कायी भारत सग कियो ।  
चायी मन ज्यू हुकम चलायी, दगो देस न अवल दियो ॥ 2 ॥
- जवरी राणी लिछमी भू भी, खासा वाणी तेज करी ।  
हाणी हरण देस री हाची, खाची अस्व लगाम खरी ॥ 3 ॥
- कडक त्यात्या टोपै कोपिया, सामी पग रोपिया सिरै ।  
व्याकुळ हुवा फिरगी बेळा, मेळा भेळा माय मरै ॥ 4 ॥
- जयचंद घणा देस जलमिया, गमिया फोड र वात धरै ।  
चेती थकी बुझी चिणगारी, धारी बदी फिरग धरै ॥ 5 ॥
- सजग हुयगा समाज सुधारक, केई पारख देस करी ।  
दयानन्द सुरसती देस रै, भली भावना माय भरी ॥ 6 ॥
- राम मोहन राय सौ राजा, गाजा बाजा देस घुरै ।  
विवेकानन्द विस्व विचाळै, जवरी हिन्दू धरम भुर ॥ 7 ॥
- घणकर सोच म्हात्मा गांधी, लाली मोती अवर लही ।  
जमना लाल वजाज जागियो, केया खारी वात कही ॥ 8 ॥
- राय लाला लाजपत रझियो, आजादी रौ जग अपै ।  
तिलक पाण आजादी ताई, खासी तन मन हूत खपै ॥ 9 ॥

जवाहर करी आपै जागा, रास बिहारी अवर रळें ।  
सुभासचन्द्र वोस सो साथी, मुलका दोरी घणी मिळें ॥ 10 ॥  
भगत सिंध धिन प्राण वारिया, सेखर बन्दर घणी सजें ।  
करदी तन मन धन कुरवाणी, वाजा आरा यमर बजें ॥ 11 ॥  
बेली हुवाँ राजेन्द्र वायू, राधाकिसन तन मन रमै ।  
लगनी लगी आजादी देवण, ठावा ठीमर नाय ठमै ॥ 12 ॥  
आगीवाण धेट री आखा, राजस्थानी धरा रही ।  
जोगा मिनख सटवें जागिया, किकर हुयनै वात कही ॥ 13 ॥  
वारठ कुटम्य हुयगी वागी, जागी केमरि मिघ जठ ।  
मुतन प्रताप देस री सेवा, डिगियो नी लै मोत डटै ॥ 14 ॥  
खरवा गोपाल सिंध खारी, लारी फिरग घणी लियो ।  
देस हिन्द आजादी देवण, तन मन धन कुरवाण कियो ॥ 15 ॥  
जैला जाय काकरा जोया, भोगी तिस अर भूख भळें ।  
सहिया दुख सेवग इण सारु, कोजी भोगी देस कळें ॥ 16 ॥  
उगाड छाती आया आगै, सीना ऊपर तोप सही ।  
पाण इसा आजादी पाई, रै इतियामा वात रही ॥ 17 ॥  
टोटी घर रोवै टावरिया, फाट्या बसतर फेर फिरै ।  
वापू हुवाँ देस हित वागी, घर दिस पाळी नाय धिगै ॥ 18 ॥  
लगण करै घणा लाडणिया, परणी भूखी फिरै पगा ।  
देस प्रेम सार तज दीना, जोरु टावर सेग जगा ॥ 19 ॥  
गोरा भूखी भस्या गाया, ह नी चारी धरा हरी ।  
सिर देवण भारत रै सारु, खामद भुरै धरा खरी ॥ 20 ॥

परणी वाट जाय प्रीतम री, तिवारा सिणगार तणी ।  
कर मदी रचियोडी कामण, त्रिरहण सावण तीज वणी ॥ 21 ॥

जाह घणी भरोया भाक, वाटा आसू नेण भरै ।  
देस हिन्द आजादी देवण, वत फिरगी राड कर ॥ 22 ॥

होळी रगत रमै हताळू, गिणगारा व्ही जेळ घर ।  
सावण तीज फिरगी माग, वती मरण तिवार करै ॥ 23 ॥

राखी न वाप्ती नी राखी, रिच्छा बहना करण रमै ।  
नेक चुकाय फिरगी नाखै, जारा भारत नाव जमै ॥ 24 ॥

हिडोळ दिन फासिया हिडै, हरख हरष लै मोत हमै ।  
भूलै मोत जळासम जोगा, ठावा चाकर नाथ ठमै ॥ 25 ॥

गोगा न जेळा मे गेळै, चेळ भारत चाम चढ ।  
मेवा घावणिया दुख सहवै, मेवै खोरा सून मढै ॥ 26 ॥

तडफ तडफ आजादी ताड, खुरडा खोतर हुवै खपा ।  
सराद वनागत धरा सूना, वतन निभावण घणी वफा ॥ 27 ॥

चडी दुरगा वाळा चेला, खेला वागी कर खरा ।  
जोत करै आजादी जीतण, धूज पाप फिरग घरा ॥ 28 ॥

आजादी चावणिया आखा, सामी फौज फिरग सज ।  
रावण जिसी फिरगी राजा, वाजा घण अयाव वजै ॥ 29 ॥

रावण फिरग गणोड रुस, चूसै भारत रगत चुळै ।  
कोप रेयत आज सिर काटण, फिरगी सिर लेवण फुळै ॥ 30 ॥

दीपमालिका तमस दीसै, वागी भारत जीव वळै ।  
अधियारी मेटवा आया, त्यानै घणा फिरग तळै ॥ 31 ॥

लिच्छमी अठू फिरगी लेव, माल खाल ल करै मजा ।  
कण कण रा आपा नै करिया, सदिया ताई सही सजा ॥ 32 ॥

मकराता दिल अपराणी सोजै, छोड़ै भारत तरणी छिता ।  
 पतंग फिरंग वाली पूरी, काटण बागी हुवा किता ॥ 33 ॥  
 मरगा केई सरदी भरता, साधन हीणा घणा सका ।  
 आजादी रै खातर आपा, घर घर खाया घणा वका ॥ 34 ॥  
 बालक हा सरदी सू व्याकुल, डेण डोकरी घणा डरै ।  
 जोधो दर दर आज जुगत सू, फतै फिरगी करण फिरै ॥ 35 ॥  
 मरगा केई सरदी माही, ओढ़ण नै नी मिलै अठै ।  
 कुमलाई भारत री बाया, जीव फिरगी मुलक जठै ॥ 36 ॥  
 बसत हुयगी पतझड बेसी, बाग बगीचा सून वसै ।  
 मोली रोली भारत माता, हूसा माय फिरंग हसै ॥ 37 ॥  
 ओखम तपती बलती गहरी, काया ऊपर घाय करै ।  
 लवण सम राल फिरगी लछण, घुटघुट मरगा मिनय घरै ॥ 38 ॥  
 तप सूरज अन्याय फिरगी, साथै दोनू कैम सहै ।  
 लूवा बेया तन लै लीना, देहा कस्ट फिरंग दहै ॥ 39 ॥  
 बरसाळ साल दुख बेजा, नेजा करी फिरंग नखै ।  
 सूळा री बाग्या हित मेजा, हेजा नित आजाद हकै ॥ 40 ॥  
 पडो रही थालघा पुरस्योडी, उझडी कैया माग अठै ।  
 जोनी बाटा रहगी जोरू, वालम पूगा नाय बठै ॥ 41 ॥  
 बोबाबे मा बापू बैठा, लाडेभर गळ मोत लही ।  
 आजादी रै खातर आपा, सदिआ ताई तुमत सही ॥ 42 ॥  
 बालकिया कुरळीबे बैठा, बापू फासी खाण बठै ।  
 छाती रै चेपणिया छेटा, पोमाळा मे कवण पढै ॥ 43 ॥





गुरु महिमा गरिमा है गारत, आरत भारत आज इसी ।  
 मास्टर छोड दई मरजादा, करियो आछी काम किसी ॥ 55 ॥  
 नेकी हीण हुवा घण नोकर, बेगा रोकड हेत विकै ।  
 कामचोर दामा मे कोरा, टेम दफतरा नाय टिकै ॥ 56 ॥  
 अधिकारी मरकागी आखा, भूलै नेकी हीण जगा ।  
 अपण स्वारथ खातर इसडा, आग नगावै देम पगा ॥ 57 ॥  
 आळस मोट्यारा तन आयी, कडका मेनत नाय करै ।  
 करजै कादा माय कळीजै, भीतर खोटा भाव भरै ॥ 58 ॥  
 चावो व्ही विद्युत री चोरी, आछा निकळै राम अटै ।  
 भाडी रेल मोटर न भागै, राम निकळिया राम रटै ॥ 59 ॥  
 वतन मम्पति घणी विनासै, मोकी लाग्या घरै मिलै ।  
 घर री सोच कराव गरजी, गेलै स्वारथ देस गलै ॥ 60 ॥  
 आई इण खातर आजादी, हिलमिल सबै विकास करै ।  
 स्वान जिया अबै लडै स्वारथी, दड सहिता नाय डरै ॥ 61 ॥  
 कर वोपारी धोरी कर री, वोळी मू गी चीज विकै ।  
 लूट मची बाजारा लेखै, सोरा आरा रोट सिक्कै ॥ 62 ॥  
 माक्ड तोड दिया महगाई, घाकड छाई हिन्द धरा ।  
 ताकड मे बैठा कम तोलै, आकड हुयगा वणिक हरा ॥ 63 ॥  
 महल इणा बणीजै मू गा, कू गा कू गा पहल करै ।  
 गरज मिटै वण ज्यावै गू गा, सूमा नोकर लेण सरै ॥ 64 ॥  
 भेळ करै चीजा घण भू डी, रोग बदावै घणी रसा ।  
 रोकड न पाणा चुप राखै, कर सरकारी कसम कसा ॥ 65 ॥  
 सुद चीज मिलणी दोरी स्सै, सबर करावै हिन्द सबै ।  
 भाग पडी कूवै अब भाया, दिन दिन दूणी देस दवै ॥ 66 ॥

छपनौ छिनवी दुरभख छाया, काया मरगी भूय किता ।

चित फिरगी नाही चित मे, हाणी करदी हिन्द हिता ॥ 44 ॥

महमारी चौतरै माही, मरगा क्रोडू मिनख मही ।

सोच कीकर फिरगी सूझै, दिल पर सीला मेल दही ॥ 45 ॥

गरिमावान महात्मा गाधी, क्रोडू माथा नमन करै ।

सजै प्रेरणा जीवण मादी, डाडी मारग नाय डर ॥ 46 ॥

ओछी ओती छवर अगरखी, पावडिया पग फिरै पगा ।

खपियो आजादी रै खातर, जद हिव क्रोडा पाय जगा ॥ 47 ॥

लेखक कवि लिखिया मद लेखण, साहित रचियो घणौ सिरै ।

आजादी रै खातर इसडा, फिरग भगाण धरा फिरै ॥ 48 ॥

पच पच मरिया सूरा पूरा, जद आजादी हाथ लगी ।

जारी जस भूल्यो नी जासी, जोत अमर वा नाव जगी ॥ 49 ॥

दोरी मिली इसी आजादी, गेली जनता भूल गई ।

करज धरम न भूल्या फेरू, देस छोड मरजाद दर्ई ॥ 50 ॥

भाई भाई लडै लडाई, सप्रदाय री ओठ सजै ।

पावन थळ कर दिया अपावन, वाज अक्ता तणा बजै ॥ 51 ॥

आ आई किसडी आजादी, मिनखा हाथा मिनख मरै ।

देस प्रेम नाही है दिल मे, कळह छेन अर जात कर ॥ 52 ॥

नेता अभिनेता री नीती, धन कमावण हुई घरा ।

साहित्यकार करज न सूझै, खूट गया है मिनख खरा ॥ 53 ॥

अनुसासन हीरा है वातक, पोसाळा मे नाव पडै ।

देम उपद्रव मे कर दोसै, चेता हीरै मच चडै ॥ 54 ॥

गुरु महिमा गरिमा है गारत, आरत भारत आज इसी ।  
 मास्टर छोड़ दई मरजादा, करियो आछी काम किसी ॥ 55 ॥  
 नेकी हीण हुवा घण नोकर, वेगा रोकड़ हेत विकै ।  
 कामचोर दामा मे कोरा, टेम दफतरा नाय टिकै ॥ 56 ॥  
 अधिकारी मरवारी आखा, भूलै नेकी हीण जगा ।  
 अपण स्वारथ खातर इसडा, आग लगावै देम पगा ॥ 57 ॥  
 आळस मोट्यारा तन आयी, कडका मेनत नाय करै ।  
 करज कादा माय कळोजै, भीतर छोटा भाव भरै ॥ 58 ॥  
 चावी व्ही विद्युत री चोरी, आछा निवळै राम अठै ।  
 भाडी रेल मोटर न भागै, राम निकलिया राम रटै ॥ 59 ॥  
 वतन सम्पति घणी विनासै, मोको लाग्या घरै मिलै ।  
 घर री मोच करावै गरजी, गेलै स्वारथ देस गलै ॥ 60 ॥  
 आई इण खातर आजादी, हिलमिल सबै विकास करै ।  
 स्वाग जिया अबै लडै स्वारथी, दड सहिता नाय डरै ॥ 61 ॥  
 कर वोपारी चोरी कर री, वोळी मू गी चीज विकै ।  
 लूट मची बाजारा लेखै, सोरा आरा रोट सिकै ॥ 62 ॥  
 माकड तोड दिया महगाई, धाकड छाई हिन्द धरा ।  
 ताकड मे बैठा कम तोलै, आकड हुयगा वणिक हरा ॥ 63 ॥  
 महल इणा बणीजै मू गा, कू गा कू गा पहल करै ।  
 गरज मिटै वण ज्यावै मू गा, सूमा नोकर लेण सरै ॥ 64 ॥  
 भेळ करै चीजा घण भू डी, रोग बदावै घणी रसा ।  
 रोकड रै पाणा चुप राखै, कर सरकारी कसम कसा ॥ 65 ॥  
 सुद चीज मिलणी दोरी स्सै, सबर करावै हिन्द सबै ।  
 भाग पडी कूवै अब भाया, दिन दिन दूणो देस दवै ॥ 66 ॥

नकली दवाई वणं नितरी, गिटिया रोगी राम घरें ।  
 ओक नी उदाहरण ग्रनेकू, डाक्टर देता यका डरें ॥ 67 ॥  
 दारू मे जनता दपटीजै, भीजै सगव माय भळें ।  
 मद छविया विगडें मतवाळा, करे वाटन पिया वळें ॥ 68 ॥  
 गाजा भागा मुलफा गेलें, चरम हरोडन चाव चढें ।  
 काळो खा खा हुयगा काळा, देखो आगें देस बढें ॥ 69 ॥  
 टीका दहेज लेवण टक्कर, पूरी मिनखा जोर पडें ।  
 बहुआ पेट्या य वळजावें, खोटें मारण देम खडें ॥ 70 ॥  
 आ लखणा मू आ आजादी, घणा दिना री नाय गिणी ।  
 मरज्यासी वेमोन मानखी, चुकता फिरस्यो चिणीचिणी ॥ 71 ॥  
 लाज तिरगा री मत लेवो, गाधी सुरगा माय घुटें ।  
 देण्या जिमडा हाल दाखिया, आजादी रा सुकव अठें ॥ 72 ॥

## कलजुग रो गील

गीत सुव साखोर

कलुबाल विकराल छाविया वरा करारी,

हाथ न हाथ खा रया छै हाथ ।

वात मव न्याव री माव री वीगडी,

लागी सगळै वदनीत री लाय ॥ 1 ॥

भजन सुद भाव न भूलगा भायला,

जाएन गूयवै पाप रा जाळ ।

दान पुन करण हित हुवा जन दूमना,

पेट भरण करै खोटा पपाळ ॥ 2 ॥

मुख ऊपर मोठा खोटा मन माही,

फरव कथनी करणी मोटी फर ।

ईसकं आग रै बळै छै अणूता,

आमणा सासणा माय अधर ॥ 3 ॥

माईत दुख वाळक पढाई माडा,

सिनेमा टीवी हन्दा साकीन ।

आचार विचार खोटा डमी ऊमर,

दुपगा मोट्यार पुरसारथ हीन ॥ 4 ॥

आळस तन ऊपरा हिये अमूभता,

भूभता करज रै वढत जार ।

आधी पाछी वाता करण नै आयडे,

अडे लडे मारग भूठ रै आर ॥ 5 ॥

नसा मे चूर घणा अजादा नासै,  
लाज नार लेवै लफगा लूट ।  
सुणै नही जन दरद आज रा सासक,  
चावा सम वासक नाग चौखूट ॥ 6 ॥

टीकै दहेज बेच रिया टावरिया,  
वे विन धन देवै विनरिया बाल ।  
घुल रयो घणौ जहर इसी घर घर मे,  
कुमत आ छाई मिनखा कळुकाळ ॥ 7 ॥

सत विहूण हुई नारी सतवती,  
अँ उछती फिरै भटकती आज ।  
सुख री सगी चगी अगी स्वारथ,  
भीड पड्या कत छोडवै भाज ॥ 8 ॥

फजीती करण देस अणूती फेत्यौ,  
रिसवत अर भिसटाचार री रोग ।  
देस प्रम रासद्रियता नही दिल मे,  
जुडै स्वारथ जना देस री जोग ॥ 9 ॥

जळ अर हवा दुसित हुयगी हर जागा,  
आदमी हुवौ मसीना आधीन ।  
दिन दिन आ गत अधिक बिगडती दीखै,  
कळुकाळ कथ कवियो लिखमण कीन ॥ 10 ॥

## प्रलाप - पचचीसी

सवया

प्रेरजगारीय रोग वद्यो भलहीण दसा अर जोग विचारो ।  
ओखद जोवत हार गयो अब ओर नही विन स्याम हमारी ॥  
वेद बणी मय खेद मिटावण सकट मेटण देव सहारो ।  
वारमवार पुढागत आरत गारत जीवन होत निहारो ॥ 1 ॥

जोय लही प्रभु जाय दसू दिम पाय लही वदनामीय पूरी ।  
ठोकर खाय लही हर मारग भाग भला सू भई इम दूरी ॥  
मेर करी मुरनीधर माधव बात रखी मत नाथ अघूरी ।  
फाड गळो फरियाद करू कुण आद विसभर पात लछूरी ॥ 2 ॥

छोड दई अब आस नवै अर मिधु निगास मे दास समायो ।  
तेर सकै न जिकी तन दूवळी ओर हथा बळ मोच गमायो ॥  
घु घळापण छावत नेण धकै दुखी मारग जीवण मेवग आयो ।  
हे ! अजचद मिटा दुख फदण नातर नाम व्यू खामद पायो ॥ 3 ॥

भूल गयो सद पथ भळै नही तत धिया मळ सोचण ताई ।  
नाम तिहारो मुखा नह आवत याद हियो अब ती विसराई ॥  
गोर हुवै किम भूल गयो सुद हीण दसा मम ऊपर छाई ।  
फालतू गोनाय खात फिरू अजहू मद ठोड नही कव पाई ॥ 4 ॥

रोल मकू रुजगार बिना नह मोल घटै कमाई विन म्हारो ।  
छोल दियो हिरदो मळ छीजण खोल दियो पट लोक लज्जारी ॥  
कोल मिटै मम जो करिया रखिया दुख डोल रयो मुद भारी ।  
पोल भई किम मो परती धरती पति वीरद कोल निहारो ॥ 5 ॥



नसा मे चूर घणा अजादा नासै,  
 लाज नार लेवै लफगा लूट ।  
 सुणै नही जन दरद आज रा सासक,  
 चावा सम वासक नाग चौखूट ॥ 6 ॥

टीकै दहेज बेच रिया टावरिया,  
 बे बिन धन देवै बिनरिया वाल ।  
 घुल रयी घणी जहर इसी घर घर मे,  
 कुमत आ छाई मिनखा कळुकाळ ॥ 7 ॥

सत बिहूण हुई नारी सतवती,  
 अँ उछती फिरै भटकती आज ।  
 सुख री सगी चगी अगी स्वारथ,  
 भीड पड्या कत छोडवै भाज ॥ 8 ॥

फजीती करण देस अणूती फेत्यौ,  
 रिसवत अर भिसटाचार रौ रोग ।  
 देस प्रेम रासद्रियता नही दिल मे,  
 जुडै स्वारथ जना देस रौ जोग ॥ 9 ॥

जळ अर हवा दुसित हुयगी हर जागा,  
 आदमी हुवौ मसीना आधीन ।  
 दिन दिन आ गत अधिक बिगडती दीखै,  
 कळुकाळ कथ कवियौ लिछमण कीत ॥ 10 ॥

## प्रलाप - पचचीसी

सवया

प्रेरजगारीय रोग बढ्यो भलहीण दमा अर जोग विचारो ।  
 ओखद जोवत हार गयो अब ओर नही बिन स्याम हमारो ॥  
 वेद वणी मय खेद मिटावण सरुट भेटण देव सहारो ।  
 बारमवार पुकारत आगत गागत जीवन होत निहारो ॥ 1 ॥

जोय लही प्रभु जाय दसू दिस पाय लही वदनामीय पूरी ।  
 ठोकर खाय लही हर मारग भाग भला सू भई इम दूरी ॥  
 मेर करो मुरलीधर माधव बात रखो मत नाथ अधूरी ।  
 फाड गळो करियाद करू कुण आद विसभर पात लछूरी ॥ 2 ॥

छोड दई अब आस मवै अर सिधु निराम मे दास समायो ।  
 तेर मकै न जिकी तन दूबळी ओर हथा बळ सोच गमायो ॥  
 धु धळापण छावत नेण धकं दुखी मारग जीवण मेवग आयो ।  
 हे ! अजचद मिटा दुख फदण नातर नाम क्यू खामद पायो ॥ 3 ॥

भूल गयो सद पथ भळै नही तत धिया मळ सोचण ताई ।  
 नाम तिहारी मुखा नह आवत याद हियो अब तो विसराई ॥  
 गोर हुवै किम भूल गयो सुद हीण दसा मम ऊपर छाई ।  
 कालतू गोताय खात फिरू अजहू सद ठोड नही कव पाई ॥ 4 ॥

पोल सकू रजगार बिना नह भोल घटै कमाई बिन म्हारो ।  
 छोल दियो हिरदो मळ छीजण खोल दियो पट लोक लज्जारी ॥  
 कोल मिटै मम जो करिया रखिया दुख डोल रयो मुद भारी ।  
 पोल भई किम मो परती घरती पति वोद कोल निहारो ॥ 5 ॥

सात दियो विसराय सवै अर न्यात करै नह आदर म्हारो ।  
 पात पणौ बढ लोग पुकारत ओर कहै कज कै निकमा रो ॥  
 ठोड नही हिरदै मम खातर आज कमाई बिना नह प्यारी ।  
 दोस किनै नह ओर दहू अब अेक दोमी तकदीर हमारी ॥ 6 ॥

आ धारि रुजगार बिना मन तोज तिवार घर नह जाऊ ।  
 पेट हितू पर द्वार पड्यो अब स्याम निहार घणौ सरमाऊ ॥  
 खीज करी रुजगारीय खातर पार पडी नह हू पछताऊ ।  
 बात बणी विखमी इण बार वणी मुरली वर हू कित धाऊ ॥ 7 ॥

ओइ ससार असार कहै सत्र सार सब हरि नाम निहारी ।  
 कूमन ही अपराध करावत पेट तणौ प्रभु पापहि न्यारी ॥  
 दोलत सू मत मोह करी इम सत कियो हरि नाम चितारी ।  
 पार पडै रुजगार बिना नह पेट भयी प्रभु अछछन गारी ॥ 8 ॥

अेक हूती रमतौ हरि मे मन सत रिखी हुय लेत समाजी ।  
 भेख लिया तिरथा कर भ्रमण दावता दादू दयाल की गादी ॥  
 अेक नही पपाळ घणा अब है घर बार अपार विवादी ।  
 बोझ बढ्यो पारिवारिक ऊपर हू रुजगार बिना अपराधी ॥ 9 ॥

मात पितामह लेय गया मन आप करी नह पूरण आसा ।  
 आज उणी रुजगार बिना फिर फार हुई मन माय निरामा ॥  
 केतिक बार कम् विनती कितरा दिन ओर रखू विमवासा ।  
 बारम बार कहू अब गोविन्द तू जय आव मिटावण तासा ॥ 10 ॥

पात दुखी घर बार दुखी रुजगार बिना मो दुखी समबधी ।  
 चित लगी प्रभु मोय सुता चित ना रुजगारीय बात असधी ॥  
 हाय लही अब क्यू सबकी अबछी नह ओर ई हालत हदी ।  
 भेट अत्रै रुजगार भली अर भेट दसा तकदीर की मदी ॥ 11 ॥

सास घुटै रजगार बिना प्रभु नीद नही नित रात कू आवै ।  
 कोसीस कीधा न काम सरै तबदीर दसा दिन रेन सतावै ॥  
 आ विधना नह चाय भली घर पात मना इम चित उपावै ।  
 मो कछु हाथ नही मुरलीधर आप बिना कुण लाज रखावै ॥ 12 ॥

सज नही घर बार चलावण भज मिटावण आ भवजामी ।  
 कोण मुणै हमरी जव तो विन मोर करी अवतौ घणनामी ॥  
 केतिक बार कहू दिल की मम खोज हू नाथ अर्थ नह खामी ।  
 तू मम अतर की नह जाणत काहै कहावत अन्तरजामी ॥ 13 ॥

जाय नहीं मन ओर कू जाचण बात करौ हमरी प्रभु कानै ।  
 हेक पखौ नह काम हुवै अरदास घणी हू करी अवरानै ॥  
 देर करी अतरी किम कागण हारण लाग रयो मन छानै ।  
 तेज करौ तबदीर दयानिधि मोर करौ मरकार खजानै ॥ 14 ॥

हू हकनाख पठ्यो रद होवण थाव गयी अव चालत पाळी ।  
 पावन भाग अलाग टल्यो पण तू किम गोविन्द लेवत टाळी ॥  
 हू आय पड्यो तब पेरे बिचै भगवत अवै पग मामीय भाळी ।  
 ओर सबै बदळै फिरिया दिन ना बदळै हिक बसि बाळी ॥ 15 ॥

अेक समै तिस के बस दतक सागर री जळ पीवण आयो ।  
 पेखत ग्राह करी पग पक्कड जक्कड नै जळ माय समायो ॥  
 सू ड सरोज किया विनती जय दोड विनै हरी आप बचायो ।  
 'लक्ष्मण' बेर बगो किम देर अवै कुण रावळी पथ स्वायो ॥ 16 ॥

होय निछावर भीत सुदामा कू न्याल वियो सुख देय घणैरी ।  
 राज दिगौ देव लोकन को अर थाट सुदामा पुरीय सुनेरी ॥  
 नाथ पुरी चहीजै मुभकू अर ना चहीजै घर कचन कैरी ।  
 दै अतरी रजगार दामोदर जासु चलै घर काज अछैरी ॥ 17 ॥

बात रखी निज सेवग की गिरता गिरी सू प्रहलाह बचायी ।  
लोह तपी तिकी लाट के ऊपर देखत कीडीयनाळ चलायी ॥  
ना बलियो अगनी मभ सेवग तू थम्ब फाडके बाहर आयी ।  
ना करियो मम कारज केसव मामूली काज हितु कहवायी ॥ 18 ॥

वान रखी मुगरीव तणी तद मार नियो हरि राघव वाली ।  
रान विभीछण कू हरि देयन रावण री छळउद्म न चाली ॥  
चित करी हमरी चित चोरण दीत रही जिदगानीय ठाली ।  
मोच भयी हिरदै पुरसोतम जाय परी फरियाद न खाली ॥ 19 ॥

कस्ट निवारण भारत भूमिय आप अनेक ओतार उपावै ।  
जाय तरा बिच फा उखळी दव पेड न को मुगती दिलवावै ॥  
दूभन तौ लख पच गऊ घर आणद गेहू धीणा मभ आवै ।  
आलय मे रुजगार बिना गऊ सेवग रै नह अंक दुभावै ॥ 20 ॥

इन्दर कोप कियो ब्रज ऊपर नीर अपार घना बरसायी ।  
डूबण लाग रयी ब्रज गोरव भी तव मे जब सकट छायी ॥  
धार लियो गिरि आगळ पे तद इन्दर री अभिमान मिटायी ।  
छन की छाह के हेठ लही प्रद किस्मत मो पर कोप करायी ॥ 21 ॥

बाण लग्यी लघु भ्रात लछुके जदै जब तू हडुमान दुडावै ।  
जाय सजीवण लेण हडु जब आय लखन के प्राण बचावै ॥  
हू कळजुगी लक्ष्मण हू मनै बेरजगारीय पीड सतावै ।  
भेज कोइ हडुमान जिसी मम सकट कस्ट जो आय मिटावै ॥ 22 ॥

मेवग तौ नरमी विसवान पे भात भराण सदेस भिजायी ।  
मावळ सेठ को रुप किया हरि छप्पन ओड को मायरी लायी ॥  
वात ग्धी नरसी सद दास की गोविन्द वीरद कोल निवायी ।  
हू तव दास रयी अब कूकत भूख हरी न मिटावण आयी ॥ 23 ॥

सूर मीरा करमा रसखान की ढेर सुणी पल माय तू आती ।  
 ईसर सरूप मधु नरहर के आणद ग्यान हियै उपजाती ॥  
 वृत वणी नर देह अलु हित दास खामद निवावण ताती ।  
 हू अलु दास को वसज हू लछु रै क्यू आवत होवत ताती ॥ 24 ॥

दे रुजगार इसी मन मोहन जासु रहै घर आणद मारी ।  
 आदर व्है घर आविया को सद नाय जाऊ कछु लेण उधारी ॥  
 मो कुळ री मरजाद निवै लगु नाय किरणी नै हू प्रभु खारी ।  
 भाव मिलै भगती मन भावन पावन रूप रहै कविता री ॥ 25 ॥

## सीख - सवेंया

तथया

वाळक आज पढी सुधरी अनुमानन हीण न वात विचारी ।  
टीवी सिनेमा हितु दिल दूटत पाय कुसगत ना परवारी ॥  
नाम करी धन नाय नमा हित देह करी मत रोगज द्वारी ।  
मात पिता नित मारत है मन नग हुवै रख ध्यान तिहारी ॥ 1 ॥

अतर सू करणी गर आदर बोलत मादर ध्यान बडारी ।  
मात पिता हित मान रखी मन ध्यान रखी कुळ गी गरिमा री ॥  
सयम राख पढी हित साहित धीरज मकट म नित धारी ।  
आळम छाय नही तन ऊपर ली पुरसारथ मार्ग प्यारी ॥ 2 ॥

आरत वात किया मुख आयत भारत करणवार कहीजी ।  
गारत जीवण नाय करी गत हारत क्यू पथ हिम्मत लीजी ॥  
ताग रखी करणी मद ल्यायत भाग तणै विसवास न छीजी ।  
भारत भार तिहार भुजा पर देस मनेव हियै रख रीझी ॥ 3 ॥

नाव करी प्रतियोगिता नागर ओर उजागर खेल उपावी ।  
सागर सेव तणे नित मापड ईस तणा हिवडै गुण गावी ॥  
साफ सफाई रखी तन ऊपर भीतर थी मन सुद्द रखावी ।  
घावण खातर नाय डुळी नित राख खुसी चित भोजन पावी ॥ 4 ॥

वीर प्रताप सिवा दुरगा बळ पाव तिकै हित प्रेरणा पावी ।  
भीसम जेम रखी दृढ निश्चय जेम भागीरथ जत्न करावी ॥  
होय असोक तजी मन हिसक गांधी तण सद पाथ घुरावी ।  
त्याग रखी दधीची जिम तारण मारण दुस्ट मत्ती घवरावी ॥ 5 ॥

होय गयो हुसियार कमावण भाव अनीत गै नाय भराणी ।  
 काज निहार निहारत कारण मोव मे आय ना काम कराणी ॥  
 आस रखी विसवास रखी डर पाय दुखा मन नाय मराणी ।  
 नेक इमान रखी नित नीयत रै गरिमामय होत घराणी ॥ 6 ॥

नोकर हो रखणी सद नीयत लोभ तणै चित ना ललचाणी ।  
 अस्ट तणी पथ त्याग दही भव काम समै मसती किम छाणी ॥  
 काम करी मन सू खुस होयर फालतु गोताय नाय खवाणी ।  
 जीवन च्यार दिना लग जोवन होय नसै धन नाय नसाणी ॥ 7 ॥

मेठ मती कम तोल तू ताकडी हा सिर रामकू राख हमेसा ।  
 दोगल मार किया जन् भारत नाज करै नह तू लवलेसा ॥  
 देस दुखी करतूत तो कारण दोलत नाव कमाय विदेसा ।  
 दोलत सेग धरी रह जावसी काळ चपेट कुमावत केसा ॥ 8 ॥

भारत रौ कर नाव उजागर मेनत री फळसी ज मजूरी ।  
 वाजव दाम मिलै तन मेनत है पुरसारथ नाय हजूरी ॥  
 मस्त रही जितरी मिल जावत पूर सकै कुण आसम पूरी ।  
 राखण जोग हमेम खावत माल हराम तणै दित दूरी ॥ 9 ॥

त्याग सतोख पखी जन धीरप नेक इमान रखी मन नेता ।  
 लोभ तणै वम हो पद लोलुप काम विगाडण भारत केता ॥  
 झूठ वकी मत भासण चाटण तो कयनी करणी घण छेता ।  
 काज रुखाळण पाय लियो जद लागिया कीकर खावण खेता ॥ 10 ॥

देस सनेत्र रखी दिल भीतर सम्पति देस तणी मत छूटी ।  
 काज खळा जिम केम करावत आज किया मिनछा तन खूटी ॥  
 ओर तणी हक मार दळा पर भोग रया जन होय अपूठी ।  
 देवस तणी करणी न चोरिया तोडण सीव किया मत तूठी ॥ 11 ॥



मात सुता बहना जिम मानस जोग है वात मुनार पगई ।  
 रामुव होय मती नग्र वामग आन कुळा इणरै वज पाई ॥  
 ओर तणी लज लूटण आगळ आपणी भा वचसी बिम भाई ।  
 नग्न मरुप मती निरखी तिय रूप प्रिरागणा वाज सदाई ॥ 12 ॥

आचार प्रचार रखी सुद आगण नार रखी नित लाज मुनेणा ।  
 प्रीतम सू रख नेह निस्वारथ बोल मती वदनीतिप बेणा ॥  
 मील सतोष तणी गहणीवपु दोनत ओर नही चित देणा ।  
 लाज गया तिहारी घर लाजत रै तितरा दिन जीवन रेणा ॥ 13 ॥

वृद्धपणै हिवराम वमावियै दाम मे लालमा नाय दिराणी ।  
 हो पुजनीन रहो हित हाजर सीय बुरी किस कू न सिखाणी ॥  
 जीव रखी वम मे जग जीवण काम भला कर राख निसाणी ।  
 काळ अचै सिर ऊपर घूमत भूमत तू सुख स्वाद अजाणी ॥ 14 ॥





श्री लक्ष्मणदान काव्या राजस्थानी भासा रा भाजरा  
चोछा कवि है भर यारो पोषी 'पावासर' पढिया सू तो  
ऐडी लागै जाणै छदबध कविता म नुवी भावनामा आपरा  
उत्कृष्ट रूप लेय राचीजी है। यारो एक पोषी पेली ई  
'सदेसो' घणी सुंदर विचारा रो प्रतिपादक ईई। जे  
राजस्थानी भासा मे नुवी पोडी रा रचनाकार इए भात  
काव्य रचना करता रया तो राजस्थानी भासा रो उत्थान  
व्हेला भर भासा ने मानता मिलन मे सहयोग मिलेला।  
म्हारी कामना है के श्री लक्ष्मणदान कविया इणी भात  
नित नुवी रचनामा लिखता रैवै जिएसू भासा न बल  
मिलेला।

### रेवतदान चारण

पौर 'सदेसो' भर अंस 'पावासर' सरीसो थयकौ  
नाखण जोगी पोषिया लिखण रो खिमता रा घणी  
लक्ष्मणदान कविया नै घणा रग। ठेट कमाल, गीत,  
कवित्त भर सर्वया सरीसो भाट सू भाजर जुग रै लै  
पढती बाता मायै कलम चलावणी विरला रै इज बस  
री बात। श्री कविया अटो मे पडी जूनवी विद्या नै नवै  
रग सू सराबोर कर दीवी। उडीक राखू क आवता दिना  
मे कवि आपरे कणूका रै पाण जग चावी हू जावैला।

### जहूर खा मेहर

श्री लक्ष्मणदान कविया राजस्थानी भाषा रा भोटि-  
यार कवि है, इणरी साख कवि रो 'सदेसो' नै 'पावासर'  
काव्य आप ईज भरे। सकलन री कवितावा पाणदार  
नै धारदार है। भाषा दमखम राखै नै सबद छोला भरै।  
कविता मे राजस्थानी घरती रो सास न सोरम रो महक  
है।

### सीभागसिख सेखावत